May 2021 I Issue 25

Prabha प्रभा

The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

आधुनिक दौर में भारतीय सभ्यता, संस्कृति, प्रज्ञा, मनीषा, पुराणों और नायकों को अपनी लेखनी से जन–जन तक पहुंचाने वाले रचनाकार नरेन्द्र कोहली की स्मृति को *प्रभा* के इस अंक में फाउंडेशन के सहयोगियों के अलावा देश की दस प्रमुख शख्सियतों ने आदरांजलि अर्पित की है

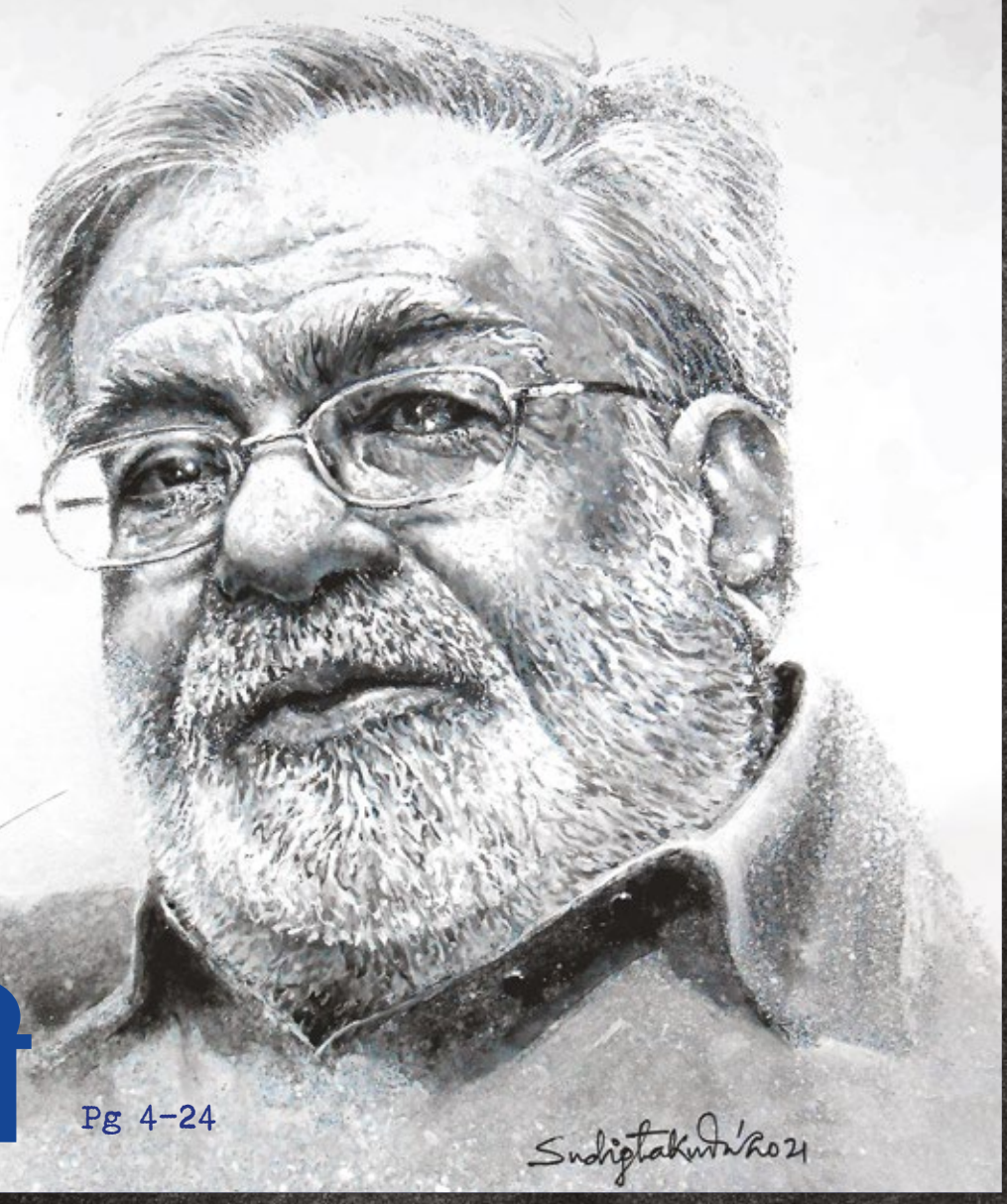

नमन नरेन्द्र कोहली

Pg 4–24

INSIDE

HOUSE OF WORDS 28

INITIATING INDORE 30

PANDEMIC AND THE ARTS 40

DIFFERENT STROKES 46

INSIDE

A THEATRE TREASURE 25

INDIA THROUGH A REPORTER'S EYE 26

BREAKING DOWN WALLS 29

REPRESENTING DALIT HISTORY 32

THE ART OF MAKING LOVE 34

LOGGING LIFE LESSONS 36

POETRY FOR THE SOUL 37

BEING WOMEN 38

CINEMA, THE BHOJPURI WAY 44

BIRMINGHAM'S BEST 49

SMOKING KILLS 50

Prabha प्रभा

MANISHA JAIN
Communications & Branding Chief,
Prabha Khaitan Foundation

लौटेंगे सुनहरे दिन

दुनिया अभी भी एक भयावह संकट के मध्य है, जिसके असर को पिछले साल की तुलना में अधिक तीव्रता से महसूस किया गया है। यह कहना शायद गलत नहीं होगा कि हमारे दैनिक जीवन पर इस महामारी का प्रभाव सही मायनों में वैश्विक है, जिसकी जड़ें विश्व इतिहास की गहराई तक पैठेंगी। चाहे ऐसे या वैसे, हम सभी इस संकट से कहीं न कहीं, किसी न किसी रूप में प्रभावित जरूर हुए हैं।

हिंदी साहित्य की दुनिया के लिए इस दौर की एक बड़ी क्षति प्रख्यात लेखक और साहित्यकार — श्री नरेंद्र कोहली का जाना रहा। फाउंडेशन को इस बात का गौरव हासिल है कि हमने पद्मश्री से सम्मानित इस अप्रतिम कथाकार के साथ देश और विदेश में कलम के छह सत्रों की मेजबानी की। मैं इसे अपनी बड़ी व्यक्तिगत क्षति मानती हूं, कि उनसे व्यक्तिगत रूप से कभी मिल नहीं पाई। अपने पीछे उन्होंने जो रिक्तता छोड़ी है वह शायद फिर कभी भरी न जाए लेकिन हमें उम्मीद है कि वह एक बेहतर जगह पर होंगे। इस अंक के साथ, हम इस महान लेखक के प्रति अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

इस अंक में जिन अन्य विषयों को शामिल किया गया है — उनमें माननीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण के साथ **टेटे-ए-टी** शामिल है, जिसमें उन्होंने विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों के प्रतिनिधियों से कोविड की दूसरी लहर में आई तेजी के बीच वित्तीय व्यवहार्यता पर चर्चा की। इस अंक में, आप ब्रिटेन के बर्मिंघम की **अहसास** वूमेनओं के बारे में भी पढ़ सकते हैं।

अपने विचार बेझिझक व्यक्त करें और हमें *Newsletter@pkfoundation.org* पर लिखें। साथ ही सत्र देखने के लिए लाल प्ले बटन पर क्लिक करना न भूलें।

अनिश्चितता की लहरें हमारे हौसलों को परखने की कोशिश कर सकती हैं, लेकिन हमें अपनी पूरी ताकत से लड़ना चाहिए। आइए, शीघ्र ही बेहतर कल की आशा के साथ हम सब मास्क लगाएं, सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें और टीकाकरण कराएं!

अपने सभी पाठकों को अच्छे स्वास्थ्य की शुभकामना! ध्यान रखें, सुरक्षित रहें।

Manisha Jain

The editorial has been translated in Hindi

Disclaimer: The views and opinions expressed in the articles are those of the authors. They do not reflect the opinions or views of the Foundation or its members.

SNAPSHOT OF THE MONTH

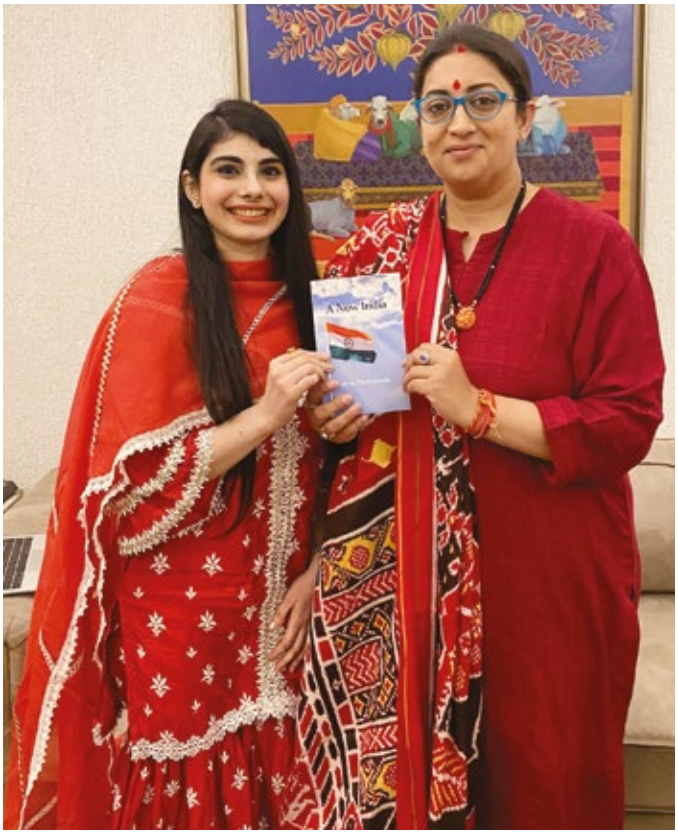

Prabha Khaitan Foundation believes in promoting young, upcoming authors. Here's a moment from the launch of Naina Pachnanda's book of poems, *The New India*, by Union Minister Smriti Irani. The book was published with the support of **Prabha Khaitan Foundation.**

SPOTTED

Ehsaas Woman of Udaipur, Shraddhaa Murdia, with **Ehsaas** Woman of Chennai, Deepika Goyal, in Chennai. At **Prabha Khaitan Foundation** we believe that we must adhere to all safety protocols and wear masks at all times.

Happy Birthday

Prabha WISHES **EHSAAS** WOMEN BORN IN MAY

10th May

Shraddhaa Murdia

18th May

Ankita Khattry

21st May

Neelima Dalmia Adhar

27th May

Preeti Gill

29th May

Apra Kuchhal

30th May

Shubh Singhvi

31st May

Vinti Kathuria

संस्कृति साधक को आदरांजलि

भारतीय मनीषा हमेशा ही ज्ञान, संस्कृति और परंपरा की वाहक और उपासक रही है। हमारी सभ्यता का विकास उस त्वरा से हुआ है, जिसमें मानवता, सेवा, आस्था और सद्भाव न केवल आदर्श बल्कि यथार्थ के स्तर पर भी उतार दिए गए। अपौरुषेय समझे जाने वाले वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत जैसे हमारे महान ग्रंथ हों या फिर सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त जैसे आस्तिक दर्शन– हमारे लिए जीव, जीवन, आत्मा और परमात्मा हमेशा सर्वोच्च रहे। यहां तक कि जिन तीन दर्शनों 'चार्वाक, बौद्ध और जैन' को हमारे कुछ विद्वतजनों ने नास्तिक करार दिया, उन्हें भी 'जीव और जीवन' की सर्वोच्चता के आदर्श और अहिंसा, करुणा और संवेदना के उच्च सिद्धांतों के चलते पूरे विश्व में सराहना मिली।

बुद्ध के प्रथम आर्य–सत्य 'दुःख' से न केवल हमारे अन्य प्रमुख दर्शनों ने सहमति जताई, बल्कि सांख्यदर्शन ने तो विश्व को दुःख का सागर बताते हुए उस मूल संकट की ओर इशारा किया, जिसे हम भौतिकता की दौड़ के चलते अपने ईर्दगिर्द बुनते जा रहे हैं। इस तथ्य से भला किसे इनकार होगा कि राजा हो या फकीर, मनुष्य रूप में उसने 'दुःख' रूपी सत्य की अनुभूति अवश्य की होगी, फिर चाहे यह आध्यात्मिक हो, आधि–भौतिक या आधि–दैविक। इन सबके बीच हमारे पूर्वजों ने *'प्रज्ञानं ब्रह्म'* की अवधारणा के चलते जो रचा, वह आज भी दुनिया के लिए जिज्ञासा का एक केंद्र है। हमारी यह महान परंपरा *'वसुधैव कुटुम्बकम'* और *'अहं ब्रह्मास्मि'* से होते हुए वाल्मीकि, वेदव्यास, आदि शंकर, कालिदास, रामानुज, कबीर, नानक, सूर, तुलसी, मीरा, रामकृष्ण, विवेकानंद, दयानंद और गांधी जैसे महान संतों, लेखकों के विचारों और कृतियों की मार्फत आज भी जिंदा है।

कोरोना महामारी का एकमात्र सकारात्मक पक्ष यह है कि इनसान एक बार फिर प्रकृति और मूल आदर्शों की बात करने लगा है। ज्ञान, विज्ञान और भौतिक, आर्थिक प्रगति के बीच एक बार फिर 'मानव' केंद्र में है। ऐसे में नरेन्द्र कोहली की याद स्वाभाविक है, जिन्होंने इसी 17 अप्रैल को इस संसार से विदा लिया। कोहली आधुनिक काल में हिंदी के वह अग्रगण्य लेखक हैं, जिन्होंने हमारी सनातन परंपरा, पौराणिक आख्यानों और पात्रों को अपनी कलम से नए कलेवर में जीवंत रखा। यह अंक कोहली के उसी व्यक्तित्व, लेखनी, मेधा, संघर्ष और समर्पण पर केंद्रित है, जिसने शताधिक पुस्तकें रचीं। इस अंक में **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **कलम** के कार्यक्रमों में कोहली की उपस्थिति के दौरान हमारे सहयोगियों के संस्मरण, उनके कॉलेज के सखा, पड़ोसी, करीबी पत्रकार, शिक्षाविद, सहयोगी लेखक और उनके स्नेहीजनों की अमूल्य यादें भी शामिल हैं। फिल्म जगत से कोहली का जुड़ाव जहां उनके जीवन के नए पहलू को उजागर करता है, वहीं राष्ट्र के निर्माण में उनके योगदान की चर्चा भी इस अंक की विशेषता है। यह अंक कोहली की पावन स्मृति को हमारी आदरांजलि है।

पूरी पीढ़ी को चरैवेति चरैवेति का दर्शन देने वाला लेखक

प्रसून जोशी

नरेन्द्र कोहली के लेखन से मेरा परिचय बचपन में ही हो गया था। न जानें उनकी कितनी रचनाएं उस दौर में पढ़ीं। मुझे याद है उस युग में रेलवे स्टेशन के बुक स्टॉल पर ऊपर से कोहली की पुस्तकें सहज झूलती दिखाई देतीं थीं। यह मेरा सौभाग्य था कि विगत कुछ वर्षों में मुझे उनका सान्निध्य मिला। वह मेरे साथ सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन के बोर्ड के सदस्य थे, उसे लेकर भी हम निरंतर चर्चा में रहते थे। बोर्ड के सेमिनार्स, ट्रेनिंग प्रोग्राम और दूसरे कार्यक्रमों को लेकर भी उनसे बातचीत होती थी। फिर सौभाग्यवश हमने कई साहित्यिक उत्सवों में भी साथ भाग लिया। हम साथ ही विश्व हिंदी दिवस मनाने के लिए मॉरीशस भी गए जहां पर एक चर्चा के दौरान मुझे लगा कि कोहली जी को फ़िल्म विधा से भी जुड़ना चाहिए, और इसकी आवश्यकता भी है क्योंकि कई बार फिल्मकार जब पौराणिक कथाओं को लेकर फ़िल्में बनाते हैं तो उसमें कई त्रुटियां रह जाती हैं। मैंने ऐसे फ़िल्मकारों के मार्गदर्शन के लिए उनका कोहली जी से परिचय करवाया और संवाद के लिए प्रेरित किया। मैंने फ़िल्म चर्चाओं में भी अकसर कहा कि अधूरी जानकारी लेकर फिल्म बनाना और बाद यह अफ़सोस करना कि हमने श्रेयस्कर कार्य नहीं किया से बेहतर है कि नरेन्द्र कोहली जैसे भिज्ञ व्यक्ति से परामर्श किया जाए।

जितना सुंदर नरेन्द्र कोहली का कृतित्व है, उतना ही सुंदर, बारीक व महीन उनका व्यक्तित्व भी था। इसीलिए उनके बारे में और भी जानने की अभिलाषा होती थी। कुछ ही दिन हुए जब हम आपस में मिलने का कार्यक्रम बना रहे थे। तब सोचा भी नहीं कि इतनी शीघ्र वे हमें छोड़ कर चले जाएंगे। सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन की बैठकों की ही बात करूं तो बोर्ड मीटिंग में रेगुलर सदस्यों, अफसरों के ट्रेनिंग प्रोग्राम आदि के दौरान हमारी व्यापक चर्चाएं होती थीं, कि कैसे फिल्म को प्रमाणन प्रक्रिया के दौरान कलात्मक ढंग से देखना चाहिए, कला की प्रासंगिकता पर भी हमारी अकसर बात होती थी।

अपने लेखन की प्रासंगिकता को लेकर कोहली जी को कभी दुविधा नहीं रही। वे कहते थे कि मैं अखबार पढ़ता हूं तो उसमें मुझे पौराणिक कथा दिखती है, और जब मैं पौराणिक कथा की बात करता हूं तो उसमें मुझे आज का अखबार दिखाई देता है। वे यह भी कहते थे कि मानव की मूल भावनाएं नहीं बदलतीं। भावनाएं प्रासंगिकता नहीं ढूंढती हैं। बस बाहरी आवरण बदलता रहता है। लेकिन जो मूल है वह नहीं बदलता

वैसे अपने लेखन की प्रासंगिकता को लेकर कोहली जी को कभी दुविधा नहीं रही। वे कहते थे कि मैं अखबार पढ़ता हूं तो उसमें मुझे पौराणिक कथा दिखती है, और जब मैं पौराणिक कथा की बात करता हूं तो उसमें मुझे आज का अखबार दिखाई देता है। वे यह भी कहते थे कि मानव की मूल भावनाएं नहीं बदलतीं। भावनाएं प्रासंगिकता नहीं ढूंढती हैं। बस बाहरी आवरण बदलता रहता है। लेकिन जो मूल है वह नहीं बदलता। इसीलिए वे जिन पौराणिक कथाओं पर काम करते थे, जैसे *महासमर* को ही लें, वे सदा पूरी सहजता से आज की पीढ़ी से जुड़ जाते थे। मैंने उन्हें कभी पाठकों से जुड़ाव के लिए संघर्ष करते नहीं देखा।

नरेन्द्र कोहली अपनी गहराइयों में अंदर तक बहुत सुलझे हुए व्यक्ति थे। और इतने सुलझे हुए थे कि हमारी पौराणिक कथाओं के विवादास्पद प्रसंग तक पर बेहद सहजता से काम करते थे। उन्हें इस बात की चिंता थी कि हमारे नायकों के साथ न्याय हुआ है कि नहीं। जब आप ऐसे आस्थावान व्यक्ति के हाथ में कोई चीज देते हैं तो आपको कभी यह संशय नहीं होता कि वह इसके साथ न्याय नहीं करेगा। मूल रूप से उनमें एक आस्था थी, एक विश्वास था। मैं किसी धर्म या मत में उनके विश्वास की

Prasoon Joshi with Narendra Kohli

कोहली की सबसे बड़ी बात यह थी कि वे अपने मन की सुनते थे। सच तो यह है कि अगर आप के 'अंदर' की लौ जली हो, तो बार-बार आप 'बाहर' किसी चीज की तलाश में नहीं उलझते। कोहली के अवचेतन में जो दीप प्रज्ज्वलित था, उसी से उन्हें दिशा मिलती थी। वे उसी का अनुसरण करते थे, उसी की सुझाई राह पर चलते थे। यह कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है कि कुछ ऐसे भी विषय थे, जिन पर वह सत्रह-सत्रह सालों तक टिके रहे

बात नहीं कर रहा, बल्कि यह जो प्रकृति और मनुष्य है, यह जो जीवन का तानाबाना है, उसके प्रति उनकी आस्था और विश्वास था, और उसे वह समझते थे। यह उनके व्यंग्य में भी दिखाई देता है। वह कहते थे कि यह मेरे चरित्र की वक्रता है। पर उनकी यह वक्रता कभी उनके पौराणिक कामों के आड़े नहीं आई।

कोहली की सबसे बड़ी बात यह थी कि वे अपने मन की सुनते थे। सच तो यह है कि अगर आप के 'अंदर' की लौ जली हो, तो बार-बार आप 'बाहर' किसी चीज की तलाश में नहीं उलझते। कोहली के अवचेतन में जो दीप प्रज्ज्वलित था, उसी से उन्हें दिशा मिलती थी। वे उसी का अनुसरण करते थे, उसी की सुझाई राह पर चलते थे। यह कोई कम आश्चर्य की बात नहीं है कि कुछ ऐसे भी विषय थे, जिन पर वह सत्रह-सत्रह सालों तक वह टिके रहे। यह बहुत आसान नहीं, बल्कि बेहद मुश्किल काम है। मैं कई बार जब क्षणिकाएं लिखता हूं, तो मुझे तो उसे भी समाप्त करने की बहुत जल्दी रहती है। मैं कोहली जी से अकसर पूछता था कि यह जो आप किसी विषय पर टिक कर रहते हैं, इतने वक्त तक, यह विश्वास, यह प्रेम और आकर्षण इतने समय तक कैसे जीवित रहता है। यह उसी के अंदर जीवित रह सकता है, जिसे किसी और को कुछ साबित न करना हो।

दरअसल कोहली का लक्ष्य कुछ और नहीं बस स्वयं को सिद्ध करना था। जिन कथाओं पर वह काम कर रहे थे, वह अद्भुत थीं। जैसे स्वामी विवेकानंद को ही लें, स्वामी जी के विचार तो वह पहले ही अपने व्याख्यानों और लेखों में कह चुके थे तो नया क्या? तो इस पर कोहली जी अकसर कहा करते थे कि मैं उस मनः स्थिति को पढ़ने की कोशिश करता हूं, जिस मनःस्थिति में स्वामी विवेकानंद ने ऐसा कहा था। उस मन को पढ़ने की कोशिश करता हूं, जिस मन से इसका उत्स है, जहां से इसका उत्सर्ग है। यह बहुत ही प्रामाणिक खोज थी और कोहली हमेशा इस खोज में लगे रहे। हमने अंत तक उनकी लेखनी को निर्बाध चलते देखा। रचनाधर्मिता को ले कर उनके सामने कभी कोई अस्तित्ववादी प्रश्नचिह्न नहीं लगा कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूं इत्यादि। वे बहुत ही सहजता से लेखन करते रहे और पूरी एक पीढ़ी को भी बस *चरैवैति चरैवैति* का ही दर्शन देते रहे।

जिससे भी कोहली जी मिले हैं, वह उनके व्यक्तित्व से, उनकी बातों से प्रभावित हुआ है। जिसमें कई फ़िल्मकार भी थे। मैं स्वयं कई फिल्मकारों से उन्हें जोड़ने का प्रयास कर रहा था। मैं चाहता था कि उनके शिल्प को फिल्म के लोग भी समझें। क्योंकि कोहली जी हमारे युग के एक ऐसे महान रचनाकार हैं जिनका एक और विधा से जुड़ना एक सौभाग्य ही होता।

मैं अपनी एक चर्चित कविता की इन चार पंक्तियों से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं —

सर्प क्यों इतने चकित हो, दंश का अभ्यस्त हूं,
पी रहा हूं विष युगों से, सत्य हूं, आश्वस्त हूं...
है मुझे संज्ञान इसका, बुलबुला हूं सृष्टि में
एक लघु सी बूंद हूं मैं, एक शाश्वत वृष्टि में
है नहीं सागर को पाना, मैं नदी संन्यस्त हूं
सर्प क्यों इतने चकित हो, दंश का अभ्यस्त हूं,
पी रहा हूं विष युगों से, सत्य हूं, आश्वस्त हूं

लेखक सेंट्रल बोर्ड ऑफ फिल्म सर्टिफिकेशन के अध्यक्ष और पद्मश्री से सम्मानित चर्चित गीतकार हैं

संघर्ष की भट्ठी में तपकर निकला लेखक

अनंत विजय

कोरोना संक्रमण के कारण नरेन्द्र कोहली के असमय निधन की खबर स्तब्ध करने वाली थी। कोहली मेरे साहित्यिक अभिभावक थे। वह मेरे हर लिखे को पढ़ते ही नहीं थे उसकी कमियों की ओर भी ध्यान आकर्षित करवाते थे। मुझे याद पड़ता है कि एक बार मेरे एक लेख में मैंने अज्ञानता शब्द का प्रयोग किया था। समाचार पत्र पढ़ते ही सुबह-सुबह कोहली जी का फोन आया और विनोदी अंदाज में बोले कि तुम्हारी अज्ञानता को देखकर मैं चकित हूं। मैं थोड़ा घबराया कि मैंने कोई गलत तथ्य तो नहीं लिख दिया। कोहली जी इस बात को जानते थे कि मैं तथ्यों को लेकर अतिरिक्त सावधान रहता हूं। लिखने के पहले कई बार परखता हूं। मुझे तब तक इस बात का अंदाज नहीं था कि वे मेरे लेख में उल्लिखित शब्द 'अज्ञानता' को लक्ष्य कर बोल रहे हैं। जब उन्होंने अपनी बात दोहराई तो कुछ ऐसा बोले जिससे मुझे भान हो गया कि वे क्या कहना चाहते हैं। तब तक उन्होंने भी स्पष्ट कर दिया कि वे मुझे क्या बताना चाह रहे थे। वाकई तब तक मैं नहीं जानता था कि अज्ञानता कोई शब्द नहीं है। इस तरह के कई शब्द और उनके गलत प्रयोग के बारे में उन्होंने मुझे सचेत किया था। वे हिंदी के समाचार पत्रों में उर्दू शब्दों के उपयोग को लेकर भी क्षुब्ध रहा करते थे। उनका आग्रह होता था कि अगर हिंदी के शब्द हैं तो उसका ही उपयोग होना चाहिए। वे भगवान अमरनाथ को बाबा बर्फानी कहे और लिखे जाने के कारण भी दुखी रहा करते थे। उनका कहना था कि बर्फ के शिवलिंग को बाबा बर्फानी कहने का न तो कोई तर्क है और न ही औचित्य। भाषा को लेकर, शब्दों के प्रयोग को लेकर, वाक्यों के गठन को लेकर वे बेहद सतर्क और सावधान रहा करते थे।

कोहली जी हिंदी के समाचार पत्रों में उर्दू शब्दों के उपयोग को लेकर भी क्षुब्ध रहा करते थे। उनका आग्रह होता था कि अगर हिंदी के शब्द हैं तो उसका ही उपयोग होना चाहिए। वे भगवान अमरनाथ को बाबा बर्फानी कहे और लिखे जाने के कारण भी दुखी रहा करते थे। उनका कहना था कि बर्फ के शिवलिंग को बाबा बर्फानी कहने का न तो कोई तर्क है और न ही औचित्य। भाषा को लेकर, शब्दों के प्रयोग को लेकर, वाक्यों के गठन को लेकर वे बेहद सतर्क और सावधान रहा करते थे

नरेन्द्र कोहली के अवसान ने हिंदी साहित्य जगत को बहतु अधिक विपन्न कर दिया है। यह बात मैं इस वजह से कह रहा हूं कि कोहली जी सिर्फ राम कथा लेखक नहीं थे। उन्होंने विपुल लेखन किया और साहित्य की लगभग हर विधा में उन्होंने श्रेष्ठ लिखा। पर उनका लेखकीय संघर्ष भी उतना ही विपुल है। अविभाजित भारत के सियालकोट में पैदा हुए। विभाजन के बाद विस्थापन की असहनीय पीड़ा झेली। परिवार के साथ काफी दिक्कतों का सामना करते हुए जमशेदपुर पहुंचे। वहां पिता के साथ फुटपाथ पर फलों की रेहड़ी लगाई, नौकरों के लिए बने छोटे से दो कमरे के मकान में सालों तक रहे। इन सबके बीच पढ़ाई का अवसर मिला तो पढ़ने में जुट गए। यह भी एक दिलचस्प तथ्य है कि नरेन्द्र कोहली जब जमशेदपुर पहुंचे तो उनकी आरंभिक पढ़ाई गर्ल्स स्कूल में हुई। उस स्कूल का नाम था 'धतकीडीह लोअर प्राइमरी गर्ल्स स्कूल'। लड़कियों के इस स्कूल में तब कम छात्राएं नामांकन करवाती थीं तो कुछ लड़कों को भी प्रवेश मिल जाता था। कोहली चूंकि विभाजन के बाद विस्थापित होकर सियालकोट से जमशेदपुर पहुंचे थे लिहाजा उस आपाधापी में उनके पास स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट आदि नहीं था। गर्ल्स स्कूल में प्रवेश के पहले दूसरी कक्षा की परीक्षा ली गई, जिसमें सभी लड़के फेल हो गए, कोहली भी। पर इनके नंबर दूसरे परीक्षार्थियों अधिक थे लिहाजा स्कूल ने इनको प्रवेश दे दिया।

उनकी पढ़ाई चलने लगी, अपनी मेधा के बल पर कोहली ने माध्यमिक स्कूल में सबका दिल जीत लिया। फिर कॉपरेटिव कॉलेज

Anant Vijay with Narendra Kohli

पढ़ाई के साथ-साथ प्रेम का पाठ भी नरेन्द्र कोहली ने रामजस कॉलेज में पढ़ा। उन्होंने एक बातचीत में मुझे अपने इस प्रेम संबंध के बारे में विस्तार से बताया था। यह भी स्वीकार किया था कि प्रेम करना नहीं आता था लेकिन प्रेम किए जा रहे थे। दिनभर में अगर एक बार भी अपनी प्रेमिका से बतिया लेते थे तो मगन हो जाते थे, नहीं तो परेशान घूमा करते थे

में पढ़ाई करने के बाद दिल्ली आ गए और रामजस कॉलेज में पढ़ाई शुरू हो गई। पढ़ाई के साथ-साथ प्रेम का पाठ भी नरेन्द्र कोहली ने रामजस कॉलेज में पढ़ा। उन्होंने एक बातचीत में मुझे अपने इस प्रेम संबंध के बारे में विस्तार से बताया था। यह भी स्वीकार किया था कि प्रेम करना नहीं आता था लेकिन प्रेम किए जा रहे थे। दिनभर में अगर एक बार भी अपनी प्रेमिका से बतिया लेते थे तो मगन हो जाते थे, नहीं तो परेशान घूमा करते थे। ऐसे ही चल रहा था तब तक एमए की परीक्षा आ गई। कोहली ने परीक्षा दी और जमशेदपुर जाने की तैयारी करने लगे। इस बीच अपनी प्रेमिका से उसका इरादा पूछा तो उसने कहा कि शायद घरवाले इस संबंध को स्वीकार नहीं करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है कि जो अक्खड़पन उनके स्वभाव में दिखता था वो आरंभ से ही था । प्रेम भी अक्खड़पने से ही कर रहे थे। उन्होंने उस लड़की से कहा कि परिवारवाले तो नहीं ही मानते हैं, तुम अपनी बात बताओ कि तुम मुझसे प्रेम करती हो या नहीं। लड़की ने पहली बार में कोई उत्तर नहीं दिया। जब कई बार पूछने पर भी वह नहीं बता पाई कि कोहली से प्रेम करती है या नहीं, तो कोहली ने उससे कहा कि अगर 'हां' नहीं कह सकती हो तो 'ना' ही कह दो, पर पर वह चुप रही। कोहली तो अपनी ही तरह के अकेले व्यक्ति थे। उन्होंने लड़की से कहा कि अगर तुम 'ना' नहीं कह सकती हो तो लो मैं ही तुमसे अपना संबंध समाप्त करता हूं। उन्होंने अपना पर्स निकाला और उसमें लगी लड़की की फोटो वापस करते हुए कहा कि मेरे प्रेम पत्र लौटा दो। उस लड़की ने फोटो तो ले ली पर उनका प्रेमपत्र नहीं लौटाया। कोहली कुछ दिन परेशान रहे फिर मधुरिमाजी से प्रेम किया, दोनों ने दिल्ली विश्वविद्यालय में नौकरी की और फिर विवाह किया।

कोहली की कहानियां लगातार छप रही थीं पर जब दिसंबर 1975 में उनका उपन्यास दीक्षा प्रकाशित हुआ तब वे लेखक के रूप में भी स्थापित भी हो गए। दीक्षा उपन्यास के प्रकाशन को लेकर भी उनको रिजेक्शन झेलना पड़ा। दीक्षा को राजकमल प्रकाशन, राजपाल एंड संस और नेशनल पब्लिशिंग हाउस ने छापने से मना कर दिया था। कोहली ने बताया था कि प्रकाशक ही क्यों दीक्षा को लेकर सारिका, साप्ताहिक हिन्दुस्तान और और धर्मयुग ने भी उदासीनता दिखाई थी। झुब्ध होकर उन्होंने पराग प्रकाशन को दीक्षा छापने के लिए दे दी। छपकर आते ही इस उपन्यास की व्यापक चर्चा हो गई, उपन्यास खूब बिका भी। उसके बाद तो उनके पास प्रकाशकों की लाइन लगने लगी पर कोहली ने अपने अगले तीन उपन्यास पराग प्रकाशन को ही दिए। कोहली के व्यक्तित्व के ये कुछ ऐसे पहलू हैं जिनसे उन कारकों की पहचान हो सकती है जो एक विराट लेखकीय व्यक्तित्व का निर्माण करता है, जिसकी व्याप्ति हिंदी साहित्य जगत से आगे निकलकर अन्य क्षेत्रों में है। उस वैराट्य को हम नरेन्द्र कोहली के नाम से जानते हैं और अपने को भाग्यशाली मानते हैं कि हमने कोहली को न केवल देखा बल्कि उनका सान्निध्य भी हमें मिला।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

संस्कृति के श्रेष्ठ सपूत का मनन पीढ़ियां करेंगी

मालिनी अवस्थी

नरेन्द्र कोहली की बात मैं कहां से शुरू करूं। एक पाठिका के नाते मैं उन्हें जानती थी। उनकी लोकप्रियता का क्या कहना। मैं 1999-2000 में मेरठ में एक प्रकाशक के घर पहली बार *महासमर* से रूबरू हुई और उन्हीं से यह जाना कि कोहली भारत के सबसे अधिक बिकने, छपने वाले कथाकार हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि मैंने तब तक उन्हें पढ़ना प्रारंभ ही नहीं किया था। और फिर जैसे आपका दिल, आपका मन किसी पर आ जाए, मुझे रेलवे स्टेशन, पुस्तकालय में सबसे पहले कोहली जी ही नजर आते थे। *राम का अभ्युदय* का प्रथम खंड, द्वितीय खंड पढ़कर मुझे अपने मन की जिज्ञासाओं, कितने प्रश्नों के उत्तर मिल गए। लोकगायिका के रूप में मैं भगवान राम के जीवन-चरित की उन लीलाओं, घटनाओं को स्वर देती हूं, जिनमें शबरी प्रसंग, केवट प्रसंग, अहल्या को तारना दिखता है, पर फिर सीधे किष्किंधा कांड प्रारंभ हो जाता है। लेकिन चौदह वर्ष के वनवास में राम ने जिस प्रकार से एक सोये हुए आर्यावर्त को जगाया, लोगों का आत्माभिमान जगाया, इसे कोहली जी ने रचा था। मुझे लगा ऐसी बातें लिखने वाला भी बहुत पुरुषार्थी व्यक्ति होगा। यही रचना मुझे कोहली जी के पास ले गई। बहुत ही जल्दी पुस्तक मेले में मैं उनसे मिली।

मेरा सौभाग्य था कि इसके बाद साहित्यकार कोहली के व्यक्तिगत पक्ष को भी जानने का अवसर मुझे मिला। पहली घटना पुरस्कार वापसी के समय की है। उस समय पूरे देश में यह प्रपंच चल रहा था कि कौन कौन से पुरस्कार वापस किए जाएं। साहित्य अकादेमी के साथ ही संगीत नाटक अकादेमी का भी एक पुरस्कार किसी ने पंजाब से वापस किया तो मुझसे रहा नहीं गया। मैं सरोजा वैद्यनाथन के साथ अकादेमी परिसर पहुंची। वहां नरेन्द्र कोहली भी अपनी आपत्ति दर्ज करने आए थे। वह कहते थे कि अगर आपने सत्य को पाला है तो उसके साथ खड़ा होने की दृढ़ता भी आपमें होनी चाहिए। कोहली जी के अस्सीवें जन्मदिन की यादें हैं। यह संयोग है कि कोहली जी जिन दो व्यक्तित्वों से प्रभावित थे, पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी और पंडित विद्या निवास मिश्र उन्हीं की लेखनी से मैं भी प्रभावित थी। एक और घटना है, 'लोक में राम' नामक एक सांस्कृतिक आयोजन हमने अयोध्या में किया था, जिसका बीज वक्तव्य देने के लिए हमने कोहली जी से आग्रह किया। उन्होंने शर्त रखी कि मैं तभी आऊंगा, जब तुम राम लला के दर्शन कराओगी। कोहली आए और शाम को बीज वक्तव्य के बाद हम राम लला के दर्शन हेतु कपाट तक पहुंचे, तो प्रकृति भी जैसे इस घटना की साक्षी हो गई। आसमान में बादल छा गए।

कोहली जी ने बताया कि मैंने अपने आपसे वादा किया था कि अयोध्या तभी आऊंगा, जब मंदिर बन जाएगा। अब कोर्ट ने निर्णय दे दिया है, इसलिए मैं यहां आया हूं कि मैं रहूं, न रहूं यहां मंदिर निर्माण होकर रहेगा। राम लला के सामने उनका चेहरा आंसुओं से भीगा था। मैं उन्हें आधुनिक भारत का तुलसी कहती ी। मैं मानती हूं कि मां भारती या संस्कृति अपनी सेवा करने के लिए समय-समय पर सपूत ढूंढ लेती हैं। कोहली जी भी ऐसे ही सपूत थे। उनका आना, पौराणिक चरित्रों पर लिखना एक ऐसे भारत की आवश्यक अनिवार्यता थी, जब हम भारतीयता बोध से थोड़ा दूर भागने लगे थे। अपने महापुरुषों की मानवीय अभिव्यक्ति, पौराणिक चरित्रों की जो पुनर्व्याख्या कोहली जी ने की है, वह अद्भुत है। उनका आभामंडल दूर दूरंत तक व्याप्त था। वह इतना कुछ लिख गए हैं कि आने वाली पीढ़ियां उनका चिंतन, मनन करती रहेंगी।

Malini Awasthi with Narendra Kohli

मैं उन्हें आधुनिक भारत का तुलसी कहती थी। मैं मानती हूं कि मां भारती या संस्कृति अपनी सेवा करने के लिए समय-समय पर सपूत ढूंढ लेती हैं। कोहली जी भी ऐसे ही सपूत थे। उनका आना, पौराणिक चरित्रों पर लिखना एक ऐसे भारत की आवश्यक अनिवार्यता थी, जब हम भारतीयता बोध से थोड़ा दूर भागने लगे थे। अपने महापुरुषों की मानवीय अभिव्यक्ति, पौराणिक चरित्रों की जो पुनर्व्याख्या कोहली जी ने की है, वह अद्भुत है

लेखिका पद्मश्री से सम्मानित लोकगायिका हैं

आज के युग में विश्वामित्र का आह्वान कर रहे थे कोहली

डॉ. कृष्ण गोपाल

नरेन्द्र कोहली ने अपने जीवन में सौ से भी अधिक ग्रंथों की रचना की। साहित्य के क्षेत्र में कथा हो, कहानी हो, व्यंग्य हो, अनुभव हो या विचार, पौराणिक प्रसंगों को आधार बनाकर आज के युग संदर्भ में वैचारिक मूल्यों का निरूपण कोहली जी की विशेषता थी। उन्होंने जीवन भर इन विषयों पर बखूबी काम किया। पर उनकी विशेषता यह है कि कोई भी देश और समाज एक वैचारिक आधार को लेकर आगे बढ़ता है। हमारे देश का जो सांस्कृतिक और वैचारिक दर्शन है, उसको सुदृढ़ करने का कार्य सैकड़ों–हजारों वर्षों से हमारे साहित्यकार करते चले आ रहे हैं। उन्होंने पूरे जीवन यही किया। लेकिन हर युग में एक नए प्रकार की आवश्यकता होती है। कोहली ने वर्तमान युग में अपने मौलिक, वैचारिक, सांस्कृतिक आधार को समयानुकूल ढंग से प्रस्तुत किया है, यह उनकी खूबी है। वह *रामायण* के ही पात्रों को रखते हैं, *रामायण* का ही प्रसंग रखते हैं, तो एक नए प्रकार से रखते हैं। धर्म का साहित्य या साहित्य का धर्म, इसको उन्होंने बहुत अच्छे ढंग से स्पष्ट किया और कहा कि साहित्यकार वह है, जो एक युग के आवश्यक तत्व को समझकर सामने रखता है।

साहित्यकार वह है, जो हर युग में पीड़ित पक्ष को लेकर आगे बढ़ता है। कोहली भी आह्वान करते हैं कि आज के युग में कैसे विश्वामित्र आ जाएं। वह मानते हैं कि राक्षसी प्रवृत्तियां तो रहेंगी, लेकिन चाहते हैं कि साधु वृत्ति, सात्विक वृत्ति बनी रहे। हर युग में राम भी होगा, हर युग में राक्षस भी होगा, इसलिए विश्वामित्र चाहिए। कोहली की तलाश विश्वामित्र की है

साहित्यकार युग के सत्य को सामने रखता है। कोहली ने इस बात को महर्षि वाल्मीकि की तरह स्पष्ट किया। जैसे वाल्मीकि ने क्रोंच वध में जो पीड़ित पक्ष है, उसकी व्यथा को सामने रखा, वही काम कोहली ने किया। साहित्यकार वह है, जो हर युग में पीड़ित पक्ष को लेकर आगे बढ़ता है। कोहली भी आह्वान करते हैं कि आज के युग में कैसे विश्वामित्र आ जाएं। वह मानते हैं कि राक्षसी प्रवृत्तियां तो रहेंगी, लेकिन चाहते हैं कि साधु वृत्ति, सात्विक वृत्ति बनी रहे। हर युग में राम भी होगा, हर युग में राक्षस भी होगा, इसलिए विश्वामित्र चाहिए। कोहली की तलाश विश्वामित्र की है। वह जब *राम की कथा* लिखते हैं भिन्न–भिन्न खंडों में तो आज के युग के प्रसंगों को, कथा का आह्वान करते हैं। *महाभारत* की कथा भी जब उठाते हैं, तो आज के युग के अनुसार उसे प्रस्तुत करते हैं। विषय कोई भी हो, वर्तमान युग के संदर्भों के साथ उन्होंने विभिन्न प्रकार से प्रस्तुति की। हिंदी साहित्य का इतिहास, जो एक तरह से भारतेंदु हरिश्चंद्र से प्रारंभ होता है से चलें तो जयशंकर प्रसाद, महावीर प्रसाद द्विवेदी, निराला, पंडित रामचंद्र शुक्ल से होते हुए पं हजारी प्रसाद द्विवेदी, पं विद्या निवास मिश्र मिलते हैं। वर्तमान युग में हिंदी साहित्य को मजबूती देने का काम कोहली ने किया है।

साहित्य की विधा के अनेक क्षेत्रों को उन्होंने स्पर्श किया। उनके कृतित्व को स्मरण करने के साथ ही आने वाली पीढ़ी उनके समस्त साहित्य में से जो भी उसे अपने अनुकूल लगता है, उनका अध्ययन करे। वर्तमान की समस्या अध्ययन की है। लोग ग्रंथों के अध्ययन के लिए समय कम निकाल पाते हैं। मेरा आह्वान है कि सभी लोग साहित्य को अपने घर में संभालकर रखें। समयानुकूल समय निकालकर उसका अध्ययन करें। उसमें से जो सार है, उसे ग्रहण कर आगे बढ़ाएं, यही सच्ची श्रद्धांजलि नरेन्द्र कोहली को होगी। साहित्यकार फिर आगे आएंगे और इस विधा को, प्रवाह को आगे बढ़ाएंगे। मैं नरेन्द्र कोहली की स्मृति को विनम्रतापूर्वक नमन करता हूं।

लेखक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह हैं

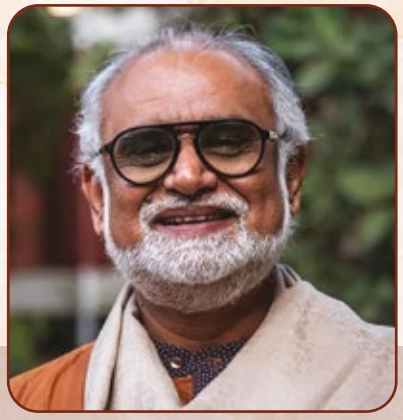

भारतीय संस्कृति के असाधारण साधक

सच्चिदानंद जोशी

भारतीय संस्कृति की विराटता चिरंतन आक्रमण के बीच भी अक्षुण्ण और अनवरत बनी रही, तो इसमें साहित्यकारों की भूमिका प्रमुख है। आधुनिक भारत में संस्कृति को लेकर निरंतर साधनारत होकर लेखन करने वालो में नरेन्द्र कोहली प्रमुख हैं। उन्होंने अपनी असाधारण रचना–क्षमता से उस समय साहित्य रचा जब एक बड़ा वर्ग भारतीय संस्कृति के मूल आधारों को तर्कहीन चुनौती देने में लगा था। इसलिए कोहली का मेरे मन में सदा से विशेष स्थान रहा है। उनसे आखिरी मुलाकात दो अप्रैल की शाम संस्कार भारती कला संकुल के लोकार्पण कार्यक्रम में हुई, जब उन्होंने बाहर निकलते हुए कहा, 'अब तो सब हो गया न, अब तो इजाज़त है?' यह उनसे आखिरी मुलाक़ात होगी ऐसा दूर–दूर तक अंदेशा नहीं था। दो अप्रैल के कार्यक्रम में कुछ अति विशिष्ट व्यक्तियों को निमंत्रित करने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई थी। कोहली भी उनमें से एक थे।

कोई उन्हें आधुनिक तुलसीदास तो कोई कबीर सा मानता है। लेकिन मुझे लगता है कि वे अपनी तरह के अलग ही व्यक्ति थे, एकदम नरेन्द्र कोहली जैसे ही। उनकी तुलना बस उन्हीं से की जा सकती है। इसलिए मन में संतोष और ईश्वर के प्रति आभार है कि मुझे उस युग में पैदा किया, जिसमें कोहली ने अपना रचना कर्म किया। ये भाग्य क्या कम है?

लगभग दस साल पहले ग्वालियर में एक कार्यक्रम में कोहली के साथ मंच साझा करते हुए सीधे परिचय हुआ था। उन्हें युवावस्था से पढ़ रहा था। *अवसर*, *दीक्षा*, *युद्ध*, *अभ्युदय*, *महासमर* और *तोड़ो कारा तोड़ो* जैसी कालजयी रचनाओं के रचयिता से मिलने का उत्साह भी था और कौतूहल भी। मुझे लगा था कि वे गंभीर व्यक्ति होंगे, लेकिन अपेक्षा के विपरीत वे सहज, सरल और मित्रवत थे। इसी कार्यक्रम में उनके तेवर की भी झलक मिली जब उन्होंने संचालक महिला को अपने इस परिचय पर टोका कि "आपका जन्म सियालकोट पाकिस्तान में हुआ है।" कोहली ने कहा, "मेरा जन्म जब हुआ था तब सियालकोट हिंदुस्तान का ही हिस्सा था। मेरा जन्म हिंदुस्तान में ही हुआ है।" फिर धीरे से कान में बोले, 'पता नहीं कहां से पढ़ लेते हैं परिचय और वही बोलते रहते हैं।'

एक बार स्वामी विवेकानंद पर भाषण देने कोहली को रायपुर बुलाया था, विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम में। मुख्य व्याख्यान कोहली का ही था। लेकिन उनके पहले के वक्ता विशेष अतिथि आवंटित समय से ज्यादा बोलते जा रहे थे। कोहली असहज होने लगे। अपने भाषण की शुरुआत ही उन्होंने तंज से किया, "मुझे तो लगा कि मुझे यहां सिर्फ सुनने के लिए बुलाया गया है।" लेकिन इसके बाद उन्होंने दिए विषय पर धाराप्रवाह, यादगार भाषण दिया। उनके 80वें जन्मदिन का कार्यक्रम इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में मनाने का सौभाग्य मिला। उस दिन मंच और मंच के परे हास्य विनोद का जो सिलसिला चला वह अविस्मरणीय था। कोहली का सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण योगदान था पूरी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति के नायकों से सरल, रोचक और भावपूर्ण शैली में परिचित करवाना। साहित्य के माध्यम से पीढ़ी का निर्माण करना, उसे संवारना। पौराणिक और ऐतिहासिक व्यक्तित्वों पर शानदार तरीके से लिखने वाले वे हिंदी के निराले सुपरस्टार लेखक थे।

वे जब भी मिलते बहुत आत्मीयता से मिलते। हम उनका एक आर्काइवल इंटरव्यू रिकॉर्ड करना चाहते थे, जिस पर उन्होंने मजाक में कहा था, "अभी आर्काइवल क्यों, अभी तो मैं लगातार लिख रहा हूं।" उनकी प्रसिद्ध पुस्तक *पूत अनोखो जायो* के पृष्ठ 13 पर नरेन्द्र (स्वामी विवेकानंद) गाना प्रारंभ करते हैं '*रहना नहीं देस बिराना है।*'

सोचा नहीं था कि ये नरेन्द्र भी हमसे यही कहते हुए महाप्रयाण कर जाएंगे, अपने सद्गुरु के पास —

कहत कबीर सुनो भाई साधो
सद्गुरु नाम ठिकाना है।

कोई उन्हें आधुनिक तुलसीदास तो कोई कबीर सा मानता है। लेकिन मुझे लगता है कि वे अपनी तरह के अलग ही व्यक्ति थे, एकदम नरेन्द्र कोहली जैसे ही। उनकी तुलना बस उन्हीं से की जा सकती है। इसलिए मन में संतोष और ईश्वर के प्रति आभार है कि मुझे उस युग में पैदा किया, जिसमें कोहली ने अपना रचना कर्म किया। ये भाग्य क्या कम है?

लेखक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव हैं

यादों में भलेमानस पड़ोसी

क्षमा शर्मा

नरेन्द्र कोहली जी के जाने के बाद कल ही मधुरिमा भाभी से बात हो रही थी। हम दोनों कितनी पुरानी बातें याद कर रहे थे। वे छोटी-छोटी बातें जो इनसानियत से जुड़े रिश्तों को रेखांकित करती हैं। जो यों ही जीवन में घट जाती हैं।

तब मेरा बेटा छोटा था। सुधीश उसे डे केयर सेंटर में छोड़कर आते थे, तो कभी-कभी रास्ते में पड़ने वाले कोहली जी के घर चले जाते थे। भाभी कह रही थीं कि सुधीश खूब बातें करता था। जब जनवादी लेखक संघ बना रहा था, तो मेरे कॉलेज में आया। सबने पैसे दिए। उसके जाने के बाद लाइब्रेरियन बोला- मैडम ये आप जनवादियों के चक्कर में कहां से पड़ गईं।

कई दशक पहले कोहली परिवार और हम ग्रेटर कैलाश में रहते थे। एक-दूसरे के घर खूब आना-जाना था। वे हमेशा परिवार के बड़े की तरह पेश आते। मधुरिमा भाभी खूब स्नेह लुटातीं। उनके घर में अकसर साहित्यिक गोष्ठियां होती थीं। उन दिनों के कई उभरते साहित्यकार, जैसे कि महेश दर्पण, रमेश बतरा, सुभाष अखिल आदि कोहली के घर आते थे। अपनी-अपनी रचनाएं पढ़ते थे। मैंने भी एक बार अपनी कहानी पढ़ी थी।

कई दशक पहले कोहली परिवार और हम ग्रेटर कैलाश में रहते थे। एक-दूसरे के घर खूब आना-जाना था। वे हमेशा परिवार के बड़े की तरह पेश आते। मधुरिमा भाभी खूब स्नेह लुटातीं। उनके घर में अकसर साहित्यिक गोष्ठियां होती थीं। उन दिनों के कई उभरते साहित्यकार, जैसे कि महेश दर्पण, रमेश बतरा, सुभाष अखिल आदि कोहली के घर आते थे। अपनी-अपनी रचनाएं पढ़ते थे। मैंने भी एक बार अपनी कहानी पढ़ी थी

बाबा नागार्जुन जब आते तो खाने की जो चीज उन्हें पसंद आती, वहां से हमारे लिए ले आते, और हमारे यहां से उनके लिए ले जाते। कोहली जी ने अपनी एक किताब में इस बात के जिक्र के साथ नागार्जुन के एक पत्र का भी उल्लेख किया। नागार्जुन ने लिखा था - सुना है कि सुधीश शादी कर रहा है। लड़की का नाम क्षमा है। जब मेरे बेटे का जन्म हुआ तो भाभी अपने छोटे बेटे शिशु के छुटपन के कपड़े ले आईं। उन कपड़ों में हरा रंग का एक स्वेटर था, पीले रंग का एक और कपड़ा। यह आज तक मेरे पास है।

ग्रेटर कैलाश में कोहली के घर के पास लिटिल एंजिल्स नाम का एक प्ले स्कूल था। उसी में उनके दोनों बच्चे गए थे। यहीं उन्होंने मेरे बेटे का दाखिला करा दिया। यहां से एक रिक्शे वाला उसे डे केयर सेंटर में छोड़ता था। एक दिन ऑफिस में आकर अखबार पढ़ने लगी, तो एक खबर पढ़कर घबरा गई। खबर थी कि एक रिक्शेवाले ने स्कूल छोड़ने वाले बच्चे का अपहरण कर लिया। मेरा सिर घूमने लगा। कहीं मेरे बच्चे का भी किसी ने अपहरण न कर लिया हो। डे केयर सेंटर में फोन नहीं था। तभी मुझे कोहली भाईसाहब का ध्यान आया। मैंने उन्हें फोन किया। संयोग से वह घर में ही थे। उन्होंने मुझे दिलासा दिया कि घबराओ मत, मैं अभी पता करता हूं। थोड़ी देर बाद उनका फोन आया। वह डे केयर सेंटर होकर आए थे। बच्चा वहीं था। मैंने उनका आभार प्रकट किया।

ग्रेटर कैलाश में रहते हुए ही उन्होंने अपना मकान बनवाया। न जाने कैसे मकान बनवाते हुए, व्यस्त रहने के बावजूद वह लिखते भी रहे। जबकि वैशाली, जहां उनका मकान बन रहा था, बहुत दूर था। ग्रेटर कैलाश से हर रोज वह कई बसें बदलकर जाते। बाद में वह अपने वैशाली के मकान में चले गए। मिलना-जुलना भी कम हो गया। जब मेरी बेटी का जन्म हुआ तो उनका दो लाइन का पत्र आया। लिखा था - सुधीश, पता चला है कि तुम्हें दूसरी संतान का सुख प्राप्त हुआ है।

कई साल पहले एक कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग के सिलसिले में रेडियो गई तो वहां वह मिल गए। हम बहुत दिनों बाद मिले थे, इसलिए बातों में इतने मशगूल हुए कि याद भी न रहा कि रिकॉर्डिंग होनी है। कार्यक्रम वाले के बार-बार याद दिलाने पर कहीं जाकर हम उठे।

वह चले गए हैं, लेकिन हमारी यादों में हमेशा बने रहेंगे।

लेखिका वरिष्ठ पत्रकार हैं

पुरोधा लेखक, जिन्हें मैं आधुनिक व्यास कहती थी

चित्रा मुद्गल

नरेन्द्र कोहली का जाना, जानें क्यों मुझे लग रहा है कि वे असमय चले गये। कोरोना संक्रमण ने उन्हें दबोच लिया। यह देश की, भारतीय भाषाओं की इतनी बड़ी क्षति है, जिसकी भरपाई नहीं की जा सकती। कम से कम मुझे इसका विकल्प नज़र नहीं आ रहा। मैं उन्हें मजाक-मजाक में हमेशा आधुनिक व्यास कह कर पुकारती थी। वे हंसने लगते थे। जहां तक मेरी जानकारी है, वे एकमात्र ऐसे भारतीय लेखक हैं, कम से कम हिंदी के तो हैं ही, जिन्होंने साहित्य के लिए, सृजनात्मकता के लिए अपनी प्राध्यापक की नौकरी छोड़ दी। उनकी पत्नी मधुरिमाजी ने उन्हें आश्वस्त किया कि वे घर देख लेंगी, घर चला लेंगी। अगर कोहली जी अपनी सृजनात्मकता से ही जुड़े रहना चाहते हैं, तो उसी काम में लग जायें, जिस तरह से वे रहना चाहते हैं। कोहली ने लगभग सौ पुस्तकें लिखीं। चाहे वह महाभारत हो, रामायण हो, विवेकानंद के ऊपर उनका जो वृहद कार्य हो, शायद ही किसी भाषा में उस तरह का कार्य हुआ हो। यह कोहली की ही क्षमता और उनका ही समर्पण है कि हमारे जो पौराणिक, पुरातन अद्वितीय महाकाव्य हैं, उनके चरित्रों को उन्होंने नई पीढ़ी के लिए फिर से लिखा और उसमें उन्होंने उस समय को सजीव कर दिया। विशेषकर शहरी पाठकों के लिए।

कोहली ने लगभग सौ पुस्तकें लिखीं। चाहे वह *महाभारत* हो, *रामायण* हो, विवेकानंद के ऊपर उनका जो वृहद कार्य हो, शायद ही किसी भाषा में उस तरह का कार्य हुआ हो। यह कोहली की ही क्षमता और उनका ही समर्पण है कि हमारे जो पौराणिक, पुरातन अद्वितीय महाकाव्य हैं, उनके चरित्रों को उन्होंने नई पीढ़ी के लिए फिर से लिखा और उसमें उन्होंने उस समय को सजीव कर दिया। विशेषकर शहरी पाठकों के लिए

गांव में अब भी रामायण का पाठ होता है और ग्रामीण बच्चे कहीं न कहीं रामायण के पात्रों से परिचित होते हैं, नैतिकताओं से, मूल्यों से परिचित होते हैं। एकलव्य की कहानी मैंने लगभग साठ साल पहले गांव के अपने स्कूल में पढ़ी थी, जिससे मुझे प्रेरणा मिली। आखिर एकलव्य जैसा महाभारत का पात्र द्रोणाचार्य द्वारा शिक्षा देने से मना कर देने के बावजूद छिप छिप कर उनके द्वारा अर्जुन को दी जा रही धनुर्विद्या को देखकर अपने बूते प्रशिक्षित होकर उसी अनुशासन को अपनाता है, और एक दिन अपने कौशल से अपने उसी गुरु को चमत्कृत कर देता है। द्रोणाचार्य इस भय से कि अर्जुन कहीं पीछे न रह जाएं, उससे गुरुदक्षिणा में अंगूठा मांग लेते हैं। तो शहरों में जन्म ले रही है, नई पीढ़ी नहीं जानती कि तुलसीदास की *रामायण*, वाल्मीकि *रामायण* क्या है, *महाभारत* के पात्र कैसे हैं, उनकी कहानियां क्या हैं? यह उनके माता-पिता को भी ठीक से नहीं आती। जिन लोगों का बचपन ग्रामीण क्षेत्र में बीता है, जिनके दादा-दादी, माता-पिता ने रामायण, गीता, कल्याण को पढ़ा है, उन्हें तो पता है, फिर भी समयाभाव के चलते वे अपने बच्चों को नहीं बता पाते। ऐसे बच्चे, उस ज्ञान, मूल्य, भ्रातृप्रेम, जो भरत, लक्ष्मण और राम के बीच था की जानकारी से वंचित रह जाते हैं, उन तक कोहली की पुस्तकें पहुंचीं।

कोहली हिंदी के सबसे अधिक बिकने और पढ़े जाने वाले लेखक थे। भारतीय भाषाओं में कन्नड़ लेखक भैरप्पा को मैं इसी रूप में देखती हूं, पाती हूं। ऐसे व्यास, तुलसी को हमने असमय खो दिया। हमें अभी उन्हें और पढ़ना था। धर्मयुग के जमाने से वे हमारे पारिवारिक मित्र थे। *दीक्षा* से *समर* तक उनकी अनेकों पुस्तकें मैंने पढ़ीं है। विवेकानंद पर उनकी पुस्तक *तोड़ो कारा तोड़ो* हिंदी भाषा में एक दस्तावेज की तरह है। व्यंग्य और गद्य भी उन्होंने लिखा, पर पुरोधा तो वह *रामायण* और *महाभारत* के ही हैं, जिनके पात्रों को उन्होंने जन-जन से परिचित कराया है। वे बहु अनूदित लेखक रहे। उनकी पुस्तकों के अनुवाद कई विदेशी भाषाओं में भी हुए। मैं ने एक गंभीर मित्र को खोया है। मधुरिमाजी एक समग्र पत्नी की उदाहरण हैं, जिन्होंने अपने पति की सृजनात्मकता के प्रस्ताव को कि तुम सिर्फ लिखना चाहते हो, तो लिखो के दुख और साहस को भी मैं याद करती हूं। डॉ नरेन्द्र कोहली को श्रद्धांजलि!

साहित्य अकादेमी से सम्मानित वरिष्ठ लेखिका, पारिवारिक मित्र

उन्होंने भारत को आत्मबोध का साक्षात्कार कराया

बल्देव भाई शर्मा

प्रख्यात साहित्यकार और चिंतक नरेन्द्र कोहली का स्मरण करते हुए राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की एक पंक्ति याद आ रही है, *'उर्वशी अपने समय का सूर्य हूं मैं!'* सचमुच अपने दौर की साहित्यिक चेतना को प्राणवान बनाए रहे कोहली जी, बिल्कुल सूर्य जैसी तेजस्विता के साथ। उनका इस तरह अचानक से चले जाना भारतीय साहित्य जगत के राष्ट्रीय–सांस्कृतिक सरोकारों की अपूरणीय क्षति है. उन्होंने देश की स्वाधीनता के बाद उस काल में हिंदी साहित्य को भारतीयता के आत्मबोध से समृद्ध किया, जब औपनिवेशिक दास मानसिकता से ग्रस्त बुद्धिजीवियों का एक वर्ग देश के प्रबुद्ध जनमानस में भारत के प्रति आत्महीनता और अभारतीय दृष्टिकोण स्थापित करने के षड्यंत्र में लगा था। यह वर्ग भारत के जिन जीवन मूल्यों को, साहित्यिक संस्कारों को 'मिथ' कहकर नकार रहा था और भारत की पहचान मिटाने में लगा था, कोहली ने उसी को आधार बनाकर रामायण–महाभारत की कथाओं को आधुनिक संदर्भ देकर ऐसा शृंखलाबद्ध साहित्य रचा कि लोग उनके दीवाने हो गए। स्वामी विवेकानंद के जीवन पर आधारित *तोड़ो कारा तोड़ो* ने युवाओं में नई चेतना का संचार किया।

कोहली का साहित्य सृजन जीवन के प्रति एक नए और सार्थक दृष्टिकोण का प्रतिपादन करने वाला है। वस्तुतः साहित्य कोई शब्दों का खेल या मनोरंजन का साधन भर नहीं है। संत तुलसीदास ने मानस में लिखा है — *'कीरति भनति भूलि भलि सोई, सुरसरि सम सबकर हित होई।'* साहित्य और लेखन गंगा की तरह लोक कल्याणकारी हो तभी वह सार्थक है। कोहली ने राम, कृष्ण, विवेकानंद जैसे प्रतीकों को लेकर आधुनिक साहित्य को लोकोपकारी व भारत के नवनिर्माण की चेतना से युक्त बनाया। उनके साहित्य में राष्ट्रबोध, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक चेतना और मानवीयता केंद्रीयभूत तत्व हैं। उन्होंने साहित्य को एक व्यापक चिंतन दृष्टि तो दी ही व्यंग्य विधा को भी नया पैनापन और धार दी। एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार के रूप में भी वह उतने ही शीर्ष पर हैं, जितनी अन्य साहित्यिक कृतियों के लिए यशस्विता मिली। यह विरल संयोग है कि कोहली साहित्य की अलग–अलग विधाओं में सम्यक रूप से पारंगत थे।

कोहली ने राम, कृष्ण, विवेकानंद जैसे प्रतीकों को लेकर आधुनिक साहित्य को लोकोपकारी व भारत के नवनिर्माण की चेतना से युक्त बनाया। उनके साहित्य में राष्ट्रबोध, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक चेतना और मानवीयता केंद्रीयभूत तत्व हैं। उन्होंने साहित्य को एक व्यापक चिंतन दृष्टि तो दी ही व्यंग्य विधा को भी नया पैनापन और धार दी। एक श्रेष्ठ व्यंग्यकार के रूप में भी वह उतने ही शीर्ष पर हैं, जितनी अन्य साहित्यिक कृतियों के लिए यशस्विता मिली

कोहली का साहित्य और उनका व्यक्तिगत जीवन जितना मैंने जाना और समझा, मुझे महाभारत की एक पंक्ति याद आती है *'अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे न दैन्यं न पलायनम्।'* साहित्य सृजन के लिए उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक की जमी जमाई नौकरी छोड़ दी। यह लेखन के प्रति उनका दुस्साहसी विश्वास और प्रतिबद्धता ही थी कि वह इतनी हिम्मत जुटा सके जबकि आमतौर पर कहा जाता है कि 'लेखन से क्या पेट भरता है।' लेखन के लिए उन्होंने बड़े वैचारिक विरोध झेले, एक पूरी जमात उनको नकारने में लगी रही लेकिन वे न डरे न डिगे। उन्होंने न दीनता दिखाई और न मैदान छोड़ा। यह भावबोध ही उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी, जिसे कई बार लोग उनका अक्खड़पन समझते थे, लेकिन वास्तव में यह उनकी दृढ़ता थी विचार, कार्य और जीवन के दृष्टिकोण के प्रति।

उनसे संबंध निभाना सूर्य के ताप को झेलने जैसा था। बातों का तीखापन लेकिन अंदर से मृदुता। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का अध्यक्ष रहते मैंने अनेक बार उनका मार्गदर्शन लिया, अपने चुटीले अंदाज में वे दिशाबोध देते थे। मेरे अध्यक्ष बनने के अगले ही दिन संस्कार भारती के एक कार्यक्रम में डॉ कमल किशोर गोयनका, दयाप्रकाश सिन्हा और कोहली जी के साथ मैं भी मंचस्थ था। कार्यक्रम के बाद गोयनका जी ने कोहली जी से कहा, बल्देव जी एनबीटी के अध्यक्ष बन गए। आपको पता है? अब ये बड़े आदमी हो गए हैं। कोहली जी ने तपाक से कहा, बल्देव जी तो पहले ही बड़े आदमी थे, अब इनके आने से एनबीटी बड़ा हो जाएगा। ऐसा स्नेहपगा भाव आप्लावित था उनके अंतःकरण में। मेरे लिए इससे बड़ा आशीर्वाद और क्या हो सकता था। सचमुच कोहली हिंदी साहित्य का कीर्ति कलश हैं। उनका साहित्य उनके न होने के शून्य को भरता रहेगा।

लेखक कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति हैं

अपने लक्ष्य पर आखिरी तक टिके रहने वाले व्यक्ति

डॉ. सी. भास्कर राव

नरेन्द्र कोहली पर उनके न रहने के बाद लिखना मेरे लिए सहज नहीं है। मेरे पास उनसे जुड़ी स्मृतियों का अप्रतिम भंडार है, इतनी सारी यादें हैं कि उन्हें शब्द-संख्या में बांधना संभव ही नहीं। मैं, सूर्या (अब मेरी पत्नी) और नरेन्द्र जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज में सहपाठी रहे। दशकों पुराना हमारा संबंध और उतनी ही विशद यादें। इसलिए मैं विस्तार में न जाकर केवल संत जेवियर्स कॉलेज रांची में आयोजित उस दीक्षांत समारोह की चर्चा करूंगा, जिसमें नरेन्द्र ने दीक्षांत व्याख्यान दिया था और हम उनसे मिलने के लालच में उस ऐतिहासिक पल के द्रष्टा बने थे। हमारे यहां सामान्यत: प्रदेश के राज्यपाल ही राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति होने के चलते दीक्षांत भाषण दिया करते हैं। पर यहां दीक्षांत समारोह के व्याख्याता नरेन्द्र थे। हम गौरवान्वित अनुभव कर रहे थे। कॉलेज में उत्सव का माहौल था। वहां प्राचार्य तथा अन्य वरिष्ठ शिक्षकों के साथ वरिष्ठ रंगकर्मी कमल बोस ने नरेन्द्र के साथ हमारा भी स्वागत किया। हम दर्शकों के लिए निर्धारित सीट पर अग्रिम पंक्तियों में बैठे और मंच पर अतिथियों के आगमन का इंतजार करने लगे।

मंच पर सब से पहले नरेन्द्र थे, गाऊन में। अपनी सहज चाल में। बिना किसी असहजता के। शेष लोग उनके पीछे थे। नरेन्द्र सभी अतिथियों में सबसे अलग-थलग और विशिष्ट लग रहे थे। उनके चलने और बैठने में एक आत्मविश्वास था। एक तो उनका दमकता हुआ गौर वर्ण, उस पर चेहरे में उगी हुई एक विद्वान तथा बुद्धिजीवी का अहसास कराने वाली उनकी दाढ़ी। मानो भारतीयों के बीच में एक विदेशी विद्वान बैठा हो। वे किस विदेशी विद्वान से कम थे। अपने क्षेत्र के वे विशेषज्ञ और विद्वान माने ही जाते हैं। भारत सरकार की ओर से पद्मश्री उपाधि की घोषणा के बाद यह पहला अवसर था जब नरेन्द्र को सार्वजनिक रूप से किसी विशेष मंच से, विशेष अवसर पर पद्मश्री संबोधित किया गया था। हम रोमांचित थे। अपनी साहित्य-साधना से नरेन्द्र आज किस ऊंचाई तक पहुंचे हैं।

मंच पर सब से पहले नरेन्द्र थे, गाऊन में। अपनी सहज चाल में। बिना किसी असहजता के। शेष लोग उनके पीछे थे। नरेन्द्र सभी अतिथियों में सबसे अलग-थलग और विशिष्ट लग रहे थे। उनके चलने और बैठने में एक आत्मविश्वास था। एक तो उनका दमकता हुआ गौर वर्ण, उस पर चेहरे में उगी हुई एक विद्वान तथा बुद्धिजीवी का अहसास कराने वाली उनकी दाढ़ी। मानो भारतीयों के बीच में एक विदेशी विद्वान बैठा हो। वे किस विदेशी विद्वान से कम थे। अपने क्षेत्र के वे विशेषज्ञ और विद्वान माने ही जाते हैं

नरेन्द्र ने ही सबसे पहले दीप प्रज्ज्वलन की रस्म पूरी की, बाद में अन्य अतिथियों ने। माल्यार्पण सबसे पहले नरेन्द्र का ही हुआ। स्पष्ट दिख रहा था कि सबसे सुंदर और आकर्षक बुके नरेन्द्र को ही दिया गया था। स्वागत भाषण संपन्न हुआ। यह अच्छा था कि अधिक वक्ता नहीं थे। यों मंच पर काफ़ी महत्त्वपूर्ण लोग उपस्थित थे, लेकिन बोलना कुछ ही को था। नरेन्द्र ने अपनी बारी आने पर जो कुछ कहा, उसका सार संक्षेप यही था कि आगे की पढ़ाई और करियर के लिये अपने विवेक से छात्र काम लें। किसी के बहकावे और दबाव में न आएं। जिस क्षेत्र में रुचि है उसी का चयन करें। कोई कोर्स सिर्फ़ इसलिये न करें कि उसमें सफ़लता और नौकरी की संभावनाएं अधिक हैं। अपने मन की आवाज को सुनें और उसे ही प्राथमिकता दें। आगे जो कुछ भी पढ़ें सिर्फ़ डिग्री पाने के लिए नहीं, वरन अपने विकास के लिए पढ़ें।

नरेन्द्र ने अपना उदाहरण दिया। किस तरह मेधावी छात्र होते हुए भी विज्ञान छोड़कर साहित्य में आये, तो उनके इस निर्णय को परिवार और समाज के लोगों ने स्वीकार नहीं किया। उन्हें मूर्ख समझा गया, मजाक भी उड़ाया गया, लेकिन उनका लक्ष्य आरंभ से ही स्पष्ट था। वह किसी प्रलोभन के सामने झुके नहीं। इसी का परिणाम था कि एक हिन्दी लेखक को इस दीक्षांत भाषण के लिए आमंत्रित किया गया। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापक की प्रतिष्ठित नौकरी छोड़ने और पूरी तरह साहित्य को समर्पित होने के अपने निर्णय पर आर्थिक नुकसान को लेकर मिली चेतावनियों का भी उल्लेख किया। सभी छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामना दी। मैं चकित था कि कोई इतने कम समय में इतनी सही, सारगर्भित और सार्थक बात कैसे कह सकता है। इसी रूप में अपने मेंटोर नरेन्द्र कोहली के प्रति पुन: पुन: हार्दिक श्रद्धांजलि!

लेखक कोहली के पुराने साथी हैं

सनातन संस्कृति के साधक साहित्यकार

डॉ. के. श्रीनिवासराव

नरेन्द्र कोहली से अकादेमी के कार्यक्रमों और संस्कृति मंत्रालय की बैठकों में जब भी मेरी मुलाकात हुई, उनका गंभीर व्यक्तित्व और चेहरे की आभा हर बार मुझे दिव्य लगती। वे बेहद संतुलित बातें करते थे। राष्ट्रीय भावात्मक एकता या तुलसीदास जी पर जब साहित्य अकादेमी की राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई, तब कोहली अध्यक्षीय वक्तव्य में धाराप्रवाह बोले। मुझे याद है कि उन्होंने भारतीय सभ्यता, संस्कृति और अध्यात्म के सामाजिक पक्षों के बारे में कई सूत्र दिए थे, जो हमारी एकता और बंधुता में सहायक रहे हैं, लेकिन अकसर हम उन पर ध्यान नहीं दे पाते। मैंने जितना उन्हें जाना और पढ़ते हुए समझा, वे मुझे एक साधक के रूप में प्रतीत हुए। हर बार मन में यह इच्छा जागती रही कि उनकी निर्मिति के बारे में कुछ जानूं।

कोहली का पूरा साहित्य इस बात का प्रमाण है कि उन्हें अपने व्यक्तित्व की पहचान के साथ अपने युग-धर्म का भी ज्ञान था। इसीलिए उनका साहित्य प्रतिबद्धता में प्रति-सौंदर्य को तलाशने की क्षमता प्राप्त कर लेता है, और सौंदर्य तथा संवेदना की प्रचलित परिभाषाओं को विस्तृत कर देता है। कोहली अपने ज्ञानात्मक और संवेदनात्मक निष्कर्षों से समाज और साहित्य की सौंदर्य-रुचि को न केवल प्रश्नांकित करते हैं बल्कि 'नए सौंदर्य' की प्रस्तावना भी करते हैं। पर उनके इस 'नए सौंदर्य' की प्रस्तावना, कोई आविष्कृत 'नया' रूप नहीं है। कोहली भारतीय परंपरा के आदर्श मूल्यों के उस सनातन सौंदर्य से परिचित हैं, और उनमें गहरी आस्था रखते हैं, जिन्हें हम भौतिकता और पश्चिम के अंधानुकरण में छोड़ बैठे हैं। वह सनातन मूल्यों के प्रति अपने स्वप्न, कल्पना तथा आशाओं को इस तार्किकता के साथ रचनात्मक रूप में प्रकट करते हैं कि उन आदर्श मूल्यों के लिए रुचि जागृत हो सके।

कोहली अपने ज्ञानात्मक और संवेदनात्मक निष्कर्षों से समाज और साहित्य की सौंदर्य-रुचि को न केवल प्रश्नांकित करते हैं बल्कि 'नए सौंदर्य' की प्रस्तावना भी करते हैं। पर उनके इस 'नए सौंदर्य' की प्रस्तावना, कोई आविष्कृत 'नया' रूप नहीं है। कोहली भारतीय परंपरा के आदर्श मूल्यों के उस सनातन सौंदर्य से परिचित हैं, और उनमें गहरी आस्था रखते हैं, जिन्हें हम भौतिकता और पश्चिम के अंधानुकरण में छोड़ बैठे हैं

अज्ञेय ने कहा था कि व्यक्ति का कर्म तथा सृजन समाज में अस्वीकृति पाता है और अगर उसमें आत्मबल है तो ऐसी स्थिति में वह विद्रोह कर सकता है। पर कोहली ने अपनी प्रतिभा को मात्र विद्रोह में न लगा कर, एकांत साहित्य-साधना के प्रति समर्पित कर दिया और ऐसी कालजयी कृतियां लिखीं कि उनकी उपयोगिता स्वयं सिद्ध हो गई। यह कोहली का कारनामा और उनका साहित्यिक आत्मबल है, जो समाज को भी संबल देने के लिए जीवंत कृतियों का एक भरा-पूरा सुंदर संसार उपस्थित कर देता है। उन्होंने अपना लेखन कहानियों और व्यंग्य रचनाओं से शुरू किया था, लेकिन जल्दी ही उन्हें लगा कि भारतीय संस्कृति के महान ग्रंथों को आज के समय और परिवेश में युवा पीढ़ी के सामने नए रूप में लाना आवश्यक है, जिससे यह पीढ़ी अपने भीतर के आलोकित संस्कारों से परिचित हो सके और अपना रास्ता पा सके। इससे हिंदी साहित्य में एक 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' शुरू होता है, और यह कोई छोटी घटना नहीं है। अपने समय के अंधकार, निराशा, अनैतिकता, भ्रष्टाचार और मूल्यहीनता के दौर में उन्होंने ऐसी सार्वकालिक कथाओं और पात्रों को चुना जो भारतीय मनीषा के उज्ज्वल नक्षत्र थे।

कोहली ने रूढ़ हो रही रामकथा को अपनी प्रतिभा के बल पर जिस प्रकार उपन्यास के रूप में लिखा, वह तो अब हिंदी साहित्य के इतिहास का एक स्वर्णिम पृष्ठ बन चुका है। एक उपेक्षित और निर्वासित राजकुमार अपने आत्मबल और संस्कारों से शोषित, पीड़ित, त्रस्त और पस्त जनमानस में नए प्राण और नई चेतना जगा देता है, *अभ्युदय* में यह देखना किसी चमत्कार से कम नहीं था। *युद्ध* नामक रामकथा शृंखला की सराहना तो पाठकों के साथ यशपाल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ नगेंद्र, अमृतलाल नागर जैसे अनेक विद्वानों ने भी की। कवि नागार्जुन ने तो भविष्यवाणी करते हुए बहुत मज़बूती से कहा था कि 'प्रथम श्रेणी के कतिपय उपन्यासकारों में अब एक नाम और जुड़ गया।' कोहली भारतीय सनातन संस्कृति की साधना को समर्पित ऐसे साहित्यकार थे, जिनकी कमी कभी पूरी नहीं हो सकेगी।

लेखक केंद्रीय साहित्य अकादेमी के सचिव हैं

"याद उस अनोखे लेखक की, जिससे रौशन हुए थे कलम के कई सत्र"

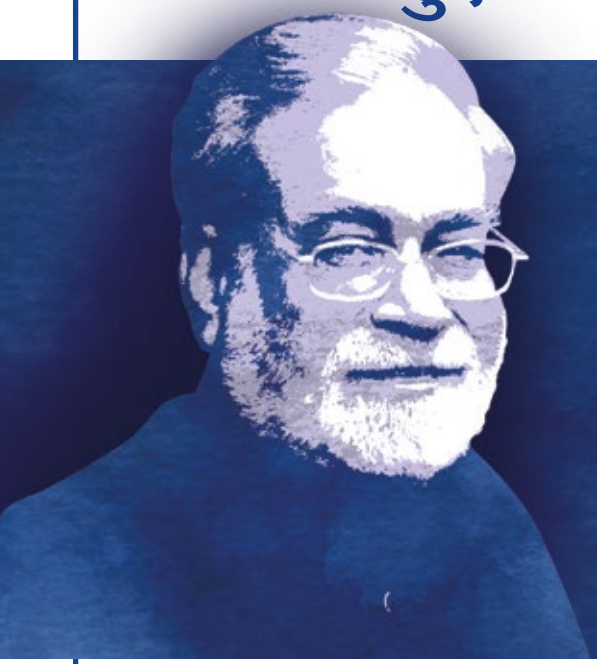

भारतीय संस्कृति, उससे जुड़े नायकों और पौराणिक आख्यानों के उम्दा रचनाकार नरेन्द्र कोहली नहीं रहे। उन्होंने श्री राम कथा से लेकर स्वामी विवेकानंद तक, और व्यंग्य से लेकर निबंध–संस्मरण तक की विधा में एक विशिष्ट पहचान बनाई। वह देश में हिंदी के सबसे अधिक छपने और बिकने वाले आधुनिक लेखकों में हैं। यह हमारा सौभाग्य रहा कि अपने प्रशंसकों के बीच 'आधुनिक तुलसी' के रूप में लोकप्रिय कोहली ने प्रभा खेतान फाउंडेशन द्वारा आयोजित कलम के छः शहरों को अपनी गरिमामय उपस्थिति से समृद्ध किया। उनकी स्मृति को नमन करते हुए हमारे सहयोगियों के संस्मरणात्मक–लेख।

सोचा नहीं था
ऐसी खबर आएगी
कि फिर उनकी कोई खबर नहीं आएगी

वह दिन मेरे जीवन का सबसे सौभाग्यशाली दिन था जब संयोग से मेरी मुलाकात नरेन्द्र कोहली जैसे महान साहित्यकार से हुई। उन्होंने साहित्य सृजन को एक नई दिशा प्रदान की। उन्हें आधुनिक गद्य में महाकाव्य लेखन के प्राचीन रूप को फिर से स्थापित करने का श्रेय दिया जाता है।

उनका मानना था कि साहित्य समाज का दर्पण है। समाज को नैतिकता प्रदान करने का जिम्मा साहित्य को लेना होगा। उचित मानवीय मूल्यों के विकास के लिए सकारात्मक सोच व ऊर्जा से भरपूर लेखन ही एक नई पहचान कायम करने में सक्षम हो सकता है।

अभिज्ञान में लेखक नरेन्द्र कोहली ने अपनी लेखनी से वैयक्तिक मानसिकता का परिचय देते हुए कहा है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और संभावनाओं से धनार्जन करता है। उसका उद्देश्य अपनी प्रकृति के अनुरूप कार्य करना है। जिस प्रकार सुदामा धनी एवं समृद्ध राजा कृष्ण के निर्धन मित्र थे परन्तु वे कभी भी कृष्ण की समृद्धि से विचलित नहीं होकर शांत भाव से जीवन यापन करते रहे।

बचपन से ही मेरी रुचि हिंदी व्यंग्य साहित्य में रही है। दैवयोग से मुझे डॉ. नरेन्द्र कोहली द्वारा रचित व्यंग्य साहित्य पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ है। व्यंग्यकार कोहली ने परंपरागत रूप से प्रदर्शित सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पीड़ा व शोषण से ग्रसित समाज के स्थान पर नवीन विचारों का संचार कर मुझे अपने साहित्य की ओर आकर्षित कर लिया।

उनके साथ मेरी पहली मुलाकात बहुत यादगार रही और फिर प्रत्येक मुलाकात के दौरान मुझे उनके व्यंग्य, बुद्धिमत्ता और ज्ञान का स्वाद मिला। हर बातचीत में उनके शब्दों के पीछे एक संदेश छिपा होता था।

मुझे याद है कि मेरी पहली मुलाकात नवंबर 2015 में जयपुर में हुई थी, जब वह **कलम** कार्यक्रम के लिए आए थे। होटल जयपुर मैरियट के डेक पर बैठे, वह बहुत गंभीर दिखे। चुप्पी तोड़ते हुए मैंने उनसे पूछा कि क्या आप कुछ लेंगे और उन्होंने कहा, 'ज़्यादा पीने का शौक नहीं है मुझे।'

Apra Kuchhal and L.P. Pant with Narendra Kohli

'क्या नाम है आपका?

'जी अपरा, मेरा मतलब है अपरा कुच्छल।'

'जयपुर में ही रहती हो या.?'

'जी जयपुर में पली बढ़ी और यहीं पर शादी हुई है।'

'पिताजी क्या करते हैं?'

'जी माई फादर इज.

'पादरी हैं क्या?'

'जी नहीं, नहीं।'

'आप लोगों की पीढ़ी को पिताजी कहते हैं हुए शर्म क्यों आती है?'

आंखें झुका कर मैंने कहा, 'जी माफ़ी चाहूंगी।'

फिर वह बोले, 'इतने बड़े होटल में तो अक्सर अंग्रेज़ी भाषा के ही लेखकों को बुलाते हैं?'

मेरे मुंह से निकला — 'जी... मेरा मतलब है जी नहीं।'

और वह कार्यक्रम स्थल की ओर चल दिये।

उनके साथ हुई इस छोटी सी बातचीत ने मेरे दिल और आत्मा पर छाप छोड़ दी। मैं उनकी सहजता, साथ ही चुनौतीपूर्ण विषयों को भी एक विनोदी तरीके से व्यक्त करने के कौशल पर मंत्रमुग्ध हो गई।

उनसे और उनकी अर्धांगिनी से मेरी अगली मुलाकात जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल के दौरान जयपुर में हुई।

पिछले कुछ वर्षों से, जेएलएफ के दौरान, कमरा 111 लेखकों, प्रकाशकों, साहित्यिक एजेंटों और दोस्तों का पसंदीदा अड्डा है। यहां फेस्टिवल की हलचल से काफी राहत होती है और जयपुर के व्यंजनों का आनंद उठाया जा सकता है।

फेस्टिवल की एक दोपहर वह अपनी पत्नी मधुरिमाजी के साथ कमरा 111 में आए। उन्होंने एक बार में ही मुझे पहचान लिया और कहा, "आप तो वो बड़े होटल वाली हैं ना? क्या अब ऐसे आयोजन करने बंद कर दिए हैं या फिर हिंदी लेखकों का पत्ता साफ़ हो गया है?"

मैं बोली, "जी हां– जी नहीं।"

"अरे सोच लो क्या बोलना चाहती हो?"

"जी जी।

"आप बहुत अच्छे लग रहे हैं एकदम यंग और स्मार्ट।"

गंभीरतापूर्वक मुझसे बोले — "एक मिनट रुको" और अपनी पत्नी को आवाज़ दी, "सुनो क्या कह रही हैं यह मेरे बारे में, कभी तुम भी तो बोला करो।"

उनकी बात से पूरा कमरा हंसी के ठहाकों से गूंज उठा।

तीसरी बार नई दिल्ली में, अगस्त 2019 में अनंत विजय की पुस्तक विमोचन कार्यक्रम में मेरी उनसे मुलाकात हुई। यह मुलाकात बहुत छोटी थी। उस दिन वह बिना किसी को ज्यादा मौका दिए माइक पर बोलने के मूड में थे। डायस पर अन्य सभी मेहमानों ने दर्शकों का कुछ समय और ध्यान खींचने की पूरी कोशिश की, लेकिन कोहली ने दर्शकों का दिल जीत लिया।

मेरी आखिरी बातचीत सितंबर 2019 में जोधपुर **कलम** कार्यक्रम के आयोजन के सिलसिले में हुई थी। उन्होंने बहुत संकोच के साथ मुझसे पूछा कि क्या उनकी पत्नी उनके साथ यात्रा कर सकती हैं। कोहली में यह ईमानदारी और सादगी थी। जब वे इस कार्यक्रम के लिए जोधपुर पहुंचे, तो उन्होंने मुझे होटल के कमरे से कॉल किया और होटल में सुविधाओं के बारे में ख़ुशी जताई। फ़ोन रखते हुए उन्होंने कहा, "दो लोग और भी रह सकते हैं हमारे साथ में– इतना बड़ा कमरा है!"

जोधपुर के उस सत्र ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने अतिथियों और मीडिया के सभी सवालों के जवाब दिए। जैसी सबको उम्मीद थी, **कलम** का सत्र थोड़ा लंबा ही चला उस दिन।

सत्र की तरह काश वह भी हमारे बीच कुछ और समय तक रहते।

ये दिल मांगे मोर।

नमन!

अपरा कुच्छल, जयपुर

उनका लेखन उन्हें सर्वकालिक बनाने के लिए पर्याप्त

एक पीढ़ी ऐसी भी है जो समझती थी कि लेखक और कवि किसी दूसरी दुनिया के लोग होते हैं। मैं उसी पीढ़ी की हूं। मेरे लिए अपने आदरणीय लेखकों को जानने का एकमात्र रास्ता उनके लेखन के माध्यम से होकर जाता है। भाग्यवश समय बीतने के साथ मेरा हिंदी साहित्य का क्षितिज थोड़ा विस्तृत हुआ और मुझे उन शानदार लेखकों से साक्षात मिलने के मौके मिले। पद्मश्री से सम्मानित डॉ. नरेन्द्र कोहली जी से मुलाकात किसी जादुई मौके से कम न थी। मेरे सामने वह थे जिन्हें मैं केवल उनकी 2006 में आयी जीवनी *क्षमा करना जीजी* में खींचे धुंधले से रेखाचित्र के माध्यम से जानती थी। फोन पर हुआ हमारा पहला वार्तालाप आज भी मेरे मस्तिष्क पर शब्दशः टंकित है। मैंने उन्हें मई 2017 में मुक्तांगन में लोक, आस्था और साहित्य पर एक सत्र के लिए पद्मश्री से सम्मानित डॉ. उषाकिरण खान के साथ आमंत्रित करने के लिए फोन किया था। उन्होंने फोन उठाया तो मैंने कहा, "प्रणाम सर, हम आराधना बोल रहे हैं।" "खुश रहिए, पर ये क्या भाषा बोल रही हैं आप? मैं आराधना बोल रही हूं सही भाषा है।" मैं अब भी नहीं जानती कि मैंने बात आगे बढ़ाने का साहस कैसे जुटाया, लेकिन वह उस सत्र में आने के लिए तैयार हो गए। इससे मैं प्रसन्नता और अभिभूत होने के अनोखे भाव से भर उठी थी। तब से अब तक के चार वर्षों में मुझे उनसे मिलने और उनके सत्रों में भाग लेने के अनेक अवसर मिले। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** ने जब **कलम** गुरुग्राम शुरू किया तो मुझे लगा कि नई यात्रा शुरू करने के लिए कोहली से बेहतर कोई दूसरा लेखक नहीं हो सकता। और, उन्होंने हमारा निमंत्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया। असाधारण लेखक कोहली की लिखित के साथ ही मौखिक भाषाई दक्षता अतुलनीय थी। उनकी सुघड़ता और तेज से उनके व्यक्तित्व की गहराई झलकती थी।

Aradhana Pradhan with Narendra Kohli

स्पष्टवक्ता और निडर व्यक्ति कोहली टेढ़े को टेढ़ा कहने में कभी संकोच नहीं करते थे। संभवत: यही कारण हो सकता है कि उनके आसपास उनकी पीढ़ी के कई अन्य लेखकों की तुलना में कम लोग होते थे। 2020 में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र में मनाए गए उनके 80वें जन्मदिन पर वहां पहुंचे लोगों की संख्या देखकर मुझे थोड़ा दु:ख हुआ था। आखिर, किसी महान लेखक का विशेष दिन मनाने तथा हिंदी भाषा और साहित्य में उनके योगदान के प्रति सम्मान व्यक्त करने का ऐसा अवसर हर दिन तो नहीं मिलता। लेकिन कोहली निश्चित ही से इससे अप्रभावित रहे और लगभग 40 मिनट तक अच्छे से वक्तव्य देकर हमें उस सुअवसर की अनमोल स्मृति दी। हालांकि मैं उनके प्रति श्रद्धा रखने जैसा सम्मान करती थी, लेकिन शुद्ध हिंदी बोलने और लिखने के उनके विचार से मैं बहुत सहमत नहीं थी। एक बार मैंने सोशल मीडिया पर एक नज़्म के हिस्से का चित्र परिचय के रूप में प्रयोग किया तो उन्होंने असहमति जाहिर की थी। दुर्भाग्य से उनसे वह मेरी आखिरी बातचीत थी।

हम सांसारिक लोगों को लगता है कि जहां तक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों का संबंध है, तो उन्हें उनका हक नहीं मिला है। लेकिन मेरे विचार से कोहली जी के कद के लेखक को कालजयी होने के लिए ऐसी मान्यताओं की आवश्यकता नहीं है; उनका लेखन उन्हें सर्वकालिक बनाने के लिए पर्याप्त है।

मैंने उन्हें आखिरी बार फरवरी 2021 में जानकीपुल.कॉम पर वरिष्ठ पत्रकार राहुल देव और पोर्टल के संस्थापक प्रभात रंजन के साथ आभासी बातचीत में सुना था। बातचीत उनकी नवीनतम पुस्तक *समाज, जिसमें मैं रहता हूं* के बारे में थी। सत्र समाप्त होने के बाद मैं फोन करके बताना चाहती थी कि उन्हें सुनना हर बार कितना संतुष्टिप्रद होता है और कि हर बार मैं उनसे कुछ सीखती हूं। काश, मैंने बाद में फोन करने के बारे में न सोचा होता! काश, मुझे यह श्रद्धांजलि इतनी जल्दी न लिखनी पड़ी होती! काश, वह और कुछ समय हमारे बीच रहे होते। हमें, हिंदी को और भारत को दूसरा नरेन्द्र कोहली नहीं मिलेगा!

चरण स्पर्श कोहली जी!

आराधना प्रधान, नोएडा

अपनी मातृभाषा पर गर्व करने वाले लेखक को अंतिम प्रणाम

बात 27 सितंबर, 2015 की है। इसी साल जून महीने में **कलम** रायपुर की शुरुआत हुई थी और इसकी दूसरी कड़ी में ही हमें नरेन्द्र कोहली जैसे वरिष्ठ साहित्यकार को अपने शहर में सुनने का सौभाग्य मिल गया। मुझे याद है उन्हें रिसीव करने के लिए मैं समय से रायपुर एयरपोर्ट पहुंच गया था। मैं पहली बार उनसे मिल रहा था, हालांकि उनके बारे में बहुत कुछ सुन रखा था और पढ़ भी चुका था। मेरे जैसे साहित्य के नादान विद्यार्थी के मन में कोहली की छवि बहुत विराट थी। हर समय यही लग रहा था कि उनके अतिथि सत्कार में हमारी तरफ से कोई चूक न रह जाए। एयरपोर्ट से हम अपनी कार से होटल की ओर आने लगे। रास्ते में औपचारिक बातचीत शुरू हुई। वे मेरे बारे में, हमारी संस्था के बारे में जानकारियां ले रहे थे। थोड़ी ही देर में हम होटल हयात रायपुर पहुंच गए। यहां आते ही रिसेप्शन पर होटल की एक कर्मचारी ने अंग्रेजी में बातें शुरू कीं। कोहली ने उन्हें सम्मानपूर्वक रोकते हुए सवाल कहा कि क्या आपको हिंदी नहीं आती? उस महिला ने थोड़ा झिझकते हुए कहा कि जी सर मैं हिंदी जानती हूं। इस पर कोहली ने कहा, 'तो फिर कृपया आप मुझसे हिंदी में ही बातें करें।' मुझे यह देखकर सुखद आश्चर्य हुआ कि हिंदी के प्रति उनका लगाव कितना गहरा है।

Gaurav Girija Shukla with Narendra Kohli

शाम को तय समय पर **कलम** कार्यक्रम शुरू हुआ। बहुत ही अच्छी एवं जानकारीप्रद चर्चा हुई। अनेक विषयों पर कोहली ने बेबाक राय रखी। वेद, पुराण, उपनिषद और गीता के साथ ही उनकी किताबों एवं पात्रों के बारे में चर्चा हुई। पूरी बातचीत में कोहली के साहित्यिक एवं तार्किक विचार उभर कर सामने आए। सवाल-जवाब के दौरान शहर के एक सुधी पाठक ने सवाल के रुप में अपनी राय रखते हुए कहा कि 'पहले आप व्यंग्य लिखते थे बाद में पॉपुलर रायटिंग करने लगे। आपको इस लोकप्रिय विधा में नहीं आना चाहिए, व्यंग्य ही लिखना चाहिए।' इसके जवाब में कोहली ने कहा, 'मैं अनेक विधाओं में लिखता हूं, अभी भी लिख रहा हूं। लेकिन जैसे एक लेखक अपने पाठक को बाध्य नहीं कर सकता कि उसे क्या पढ़ना चाहिए उसी तरह एक पाठक भी किसी लेखक को बाध्य नहीं कर सकता कि उसे क्या लिखना चाहिए। अगर आपको लेखक के विचार सही न लगें तो आप उसे खारिज कर दीजिए लेकिन उसे इस तरह बाध्य नहीं किया जा सकता कि जो आपको पसंद हो वही लिखा जाए।' मुझे उनके इस जवाब ने बहुत प्रभावित किया।

कार्यक्रम के बाद रात्रिभोज के वक्त हमारी और भी बातें हुईं और इस समय तक मैं उनके साथ बहुत ही सहज हो चुका था। बात हिंदी भाषा, युवा पीढ़ी और अंग्रेजी के प्रभाव पर होने लगी। उन्होंने कहा कि मैं अंग्रेजी का विरोधी नहीं हूं। लेकिन जहां हिंदी में बात हो सकती है वहां किसी और भाषा के अतिक्रमण के पक्ष में नहीं हूं। अपनी भाषा पर हमें गर्व होना चाहिए और यह तभी होगा जब हम अपनी मातृभाषा पर बात करेंगे, मज़बूत पकड़ बनाएंगे। इसी चर्चा में उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा में जो शब्द होते हैं, वह उस भाषा के सामाजिक, सांस्कृतिक और पारंपरिक पहलू को भी दर्शाते हैं। उदाहरण के साथ समझाने के लिए उन्होंने मुझसे पूछा कि 'शादी के लिए पर्यायवाची शब्द क्या क्या हैं?' मैंने कहा विवाह, निकाह, मैरिज। फिर उन्होंने मुझसे पूछा कि 'तलाक का पर्यायवाची बताओ हिंदी में।' मैंने कहा अंग्रेजी में डिवोर्स होता है लेकिन हिंदी में नहीं मालूम। उन्होंने कहा कि हिंदी में तलाक शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है। आगे समझाते हुए उन्होंने कहा कि 'शादी के लिए हिंदी में शब्द है विवाह जिसकी उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। जैसे उद्वाह का मतलब होता है ऊपर की ओर आगे बढ़ना वैसे ही वैवाह (विवाह) का मतलब होता है साथ-साथ आगे बढ़ना। विवाह का मतलब यह नहीं है कि कोई वधु अपने वर के शरण में आई है। विवाह किसी तरह का अनुबंध नहीं है, जिसमें साथ रहने या अलग होने के नियम व शर्तें लागू हों। इसलिए इस भाषा में तलाक के लिए कोई पर्यायवाची शब्द नहीं है।' आधुनिक जीवनशैली में पाश्चात्य के प्रभाव से हम अपनी मूल संस्कृति को भूलते जा रहे हैं इसकी उन्हें पीड़ा थी।

हम डिनर के बाद भी बहुत समय तक अन्य विषयों पर बातें करते रहे। मुझे उनका सानिध्य इतना अच्छा लग रहा था कि समय होने पर भी मुझे उन्हें छोड़कर जाने का मन नहीं हो रहा था। हालांकि मैं उनसे विदा लेकर अपने घर लौट आया लेकिन उनकी बातें लगातार मेरे भीतर गूंज रहीं थीं। मुझे लग रहा था मानों वे मुझे हिंदी भाषा का ज्ञान नहीं दे रहे बल्कि जीवन का पाठ पढ़ा रहे थे। एक विराट व्यक्तित्व के धनी आदरणीय नरेन्द्र कोहली के साथ बिताया वो एक-एक मिनट मेरे जीवन की अनमोल उपलब्धि रही। उनकी स्मृतियां हमेशा मेरे हृदय में रहेंगी। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** एवं **कलम** के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं है, कि मैं अपनी भावनाएं अभिव्यक्त कर सकूं।

एक महान लेखक नरेन्द्र कोहली को सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं....

गौरव गिरिजा शुक्ला, छत्तीसगढ़

अपने शौर्य से अपरिचित ही नहीं अछूते लेखक

Kanak Rekha Chauhan with Narendra Kohli

अगस्त 2019 को कलकत्ता के **प्रभा खेतान फाउंडेशन** से फ़ोन आया कि इस माह के लखनऊ **कलम** के लेखक होंगे नरेन्द्र कोहली।

जहां मन में ख़ुशी थी कि इतने बड़े लेखक, इतने बड़े व्यक्ति से मिलने का अवसर मिलेगा वहीं मन में कहीं ये डर भी था कि कहीं कोई छोटा मुंह बड़ी बात न हो जाए या आदर सत्कार में कोई कमी न रह जाए।

तय हुआ कि 19 अगस्त को **कलम** में शामिल होने के लिए कोहली लखनऊ पधारेंगे। 18 की दोपहर को कोहली हयात होटल में पधार चुके थे। यद्यपि अगले दिन कार्यक्रम में मिलना ही था लेकिन बहुत ऊहापोह के बाद भी मन नहीं माना और फ़ोन करके उनकी कुशलक्षेम पूछकर हम होटल जा पहुंचे।

यों तो तस्वीरों में भी उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व दिखाई देता था लेकिन प्रत्यक्ष देखा तो जाना कि कोहली एक उच्चवर्गीय पंजाबी नाक नक्श वाले, गोरे चिट्टे, गुलाबी रंगत वाले व्यक्तित्व के स्वामी हैं! जो थोड़ी बहुत घबराहट थी मन में कि न जाने किस तरह वो मुझसे मिलें, सो उनकी मंद सौम्य मुस्कान ने ही मेरी समस्त आशंकाएं दूर कर दीं।

बड़े स्नेह से पूछा, 'आप कनकजी हैं ना?' और फिर उसके बाद बातों का सिलसिला जो शुरू हुआ तो काफी देर तक चला।

उस दिन होटल के कमरे में उनके एक परिचित भी थे। कोहली ने उनसे कहा, 'अरे भाई कनकजी को चाय तो पिलाओ!' यूं तो मुझे बहुत संकोच हुआ कि कोई मेरे लिए चाय बनाएगा लेकिन अच्छा लगा कि इतने बड़े इनसान ने मेरे लिए इतना सोचा और एक बहुत स्नेहपूर्ण आग्रह से चाय भी पिलाई ।

चाय की चुस्कियों के बीच बातों का सिलसिला उनके जन्म स्थान से शुरू हुआ जो कि अविभाजित हिंदुस्तान यानी वर्तमान में पाकिस्तान का सियालकोट शहर था और फिर बंटवारे के बाद उनके परिवार का भारत के जमशेदपुर शहर में विस्थापित होना, तत्पश्चात दिल्ली का होकर रह जाना।

दिलचस्प है कि हिंदी के इस सर्वकालिक श्रेष्ठ रचनाकार की शिक्षा का माध्यम हिंदी न होकर उर्दू था। हिंदी विषय उन्हें दसवीं कक्षा की परीक्षा के बाद ही मिल पाया।

बंटवारे और विस्थापन का दर्द अब भी उनकी बातों में झलक जाता। मैं उनको मंत्रमुग्ध सुनती रही और वे बोलते रहे– दिल्ली की बातें, लेखक और प्रकाशक के संबंध की चर्चा, जो कि उनके शब्दों में, "ये संबंध मियां बीवी जैसा होता है, यानी न तुझको और न मुझको ठौर", साहित्यिक जगत में **प्रभा खेतान फाउंडेशन** के उल्लेखनीय योगदान की बातें।

जो बात मुझे पहले क्षण से ही समझ में आयी वो ये कि कोहली एक बहुत शालीन व्यक्ति थे जो कि अपनी प्रसिद्धि से अभिभूत नहीं दिखे। आज के समय में जबकि एक किताब प्रकाशित होने पर लेखक अपने को गौरवान्वित समझते हैं, यहां ये एक श्रेष्ठ रचनाकार, जिनके नाम से हिंदी साहित्य का एक युग आरम्भ हुआ और समाप्त भी हो चला, अपने शौर्य से अपरिचित ही नहीं अछूते भी रहे। मेरा मानना है कि यदि वो अंग्रेज़ी में लिखते तो शायद उन्हें और भी कहीं ज़्यादा शोहरत मिलती। ये बाजारवाद का एक दुर्भाग्यपूर्ण पहलू है कि हमारी हिंदी की पहुंच और मार्केटिंग आज भी अंग्रेजी से मात खा रही है।

मन कर रहा था कि हम यूं ही उन्हें सुनते रहें लेकिन शाम हो चली थी और जब मैंने पूछा कि क्या आप शाम–ए–अवध (पर्यटन क्षेत्र) देखना चाहेंगे तो उन्होंने मुस्कुरा कर कहा कि अब इस उम्र में तो शाम को सही समय पर सो जाना ही ठीक है।

नरेन्द्र कोहली के निधन से साहित्य जगत की जो अपूरणीय क्षति हुई है उसकी भरपाई शायद कभी नहीं हो सकेगी लेकिन उनके साथ बिताया हुआ समय मेरे लिए जीवन भर की पूंजी के समान है।

कनक रेखा, लखनऊ

ईमानदार लेखन के प्रेरणास्रोत के रूप में अमर रहेंगे

(L-R) Padmesh Gupta, Abhigyan Prakash, Mira Kaushik and Prithvi Raj Chauhan (former chief minister of Maharashtra) with Narendra Kohli

नरेन्द्र कोहली के निधन से उन लाखों-करोड़ों पाठको को तो दुख पहुंचा ही है, जो उनके प्रशंसक थे, परन्तु जो लोग उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानते थे, उन्हें स्वाभाविक रूप से अधिक दुख पहुंचा है। मुझे उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानने और समझने का सौभाग्य मिला। कोहली दो बातों के लिए जाने जाते थे, एक पौराणिक कथाओं के लेखक, विशेषज्ञ और दूसरी अपनी स्पष्टवादिता के लिए। उनका सान्निध्य मुझे कई बार प्राप्त हुआ है। वर्ष 2002-2003 के दौरान वे लंदन आये थे, त्रिनिदाद और मारीशस सम्मलेन में साथ रहे, दिल्ली में अनेक कार्यक्रमों में भी मिलते रहे, अक्षरम के एक आयोजन में कोहली ने मेरी कहानी *डेड एंड* पर वक्तव्य भी दिया था; परन्तु जब दो वर्ष पूर्व, मार्च 2019 में वह हमारे निमंत्रण पर **कलम** के कार्यक्रम में इंग्लैंड आये थे, तो मेरे ही निवास पर ठहरे थे। तब उनके साथ तीन-चार दिन बिताने का सुअवसर मिला, और मेरी दृष्टि में उनकी दोनों ही छवियां बदल गईं।

मैंने पाया कि उनकी स्पष्टवादिता में कितना प्रेम और आत्मीयता है। मुझे वह कविता याद आयी जो मेरे पिता जी मुझे मेरे बचपन में सुनाया करते थे — *'हृदय सदैव समीप है जिसके दूर वही हो जाता है, क्रोध उसी पर आता है जिससे अपना कुछ नाता है!'*

उन तीन-चार दिनों में मेरे साथ उनकी आत्मीयता इतनी बढ़ गई कि उन्होंने अपने जीवन के कुछ ऐसे अनुभव और संघर्ष मेरे साथ यह कहते हुए साझा किये कि न उन्होंने इसके बारे में कहीं लिखा है और न ही सार्वजनिक रूप से बताया है।

कोहली का जन्म अविभाजित भारत में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है और विभाजन के समय, किस प्रकार से किन परिस्थितियों में वे भारत आये। जिस बस या ट्रक में उनका परिवार आने वाला था परन्तु किन्हीं कारण से उसमें उन लोगों को जगह नहीं मिली, उन्हें दूसरी बस लेनी पड़ी, और शायद रास्ते में उन लोगों को पता चला कि उस पूरी बस के लोगों को मार-काट दिया गया। मैंने उनसे कहा कि आप अपने यह अनुभव लिखते क्यों नहीं हैं, हमारी पीढ़ी और आने वाली पीढ़ी के लिए आपको लिखना चाहिए, तो उन्होंने मुझे आश्वासन दिया कि वे अवश्य लिखेंगे। विभाजन के प्रति उनके अंदर के आक्रोश को मैं जान पाया।

दूसरी बात जिसके लिए वे जाने जाते हैं, पौराणिक कथाओं के लेखक के रूप में, तो मैं बताना चाहता हूं कि, जो पुस्तक नरेन्द्र कोहली लंदन ले कर आये थे, वह है *सागर मंथन*। *सागर मंथन* अत्यंत आधुनिक उपन्यास है और आज के समय में विश्व में बदलते सांस्कृतिक परिवेश के ऊपर कोहली के अनुभवों पर आधारित है। मेरी इस पर भी उनसे बड़ी आत्मीय चर्चा हुई। पहले ही दिन जब *सागर मंथन* मेरे हाथ लगी, मैंने उसे पढ़ डाला और कोहली को थोड़ा जानने के बाद उनसे पूछा कि इस उपन्यास में बहू का जो पात्र है, यदि अंत की तरफ आते-आते ससुर को पता लगता कि वह बहू, नाम से तो अमेरिकन है परन्तु मूलतः पाकिस्तानी है तो भी क्या उपन्यास का यही अंत होता? तो वे हंसने लगे, बोले, 'नहीं, यदि तुम ऐसा समझते हो तो तुम लिखो। 'मैंने उनसे मज़ाक में कहा कि, मैं आपके इस उपन्यास से इतना प्रभावित हूं कि इसकी पटकथा से खेलना चाहता हूं, और आपकी ही विचारधारा के अनुरूप बहू के किरदार को पाकिस्तानी मूल का बनाना चाहता हूं, और यदि आप मुझे इस उपन्यास का वर्ड फॉर्मेट भेजें तो मुझे बदलने में आसानी हो जायेगी।

भारत लौटते ही कोहली ने *सागर मंथन* की वर्ड फाइल मुझे भेज दी। फिर उन्होंने मुझे फ़ोन किया कि क्या ईमेल मुझे मिल गया? उन्होंने यह भी कहा कि जब उनके उपन्यास पर मैं काम कर लूं तो उन्हें अवश्य बताऊं।

यह सारी बातें अधूरी रह गईं क्योंकि नरेन्द्र कोहली अकस्मात हमें छोड़ कर चले गए, पर जातेजाते भी वे ईमानदार लेखन का सन्देश दे गए। मैंने सीखा कि एक बड़ा लेखन करने के लिए, लेखन की मौलिकता और रचनात्मकता कितनी महत्त्वपूर्ण है, जो सिर्फ लेखन के प्रति ईमानदारी से ही आ सकती है।

डॉ पद्मेश गुप्त, ऑक्सफ़ोर्ड, यूके

बैठाएंगे पलकों पर, हिंदी, हिंदुस्तान तुम्हें

(L-R) Shelja Singh, Sushma Sethia and Preeti Mehta with Narendra Kohli and his wife Madhurima Kohli

आज इसे अपना सौभाग्य मानूं या भाग्य की विडम्बना कि जिन प्रतिभाशाली कालजयी विद्वान का लेखन लोग पढ़ने को आतुर रहते थे, आज उनके बारे में कुछ लिखने को मुझसे कहा गया है। एक ओजस्वी प्रकाश पुंज के बारे में लिखना बहुत कठिन है। अगर श्रद्धेय नरेन्द्र कोहली आज हमारे बीच होते तो शायद मैं ये साहस न जुटा पाती पर चूंकि उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व और कृतित्व से बेहद प्रभावित रही और हृदय उनके असमय और दुःखद निधन से द्रवित है इसलिए श्रद्धांजलि के रूप में आप सभी के साथ उनके सत्र और यादों की धरोहर में संज़ोई उनकी स्नेहिल छवि और बिताए कुछ आत्मीय पलों की यादें साझा कर रही हूं। शुरू करते हैं स्मृति यात्रा एक साथ।

मेरे पास ई–मेल आया कि श्री नरेन्द्र कोहली ने जोधपुर **कलम** के सत्र के लिए अपनी स्वीकृति दे दी है। नरेन्द्र कोहली... नाम सुनकर दिमाग़ में कुछ कौंधा। मेरी मां ने इनकी कृतियां पढ़ी थीं और शायद *महासमर* के बारे में चर्चा भी की थी। बहरहाल मैंने हमेशा की तरह इनके बारे में भी गूगल पर और जानकारी बटोरी और जितना पढ़ती गयी उतनी ही उनकी क़ायल होती गयी।

हमें यह हिदायत भी मिली कि मॉडरेटर सौम्य और सुलझे हुए होने चाहिए और हमारी तरफ़ से ऐसा कुछ ना हो कि कोहली साहब उत्तेजित हो जाएं। एक तो हिंदी साहित्य जगत का इतना बड़ा नाम और ऊपर से तेज मिज़ाज। घबराहट के साथ मॉडरेटर की खोज शुरू हुई और मृदुभाषी अयोध्या प्रसाद पर जाकर ख़त्म हुई। जोधपुर साहित्य जगत में कोहली साहब के आगमन की ख़बर आग की तरह फैल गयी और बहुत से लोगों के निवेदन और अनुरोध आने लगे, उनके सत्र में शरीक होने के लिए।

12 सितंबर दोपहर 2 बजे सुषमा और मैं कोहली को लेने एयरपोर्ट पहुंचे। उतरते ही सामने से वे हमें ट्रॉली ठेलते हुए मुख्य द्वार की ओर

तेज़ी से आते हुए दिखाई दिए। छोटा क़द, त्यौरियां चढ़ी हुईं पर चेहरे पर तेज। पीछे-पीछे मधुरिमाजी । हम लोग फुर्ती से उनकी तरफ़ दौड़े.... अभिवादन किया जिसका उन्होंने शुष्क भावहीन तरीक़े से जवाब दिया। हमने ट्रॉली लेने की कोशिश की तो उन्होंने हाथ के इशारे से मना कर दिया और गाड़ी तक खुद ही ठेल कर ले गए। मृदुभाषी मधुरिमाजी ने माहौल को हल्का करते हुए हमसे बातचीत जारी रखी।

होटल ताज हरी महल पहुंचकर कोहली ने सीधे अपने कमरे की चाबियां मांगी और अपने सामान के साथ उस ओर चल दिए। मैंने जल्दी से उन्हें पूछा कि कुछ अख़बार संवाददाता आपका इंटरव्यू लेना चाहते हैं तो वे बोले... शाम साढ़े चार, पांच बजे। खाना कमरे में ही भिजवा दीजिए और आप लोग भी आ जाइए। कमरे में पहुंचकर, अपना सामान व्यवस्थित करने के बाद वे आराम से बैठ गए और फिर बातों का सिलसिला शुरू हुआ... और परत दर परत कोहली का सहज सरल व्यक्तित्व भी उजागर होने लगा। कोहली अपने विचारों में बेहद स्पष्ट, भाषा में शुद्धतावादी और स्वभाव से जितने कोमल लगे, सिद्धांतों में उतने ही कठोर। बातों का दौर बहुत देर चला और जिस आत्मीयता से उन्होंने हमसे अपने जीवन से जुड़ी बातें साझा की, मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैं इतने महान व्यक्तित्व से मुखातिब हूं।

अगले दिन हम शाम चार बजे होटल पहुंचे तो कोहली साहब अयोध्या प्रसाद से वार्तालाप करते हुए मिले। धीरे-धीरे श्रोताओं की भीड़ जुटने लगी जिनमें बहुत से कोहली साहब के प्रशंसक थे। उन्होंने कोहली साहब को घेर लिया और क़रीब आधे घंटे तक उनका बातों का दौर चलता रहा। सत्र समय पर साढ़े पांच बजे शुरू हुआ। परिचय और धन्यवाद ज्ञापन मेरे ज़िम्मे था और मुझे डर था कि इतनी बड़ी शख़्सियत के परिचय में, मैं कोई भूल न कर बैठूं। अपनी ये दुविधा मैंने मधुरिमाजी के सामने भी रखी पर कार्यक्रम के अंत में जब उन्होंने मुझे यह कहकर सराहा कि तुम व्यर्थ ही घबरा रही थीं... तुमने इतना बेहतरीन बोला... तो मुझे लगा कि मैं सफल हुई।

सत्र की शुरुआत से ही आभास हो गया कि कोहली की शख़्सियत असाधारण है। उनका बेवाकपन, उच्च कोटि की बौद्धिक क्षमता, वाकचातुर्य, उपाख्यान, परिहास यहां तक कि स्वभाव की तल्ख़ी... सभी व्यक्तिगत विशेषताओं ने उस सत्र को विशेष और यादगार बना दिया। बेहद सहज सरल व्यक्तित्व और सहज सरल अभिव्यक्ति। मज़े की बात यह रही कि हम सभी ने बहुत डांट भी खायी पर किसी को भी बुरा नहीं लगा। उदाहरण के तौर पर ... सत्र के दौरान मुझे हॉल से पांच-सात मिनट के लिए बाहर जाना पड़ा। जब वापस आई तो श्रोतागण मुझे देख कर मंद मंद मुस्कुराने लगे। मैंने प्रश्नवाचक नज़रों से प्रीति और सुषमा को देखा तो प्रीति बोली तुम्हारा ही ज़िक्र हो रहा था। कह रहे थे कि शैलजाजी ने हिंदी सत्र के लिए मुझे आमंत्रित तो करा पर पत्र-व्यवहार अंग्रेज़ी में कर रही थीं। शायद उन्होंने जयपुर ऑफ़िस के पत्र व्यवहार को मेरा समझ लिया।

कलम के प्रारूप अनुसार कार्यक्रम समय सीमा के अनुसार समाप्त भी करना था। सत्र बखूबी चल रहा था और श्रोतागण कोहली के ज्ञान की गहराई और वक्तृता के वशीभूत थे। इधर हम दुविधा में थे कि कैसे समापन करें। थोड़ी हिम्मत जुटा कर मैं पोडियम पर पहुंची और करबद्ध होकर कोहली से कार्यक्रम समाप्ति की अनुमति मांगी। उन्होंने कुछ ग़ुस्से से मेरी ओर देखा और कहा कि जब यहां तक आ ही गयी हो तो अब क्या पूछ रही हो। ऐसे में मैं क्या कहूं? फिर से श्रोताओं के चेहरे पर मुस्कुराहट की लहर दौड़ गयी।

उन दो दिनों में ऐसे बहुत से वाक़िये और अनुभव हुए जिन्होंने मुझ पर गहरा प्रभाव छोड़ा। शब्द सीमा के कारण सब तो साझा नहीं कर सकती पर बहुत ही सरल शब्दों में कोहली साहब हम सभी को हिंदी के महत्त्व को समझा गए। उस दिन से मैं हर लेखक को अपना परिचय हिंदी में देती हूं और अपनी राष्ट्रभाषा का प्रयोग बेहद गर्व से करती हूं। कोहली का स्पष्टवाद, नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा, सिद्धांतवाद, हास्यव्रती और राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति समर्पण विशिष्ट था।

आज कोहली साहब हमारे बीच नहीं हैं। हिंदी साहित्य जगत में एक युग का अवसान हो गया। पर मुझे विश्वास है कि वे जहां भी हैं, वहां लोगों में हिंदी के प्रति निष्ठा और गर्व की भावना जगा रहे होंगे। ऐसे विरले कालजयी पुरुष कई सदियों में एक बार धरती पर अवतरित होते हैं और मैं स्वयं को भाग्यशाली मानती हूं की मुझे उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

किसी व्यथित मन ने उनके बारे में बहुत सटीक लिखा है

मैं महाकाव्यों का गायक, तुम नायक काव्य कथाओं के,
संवेदित अनुपम व्याख्याता संस्कृति की मनोव्यथाओं के,
रचनाएं देकर कालजयी तुम, काल बली से छले गए
राम चरित को गाते गाते, राम लोक में चले गए
भूलने कदापि नहीं देगा यह, साहित्यिक अवदान तुम्हें
बैठाएंगे पलकों पर, हिंदी, हिंदुस्तान तुम्हें।

आत्मीय और स्नेहिल पलों के लिए आभार और अंतिम नमन

शैलजा सिंह, जोधपुर

Bhogilal Patidar

राजस्थानी रंगमंच को समृद्ध करेगा *हिजरतु वन*

लोक नाट्य परंपरा को ग्रामीण कलाकारों ने न केवल जीवित रखा है बल्कि जनमानस को शिक्षित भी किया है। राजस्थानी में नाटक की लंबी परंपरा रही है। जो नाटक जनता के मन की और उनके जीवन की बात करे वही सार्थक है। यह बात **प्रभा खेतान फाउंडेशन** और ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन की ओर से आयोजित **आखर पोथी** में बागड़ क्षेत्र के बड़े साहित्यकार भोगीलाल पाटीदार के नाट्य संग्रह *हिजरतु वन* की प्रस्तावना पढ़ते हुए अतिथि वक्ता सतीश आचार्य ने कही। इस ऑनलाइन आयोजन में *हिजरतु वन* का विमोचन और चर्चा हुई। साहित्यकार एवं रंगकर्मी आचार्य ने आगे कहा कि *हिजरतु वन* में आंचलिकता की परंपरा है। शिक्षा, समाज सेवा, वन, प्रकृति सब कुछ है। लेखक पाटीदार ने जीवन के आसपास की घटनाओं का जीवंत वर्णन किया है। इन्होंने स्वयं भी रंगमंच पर कई नाटक किए हैं, भूमिका निभाई और निर्देशन भी किया है। नाटक खेलने वाला नाटक लिखता है तो पात्र सजीव हो जाते हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि यह नाटक राजस्थानी साहित्य में पूरी जगह बनाएगा।

कला समीक्षक एवं चित्रकार चेतन औदिच्य ने बीज वक्तव्य में कहा कि राजस्थानी भाषा में नाटक लेखन का काम कम है इसलिए भी पाटीदार का यह प्रयास सराहनीय है। इस का शिल्प नाटक के प्रस्तुति रूप की सब शर्तों को पूरा करता है। दृश्य का यथार्थ, संवाद का प्रवाह, नाटकीयता का बिंब, तथ्य आदि ने कलेवर को पूरी तरह से प्रभावी बनाया है। राजस्थान में जितने भी लोक और शास्त्रीय नाटक हैं, सब प्रस्तुति रूप को सबसे अधिक वरीयता देते हैं। यही कारण है कि यहां के नाटकों का लिखित रूप नहीं मिलता है। इस नाटक में ग्रामीण जन जीवन की प्रमुखता है। यहां के शहरों में भी मूल भाव ग्रामीण ही नजर आता है। *हिजरतु वन* के लेखक इसी ग्रामीण भाव बोध में आ रहे बदलाव को जबरदस्त तरीके से नाटक में लेकर आते हैं। कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या और कला ऐसी नहीं है जो नाटक में नहीं है। इस लीक को देखें तो नाटक रचना दूसरी विधाओं के मुकाबले थोड़ा कठिन काम है। मेरा मानना है कि दूसरी रचनाओं के मुकाबले नाटक, संस्कृति और भाषा का फैलाव अच्छे ढंग से करता है।

Chetan Audichya

Harish B Sharma

Pramod Sharma

Satish Acharya

इस नाटक में बागड़ी बोली के आए मुहावरे राजस्थान की भाषाई एकता को सामने लाते हैं।

लेखक पाटीदार ने कहा कि मैं बचपन से ही गांव में रहता आया हूं। खेती बाड़ी और ग्रामीण परिवेश मेरे लेखन में है। गांवों में बिजली जाने के समय लोग बाहर बैठे बातचीत करते थे और कहानियां कहते थे। इस दौरान गीत भजन भी होते थे। शुरू-शुरू में छोटी-छोटी कविताएं लिखना शुरू किया। इसके बाद कहानियां लिखना शुरू किया। मैं बचपन से ही घटता वन क्षेत्र देख रहा हूं। आधुनिकता के जमाने में गरीब अमीर की खाई, सामाजिक कुरीतियां, अंधविश्वास, घटता लिंगानुपात आदि पर लेखन किया है। इस नाटक संग्रह *हिजरतु वन* के लेखन का मुख्य उद्देश्य यही है कि लोगों में जागरूकता आए और लोग पेड़ों की पीड़ा जानें और पर्यावरण के प्रति अधिक संवेदनशील बनें।

साहित्यकार एवं रंगकर्मी हरीश बी. शर्मा ने कहा कि पाटीदार का नाटक *हिजरतु वन* राजस्थानी रंगमंच की समृद्ध परंपरा में मोती जैसा दमक रहा है। नाटक की पूर्णता का पैमाना मंच होता है। हालांकि पुस्तक में कहीं भी इस नाटक के मंचन का उल्लेख नहीं है। पर इस नाटक की परफेक्ट स्क्रिप्ट से इसमें मंचीय संभावना है। यह नाटक कम संसाधनों में खेले जा सकते हैं और मनोरंजन के साथ-साथ संदेश भी दे सकते हैं। *हिजरतु वन* के नाटक आज की पीढ़ी को रंगमंच से जोड़ने की मजबूत कड़ी साबित हो सकते हैं। अध्यक्षता कर रहे वरिष्ठ साहित्यकार कुंदन माली ने कहा कि ऐसे जटिल समय में राजस्थानी नाटक का छपना आनंद और आश्चर्य की बात है। बागड़ के छोटे से इलाके में समाज की चिंता लिए राजस्थानी नाटक संग्रह का छपना राजस्थान के बड़े शहरों में नाटक लेखन की प्रेरणा दे सकता है। पाटीदार के नाटक एकांकी जैसे हैं। इन एकांकियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये मंचीयता से भरपूर हैं और पठनीयता का गुण भी लक्षित किया जा सकता है। अंत में ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन के प्रमोद शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रभा खेतान फाउंडेशन और ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन की ओर से आयोजित आखर पोथी राजस्थान के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट, हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हैं आईटीसी राजपूताना।

Only Fact, No Fiction

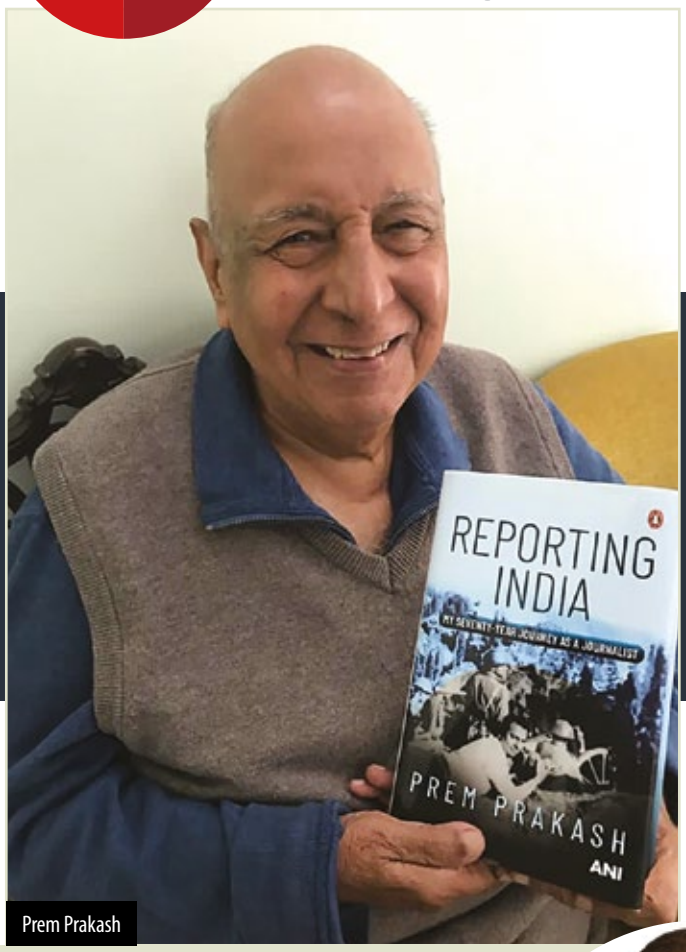

Prem Prakash

Ben Edwards

Myron Belkind

Randhir Jaiswal

Kitaab, a **Prabha Khaitan Foundation** initiative, hosted the virtual book launch of veteran journalist Prem Prakash's *Reporting India: My Seventy-year Journey as a Journalist*. The conversation was hosted by Anoop Bhargava, the founder of Jhilmil, and facilitated by Myron Belkind and Ben Edwards, who have both worked as journalists with Prakash. Prakash's memoir was launched by the Consul-General of India in New York, Randhir Jaiswal, who noted with interest that he happened to be an alumnus of the same college as Prakash — Hindu College — albeit separated by 40 years.

Jaiswal described Prakash's book as enriching and thought-provoking in its narrative of India's political milestones. Jaiswal went on to explain that when he had joined the Indian Foreign Service, he had been given a long reading list which focused on South Asian political history, so that civil servants could build a foundational understanding of India's post-Independence relationship with its neighbours. Jaiswal recognised that *Reporting India* explored the depths of these relationships from the perspective of a veteran journalist who has seen it all. Later in the discussion Belkind also agreed that Prakash's book could certainly serve as essential reading for historians, diplomats and journalists, as it tells the story of the building of the nation since Independence. The book contains a detailed analysis of the work of different prime ministers and leaders who have been at the helm of governance.

Once the book was unveiled by Jaiswal, the conversation was steered by Belkind and Edwards. While Edwards has moved from journalism to running a consultancy in management and leadership, Belkind has spent decades as an Associated Press foreign correspondent and bureau chief in New Delhi, London

Aakriti Periwal

Anoop Bhargava

Thomnas Abraham

and Tokyo. He has known Prakash since 1966 and is currently a lecturer in the School of Media and Public Affairs at George Washington University. He served as chairman of the International Correspondents' Committee at the National Press Club from 2005 to 2013 and was also president of the National Press Club in the US in 2014.

"Mankind has always sought information, and that's where journalism begins," said Prakash, who is now the chairman of the multimedia news agency, ANI (Asian News International). He was born in Rawalpindi, now in Pakistan, and grew up in Chandni Chowk, Delhi. He recollected how the summer of 1946 in Delhi was a strangely deserted time, and yet, because the British were in such a tearing hurry to exit, selling their businesses for a lark, many Indians were able to take advantage of it. "After 1947, the opportunity to do whatever you wanted was so much… I decided to move to journalism," said Prakash.

He insisted that there will always be a future for journalists because people will always need information. He agreed that the medium via which this information could be imparted is fast changing, what with all the websites cropping up. For his American audience he explained that Indian newspapers, despite all the competition from television, were running very successfully and the newspapers printed in regional languages were doing especially well. He recognised that one of the disadvantages of the demands of live coverage online was that one did not really have time to edit information and reporters would have to be quick on the uptake to not miss anything.

When asked what advice he might have for budding journalists, Prakash said, "To be successful, you must go into the field and make sure your sources are correct. If you're in Editorial, then you can give your opinion, but if you are in reporting, stick to reporting." That the duty of a journalist is to present facts, which are not coloured by one's own ideas or emotion, is a stance Prakash maintained throughout the conversation.

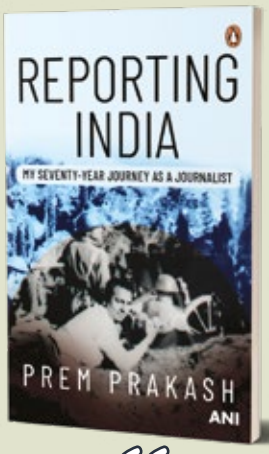

> "To be successful, you must go into the field and make sure your sources are correct. If you're in Editorial, then you can give your opinion, but if you are in reporting, stick to reporting"

Prakash's *Reporting India* traces his illustrious career, both as a photographer as well as a columnist. Having covered major world events, including natural calamities, wars and insurgencies, Prakash is no stranger to the dangers of the job. And yet, he chose to report from the heart of the strife in East Pakistan in 1971, instead of from the comfort of The Great Eastern Hotel in Calcutta. Despite many near-death encounters, all of which has been described vividly in the book, he has lived to tell the tale, and is in fact, approaching his 90th birthday in August.

Prakash has covered most of the defining moments in India's history of nation building, such as the 1962 India-China war, the assassination of Indira Gandhi, and Lal Bahadur Shastri's fateful Tashkent journey. He traces India's political journey right from Jawaharlal Nehru's demise to Narendra Modi's rise. "India is moving ahead. We have come a long way and we will move further," was his firm opinion.

He was also optimistic about India's relations with the United States. He commended the fact that despite all the ups and downs, the two countries have moved into a strategic relationship in defence, given how the Chinese are eyeing the Pacific. In fact, in his assessment, the only reason China happened to be ahead of India's economy was because "a communist country adopted a capitalist economy and a capitalist country adopted Fabian socialism. Else, we could have also been well ahead of China!"

And yet, even after having seen the world change in so many ways, Prakash's impossibly simple life advice to his audience was, "Live your life fully."

Kitaab New York is presented in association with Jhilmil, The Global Organization of People with Indian Origin and Consulate General of India

Writing is Like Building a House in Sri Lanka — Ashok Ferrey

Ashok Ferrey

Anita Nair

An unmarriageable man sat eating wasps, leaving everyone with much food for thought! Curious? Well, read on.

Ashok Ferrey, who is a celebrated writer among many other things, was in conversation with fellow writer Anita Nair, of *Eating Wasps* fame, at the latest edition of **The Universe Writes**.

Ferrey has just released a new book, *The Unmarriageable Man*, which led Nair to dive into his inspiration for the book and subsequently his past. Both of them were welcomed to the conversation by Urvi Bhuwania.

Ferrey is a best-selling Sri Lankan author, apart from being an illustrator, a builder and a personal trainer. Four of his books have been nominated for Sri Lanka's Gratiaen Prize, and one for its state literary award. *The Ceaseless Chatter of Demons* was longlisted for the prestigious DSC Prize for South Asian Literature.

The Unmarriageable Man is about Sanjay, who breaks away from his beliefs and ideologies to find his true self after the death of his father. Heavily shaped by Ferrey's own formative years spent as a builder in London, this book can be categorised as a "bildungsroman", or a coming-of-age story. Ferrey worked in construction for many years in London, much to his parents' dismay. He was in Princeton at the time, which back then was a predominantly Black area. The people living there were migrating, which created a lot of jobs in real estate; which is what inspired him to set the story in London, Ferrey said.

The writer confessed that this book was one of his hardest projects. It seemed easy initially, as he was drawing from personal experiences. However, he always had to mind the thin line that stops an author from delving so deep into narration that he loses himself in it.

It is important to distance oneself from one's work, no matter how many personal experiences are involved in the story, to stop it from becoming a memoir of misery, he pointed out. Another aspect that made this book difficult was the fact that he was writing about people known to him and there are a lot of pitfalls when you write about people you know. It is very easy to offend someone or a group of people through one's narration or even end up giving a wrong idea of a person to the audience. The biggest example being Sanjay's father in *The Unmarriageable Man*, who was a monster, but in real life, Ferrey's father was a lovely man. His grief at his father's passing, though, was a very real emotion that shaped the writing of this book, he revealed.

Nair said that while it could have easily become a misery memoir, it retained "a lightness of touch", which deepened its sense of grief even more. She added that she always got a sense of restoration from this book because of the various layers in it. Each reading of the book brings out a different meaning, she said.

The conversation touched upon Ferrey's several talents, and how he manages to pursue them all. He said the key element was to not get the layers mixed up, and keep them all satiated. All the layers combine to make the person that he is, yet keeping them separate is important.

The Universe Writes is presented by Shree Cement Ltd, in association with Siyahi

Demolishing the Taboo Around Mental Illness

Shubha Menon

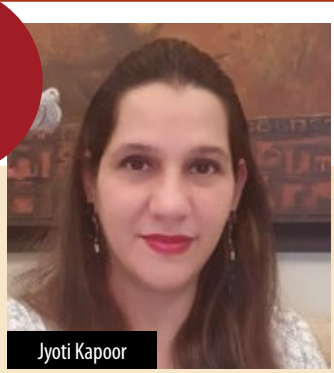
Jyoti Kapoor

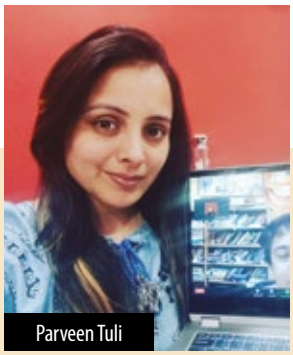
Parveen Tuli

Priyanka Kothari

A story can either be one which helps us escape into a land of imagination or can resonate with our reality. Shubha Menon is one of those authors who believes in portraying the reality of a situation through her words to shine the spotlight on certains truths of our society, which more often than not go unnoticed.

Formerly a copywriter for the advertising major, Ogilvy, Menon is today not only a well-known author but also a life coach and writing coach. She is also a mental health advocate and a peer support specialist certified by DBSA (Depression and Bipolar Support Alliance), USA.

Menon's first book, *The Second Coming*, is a romantic comedy based on "real-life overweight middle-aged women stuck in unhappy marriages". She took a different narrative turn with her second one, *Resilience — Stories of Muslim Women*, which ventured into the mid-life crises and mental health of Muslim women.

The Write Circle Nagpur saw Menon in conversation with Jyoti Kapoor, **Ehsaas** Woman of Nagpur.

The session started with Menon talking about how she shifted from advertising to writing. She talked about overhearing conversations between urban, married, working women about their desire to be with people besides their respective husbands because of the lack of romance in their relationship.

"Maybe these women never went ahead and had affairs but the desire was certainly there. I knew that I had to write this out and explore it thoroughly, as such a topic had never been covered before because of its taboo in Indian society" Menon said. This eventually gave birth to her first book, *The Second Coming*, and caused an unforeseen yet organic shift in Menon's life.

Kapoor wanted to know why Menon shifted genres with her second book. Menon said that the basic difference lay in the fact that the first book was written on a whim and the second one was based on social issues.

In a refreshing departure from stereotypical portrayals of Muslim women, their helplessness and ignorance, *Resilience — Stories of Muslim Women* explores the lives of 11 women who fought against all odds to shine, once they got the opportunity to study in a tiny adult education centre.

Menon shared how her mother lived with severe bipolar disorder; later she too was diagnosed with the same. "When I came to know I suffer from bipolar, that's when I realised and understood my mother's agony" she said.

The taboo around bipolar disorder really disturbed her. "Bipolar, or for that matter any mental illness, should not be treated as a dirty secret. Being a writer, I felt the responsibility to remove the stigma around mental illnesses. So I decided to write about it," she said. Her upcoming book, *Jump*, deals with this issue. She shared that writing this book served as a vent for her feelings and as a ray of hope.

The session concluded with Menon's inspiring words, "Ideas are everywhere". She urged the audience to keep looking at the most mundane things like reading a newspaper and the moment something looks interesting, that is the moment to strike.

The Write Circle Nagpur is presented by Shree Cement Ltd, in association with Lokmat, *Radisson Blu Nagpur and Ehsaas Women of Nagpur*

विश्वास और प्रेम के माहौल में ही कविता का बुद्धत्व खिलता है: अनामिका

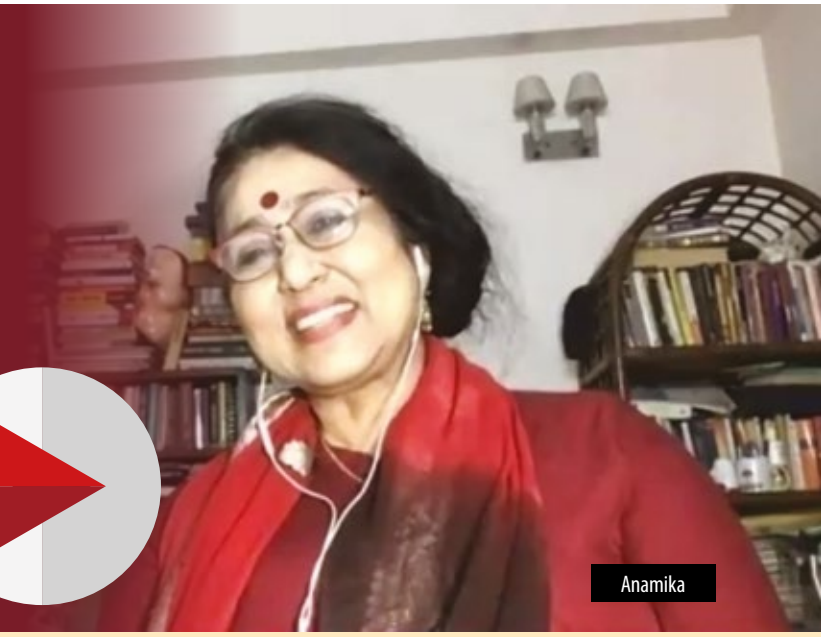
Anamika

हमारे जीवन में एक तलाश होती है, स्थायित्व व विश्वास की। हर पिता अपनी बेटी के मन में यह भाव भरता है। इस चलंत दुनिया में थोड़ा भी पढ़ा–लिखा जनतांत्रिक सोच वाला पिता यही करता है। दो तरह के पिता होते हैं। एक पितृसत्तात्मक, सामंतवादी आचरण वाले पिता, दूसरे बहुत हंसमुख व बेटियों पर विश्वास करने वाले। मेरा सौभाग्य था कि मुझे दूसरी तरह के नेक पिता मिले।" यह कहना है साहित्य अकादेमी सम्मान विजेता पहली कवयित्री अनामिका का। आप **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **कलम** इंदौर के उद्घाटन सत्र में बतौर अतिथि वक्ता संवाद कर रही थीं।

Jyoti Kapoor

कार्यक्रम के आरंभ में अपरा कुच्छल ने अतिथि वक्ता, फाउंडेशन और **अहसास** वूमेन की गतिविधियों का विस्तार से परिचय दिया। आपने बताया कि अब तक हजार से अधिक कार्यक्रम व देश–दुनिया के तीस से अधिक शहरों में हमारी उपस्थिति है। कला, संस्कृति, साहित्य, महिला सशक्तीकरण और समाज सेवा से जुड़े कार्यक्रम कोरोना काल में भी वर्चुअल जारी हैं। हाल ही में **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की अपनी वेबसाइट का उद्घाटन केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने और **अहसास** वूमेन वेबसाइट का उद्घाटन पद्म विभूषण नृत्यांगना सोनल मानसिंह ने किया है। इस अवसर पर फाउंडेशन की गतिविधियों पर एक वीडियो भी दिखाया गया, जिसमें भारतीय संस्कृति से जुड़े महान संगीतज्ञों की धुन व गायन का प्रयोग हुआ है। अतिथि वक्ता अनामिका का स्वागत व धन्यवाद न्यूयॉर्क से शामिल हुई उन्नति सिंह ने किया और संवाद का दायित्व ज्योति कपूर ने निभाया।

कपूर ने पहला सवाल किया कि आपके पिता कवि रहे हैं। आप खुद कवि, आलोचक, उपन्यासकार हैं। औरतें आपकी कलम के केंद्र में हमेशा रहीं? आपके लेखन की शुरुआत कब हुई? अनामिका ने कहा, "आज भरोसे का संकट है। मैं एक छोटे गांव से दिल्ली विश्वविद्यालय में जब पढ़ने आई तो यहां हॉस्टल में मेरे बगल वाले कमरे में एक लड़की ने आत्महत्या कर लिया। मैं जब गांव गई तो पिताजी से चर्चा किया। बचपन से पिताजी एक श्लोक सुनाते थे, जिसका अर्थ है– जिसने भरोसा कर लिया, उससे छल करने में कौन सी बहादुरी, कैसी बुद्धिमत्ता। इसी तरह जो बच्चा गोदी में आकर सो गया, उसका गला दबाकर मारने में कौन सी बहादुरी। हम अपने जीवन में भी यही चाहते हैं कि हमारा जो नवल पुरुष हो वह सद्यः पिता बने। मैं अपने बच्चों से अपने छात्रों से भी यही कहती हूं कि ऐसे हंसमुख पिता बनो जैसे बच्चा मां से सब कुछ कह देता है।"

अनामिका ने कहा, "कवि हम सबके भीतर है। विश्वास और प्रेम के माहौल में ही उसका बुद्धत्व खिलता है। हमारी समवय स्त्रियों को ऐसे पिता अवश्य मिले होंगे।" उन्होंने अपनी कविता *'हवा महल'* सुनाई:

कैलेण्डर में मैंने देखा था हवामहल
सौ खिड़कियों वाला, उत्तुंग सा, जोगिया
लघिमा वाशिमा महिमा वगैरह–वगैरह
आठ सिद्धियां साधे योगी सात आसमानों में उड़ने को बिल्कुल तैयार!
जितने भी सुंदर कैलेण्डर होते थे,
बिस्तर के नीचे तहा कर रख देती मां,
जब घर में आतीं किताबें नयी
जिल्द चढ़ायी जाती उनकी ही!
जिल्द चढ़ाने के उस अभियान में शामिल होते हम
नये योद्धाओं के जोशोखरोश से
गोंद की शीशी, स्केल और कैंची
गदा की तरह धारे
पापा को घेर बैठते !
खासे मजाकिया थे पापा....

Shruti Agarwal

Unnati Singh

पहली कविता क्या थी? का उत्तर था कि पिता कहानियां सुनाते थे और अंताक्षरी खेलते थे। हम लुकाछिपी खेलते थे। समस्यापूर्ति का खेल। मैं उसी दौरान कविता लिखने लगी। शब्दों की अंताक्षरी में बात अधूरी रह जाने के बाद कविता, कथा माध्यम बने। औरतों के मुद्दे को क्यों चुना? पर अनामिका ने कहा, "हम जिस पीढ़ी के लोग हैं, आज भी किसी पुरुष को मित्र कहने में दस बार सोचते हैं। हम अंतरंग बातें सिर्फ औरतों से कह पाते हैं। मेरी मां पढ़ाती थीं, तो ढेरों महिलाएं उनसे अपनी बात कहती थीं...सच कहूं तो मीरा के प्रेम बेल की तरह हमारा बहनापा होता है। इस दुनिया में दुख बहुत ज्यादा है। भ्रूण हत्या, मारपीट, गालीगलौज, बलात्कार, वेश्यावृत्ति, प्रेमहीन विवाह बंधन...स्त्री को इतने कोमल मन व शरीर पर इतने तरह का अनाचार व कठोरता सहनी पड़ती है। मैं तो कहती हूं, मैं अंधा कुआं हूं, जिसके भीतर परछाइयां रहती हैं। पुरुषों से हम संवाद करना चाहते हैं। पर अगर आप अति लोभी, कामुक बनकर स्त्री के पास आएंगे, तो उससे प्यार कैसे पाएंगे। लड़कियां श्रद्धा और प्रेम चाहती हैं। पर लड़की के लायक पुरुष भी तो होना चाहिए। हम ममता लुटा सकते हैं। हमारा यह सारा विमर्श पुरुष को प्रेम के लायक बनाने के लिए है।"

Apra Kuchhal

कविता और स्त्री को समान बताते हुए अनामिका ने कहा कि कविता का स्वभाव औरत के स्वभाव जैसा होता है। वह कम बोलती है, पर आपको उसके इशारे समझने लायक तो होना चाहिए। आप ममता और प्रेम से धीरे-धीरे परतें खोलिए, दोस्ती का नाता बनाइए। उसकी स्मृतियों में जाइए, उसके सामने जाइए। धीरे-धीरे घूंघट उठाइए, तो उसका सौंदर्य समझ पाएंगे। उन्होंने कहा कि विश्वयुद्ध के बाद इतनी हिंसा थी कि कला व कविता ने जोड़ना शुरू किया। अनामिका ने एक और कविता सुनाईः

मैं एक दरवाज़ा थी
मुझे जितना पीटा गया
मैं उतना ही खुलती गई।
अंदर आए आने वाले तो देखा-
चल रहा है एक वृहत्चक्र-
चक्की रुकती है तो चरखा चलता है
चरखा रुकता है तो चलती है कैंची-सुई
गरज यह कि चलता ही रहता है
अनवरत कुछ-कुछ!...

पत्थर जो पानी पीता है, के सवाल पर अनामिका ने कहा कि ओएनजीसी में लोग कहते हैं, पत्थर के कलेजे में भी तेल का सोता होता है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होता जिसके अंदर स्नेह का स्रोत न हो। हर चेहरा किसी न किसी एंगल से सुंदर है और किसी न किसी रूप से अपरूप है। आप अगर सही एंगल से देखेंगे तो आपको संभावना दिखेगी। आदमी के हृदय में मनुष्यत्व है। दुनिया का सारा विमर्श इसी को जानने का है। दर्पण की तरह बनिए, जिसकी मेमोरी में कुछ नहीं होता। जानना ही मानना है। साहित्य जानने का एक माध्यम है। इसमें अंतरंग संसार खुल जाता है।

रूसी और अंग्रेजी में अनुवाद पर अनामिका ने कहा कि हमारे दौर में रीडिंग क्लब बनते थे। मोबाइल वैन चलती थी, तो किताबें एक-दूसरे पर गिर जाती थीं। रूस का साहित्य दोस्तोवस्की, तोलस्तोय आकर्षित करते थे। वहां का जीवन व कथा अपने जैसे लगते थे। नई पीढ़ी में क्या बदलाव देखती हैं? पर अनामिका का उत्तर था कि आज के बच्चे जानते हैं कि हमें घुड़दौड़ का घोड़ा नहीं बनना। वे अब सहकारिता के साथ चलने की बात करते हैं। सबके भीतर एक प्यार करने वाला तत्व बढ़ा है। जिसमें जो है उसमें सहकारिता के भाव से आगे बढ़े। अब समूचा विश्व ही एक सीमा है। अब लड़के-लड़कियों में संबंध बदले हैं। पहले संबंध टूटते थे, तो टूटते थे। अब सोचते हैं कि काहे को थूकमफजीहत। शिक्षित मध्यवर्ग में यह सोच बढ़ी है। जनतांत्रिक चेतना पहले से गहरी हुई है। अब अलग देश व जाति से भी लोग परिवारों में आ रहे हैं।

सवाल-जवाब के सत्र में उन्होंने विमर्श परक संवाद पर बल दिया। कहा हमें बहुत धीरज से बात सुननी चाहिए। फिर बहुत विनय से अपनी बात कहनी चाहिए। जैसे खौलते पानी में चेहरा नहीं दिखता वैसे ही धैर्य से शांति से पाने के स्थिर होने का इंतजार करना चाहिए। महिला लेखन पुरुष के लेखन से अलग कैसे हैं? पर अनामिका ने कहा कि दोनों कि अनूभूति अलग है। हमारी भाषा अंतरंग भाषा है। मातृत्व के अनुभव, शैली अलग हैं। संवादपरक हैं।

कलम इंदौर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। मीडिया पार्टनर नई दुनिया और अहसास वूमेन का सहयोग मिला।

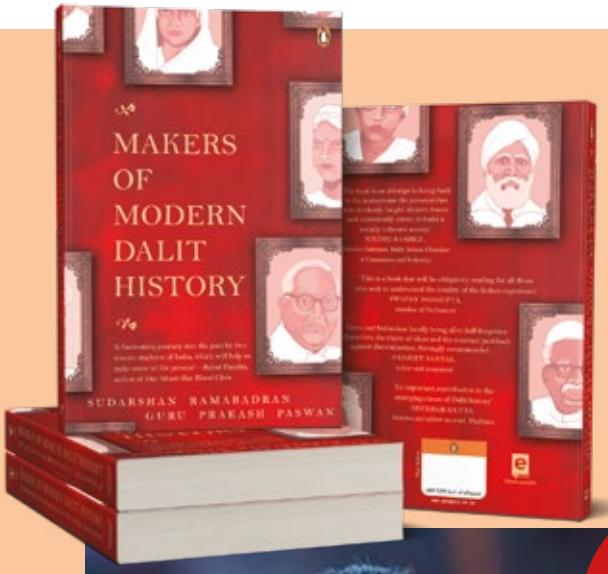

What it Means to be Dalit in India

The term "Dalit" has been a contentious part of India's political and cultural vocabulary for decades. Used to designate those at the bottom of the caste hierarchy in India, it is a word that has come to mean a lot of things: the struggle of the underprivileged against systemic prejudice, the appropriation of the downtrodden for political opportunism, the championing of, and by, a set of people for genuine social advancement and progress.

Notwithstanding these multiple connotations of what it means to be Dalit, more often than not the history of Dalits in India has assumed a cyclical pattern, one which keeps revolving between hope and despair, with very little scope for a permanent escape from the clutches of casteism.

In order to tackle these thorny issues and provide a clear and powerful explanation of the status of Dalits in India, **Kitaab**, an initiative of **Prabha Khaitan Foundation**, hosted Guru Prakash Paswan and Sudarshan Ramabadran, authors of the book *The Makers of Modern Dalit History*.

As part of the evening's proceedings, Paswan and Ramabadran's book was officially launched, with a sense of providential timing, as it happened to take place on the birth anniversary of Baba Saheb Ambedkar, arguably the most important Dalit personality in the history of India.

Paswan, an alumnus of the National Law Institute University in Bhopal, is a national spokesperson of the Bharatiya Janata Party and an assistant professor of law at Patna University. He is also an adviser to the Dalit Indian Chamber of Commerce and Industry.

Ramabadran is a writer and columnist who is an alumnus of Chennai's Vivekananda College and Asian College of Journalism. He is the founder of the Tamil Nadu Young Thinkers Forum. He has worked with the

Marya Shakil

Makarand Paranjape

New Indian Express in Chennai besides being a member of the department of information for the government of Gujarat.

Paswan and Ramabadran were joined in conversation by Narendra Jadhav, a Member of Parliament from the Rajya Sabha; Makarand Paranjape, director of Indian Institute of Advanced Study (IIAS), Shimla; and Meira Kumar, a former diplomat, member of the Indian National Congress (INC) and the 15th Speaker of the Lok Sabha.

The session was moderated by Marya Shakil, a television journalist and political editor of *News 18*.

The panelists were welcomed to the discussion by Archana Dalmia, **Ehsaas** Woman of Delhi.

Shakil got the interaction underway by reflecting on how the book is not an academic exercise but a quest involving two friends whose disagreements and discussions have led to the eventual compilation of the text. Shakil added that the book chronicles the isolation, the acceptance as well as the assertion of the Dalit community in India.

Paswan said that the book was written not to stir up a revolution, but to provide representation. "The young Dalits think of representation at the crucial decision-making positions. Over the course of the last seven decades, we have seen that there has been no Dalit occupying the position of a Cabinet secretary. The fact of the matter is that we are not having enough conversations about all this, about caste issues," observed Paswan.

Ramabadran, who hails from Tamil Nadu, recounted how he had been witness to many social movements battling for the cause of the oppressed back in his home state and that these experiences had made him sensitive to the cause of Dalits and their fight for equality. Ramabadran also delved into the genesis of the book by talking about how "in 2016 we (Paswan and Ramabadran) had written an article on Ambedkar and the positive response to the article prompted us to write a series of pieces on similar subaltern achievers. This is how the book was born and we are also looking forward to writing a second part."

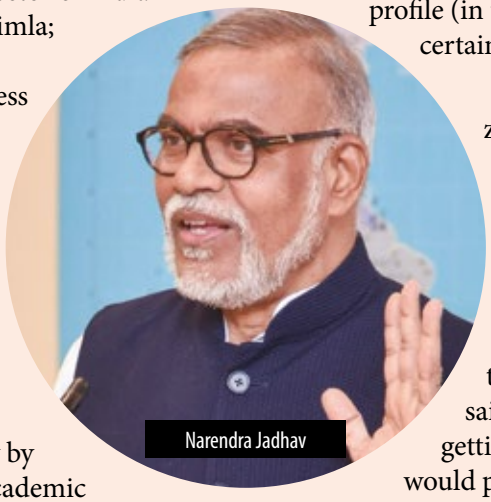
Narendra Jadhav

Jadhav lavished praise on the book, remarking how "there are few books which are as thought-provoking." However, he did mention two names of Dalit changemakers that he found to be conspicuous by their absence in the book — Chandra Bhan Prasad and Suraj Yengde. Specifically on Ambedkar, Jadhav noted that "no matter what is written about his contribution it will always be inadequate. There are many errors of omission and commission…[but] I have gone through Ambedkar's profile (in the book) very closely and it is certainly one of the most important ones."

Paranjape broadened the discussion, zooming out from the book towards the caste system in general, stating how he felt that instead of abolishing the caste system — which could lead to anarchy — amalgamation of castes is a better alternative. "Nobody would willingly give up the tag that gives them empowerment," said Paranjape reiterating his point that getting rid of the caste system altogether would provoke a backlash. Rather, argued Paranjape, a new form of identity could be created that judged people not on their background, but on the basis of their work, character, and ethics.

Finally, Kumar's insights began with highlighting the double burden of Dalit women, who are discimrinated against for being women as well as Dalits. Kumar went on to share a personal anecdote about her mother to amplify her point. "My mother was not allowed to sit at a dining table while she was in a hostel. She had to sit outside, on the floor. Yet, she continued with her studies. She faced the onslaught and humiliation, but look at her determination," said Kumar.

Kumar also explained how the concept of karma has often been used to undermine Dalits and keep them under the thumb of the upper castes. Calling for such notions to be eliminated, Kumar agreed with Paranjape that "everyone should be judged on the basis of their achievement and character and not the circumstances of their birth."

This session of Kitaab is presented by Shree Cement Ltd, in association with Penguin Books

Lovemaking: A Lost Art Form

Seema Anand

Shruti Mittal

She is a mythologist, storyteller and a holistic lifestyle coach. An authority on the *Kama Sutra*, she lectures on tantric philosophy, the Mahavidyas, the *Mahabharata* and the *Bhagavad Gita*, amongst others. Her work on the revival and reproduction of oral literature from India is associated with the UNESCO project for Endangered Oral Traditions. Seema Anand was part of a candid discussion on Indian mythology and female sexuality at a virtual session of **The Write Circle** Faridabad and Meerut. Welcoming everyone to the conversation was **Ehsaas** Woman of Faridabad, Shweta Aggarwal, while **Ehsaas** Woman of Bengaluru, Shruti Mittal, steered the conversation, encouraging Anand to bust all the myths about Indian mythology.

Growing up in India, Anand had studied only Western authors and found herself drawn to European mythology. As part of a fellowship programme in Europe, she worked as a tour guide, educating Indian tourists about European history. It was only later, after moving to London and becoming a mother, that she discovered Indian mythology and its unexplored depths. She developed a keen interest in how women are depicted in different stories and how the stories we tell define who we are. For instance, it is a common theme in stories for the man to come home and assault the woman. Of course, she never says anything to him, in order to preserve the respect and reputation of the family. "We automatically define a good woman to be somebody who never speaks up. And the woman who speaks up and fights back is not a good woman," pointed out Anand. Gradually, she started to realise that stories where a woman has a right to her own body were

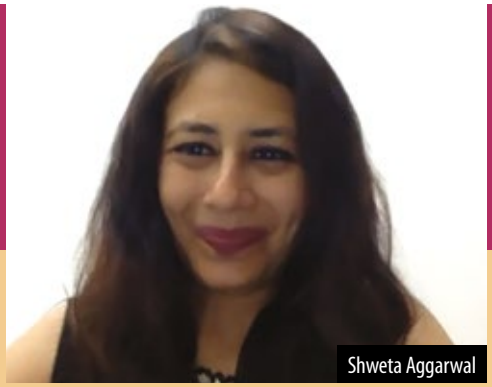

Shweta Aggarwal

Anshu Mehra

rare, and that it was far more common for a woman's sexuality to be portrayed as somebody else's property. She then went looking for the *Kama Sutras*, to dig out the stories that have been silenced. "I cannot tell you how beautiful the *Kama Sutras* are. I am so sad that these have been silenced because there is nothing in world literature that you can find to compare with this."

Anand went on to reveal that although other ancient cultures have discussed the art of lovemaking, it has been done from the point of view of the male gaze and the man's pleasure. The *Kama Sutra* had Anand hooked because it focuses on female pleasure. Two thousand years ago, the text was written for men, with the message that a woman's pleasure was most important; implying that it was the man's failure if the woman lost interest. The script compared a man's pleasure to fire — as easy to ignite as it is to put out. But it compared a woman's pleasure to water — it takes long to come to a boil and then takes long to cool down. And while texts from other cultures uses aggressive language to describe an erotic act, the *Kama Sutra* uses beautiful metaphors to refer to parts of the body, as well as various sexual positions.

> I cannot tell you how beautiful the *Kama Sutras* are. I am so sad that these have been silenced because there is nothing in world literature that you can find to compare with this

"In ancient Indian literature, *kama* or love was not a separate thing, it was so much a part of your life that literature, art, music... everything was connected," explained Anand. The month of Chaitra for instance, is the month of spring and spring festivals, which makes it all about raising the energy of the earth and getting Mother Earth to blossom again. Ancient Indian texts described 30 festivals of love during Chaitra, and yet none of them are talked about anymore. Anand conjectured that since there were no pujas involved, the Brahmins had little to gain from the translation of these segments. After all, the celebrations were mostly conducted by women in the form of dances and picnics. For example, it was said that certain trees would blossom only if they received affection from women.

"These are texts of such beauty that we need to revive them. The next generation is losing out because they don't know about it. It is up to us Indians to bring it back," was Anand's plea. The 58-year-old was afraid that India is less liberal now than it used to be when she was growing up. In fact, she credits her own confidence to the fearless women who brought her up. The women in Anand's family have always been stalwarts of courage and independence. Her great-grandmother was an inspector of schools, her grandmother studied psychology, while her role model was a grandaunt who was a gynaecologist, unafraid to perform "illegal abortions". When she was pregnant, her mother divorced her father for daring to raise his hand on her. Anand grew up around a group of strong-willed, working women, brimming with love. She said, "There is so much more to a woman's identity than just that little box you get put into."

Anand described vividly various customs and rituals involved with the ancient art of lovemaking, and expressed sorrow at all the "Prakrit literature" India has lost, which was written in the 1800s, inspired by the *Kama Sutra*. Anecdotes from the texts that Anand has had the privilege of reading speaks of a society unfettered by taboo and unafraid to love or express passion. Anand ended with a direct appeal to the members of **Prabha Khaitan Foundation**, urging them to recognise that change lay in their hands, and if they want a different world for their children, they would have to spark the change.

The Write Circle Faridabad and Meerut is presented by Shree Cement Ltd, in association with Dainik Jagran, *Humane Foundation, Hotel Crystal Palace and Ehsaas Women of Faridabad and Meerut*

The Collective Wisdom of our Stories

Every human being has a story to tell. If given a chance, one will notice that every single story is different from the other and will teach us something new. This is the concept that led to the birth of Project Fuel. Deepak Ramola was just 17 when he started on this initiative that takes life lessons from people and turns them into stories, performance pieces and interactive discussions. The aim of this initiative is to document human experiences and design human wisdom. Besides being the artistic director of Project Fuel, Ramola also serves as the Kindness Ambassador for UNESCO MGIEP.

The Write Circle organised a virtual session in Raipur with the poet and life skill educator. In conversation with Ramola was Vibhuti Duggar, author and founder of Project Purpose. They were welcomed by **Ehsaas** Woman of Raipur, Kalpana Chaudhary.

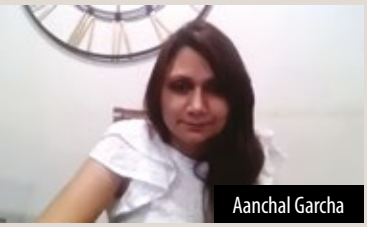

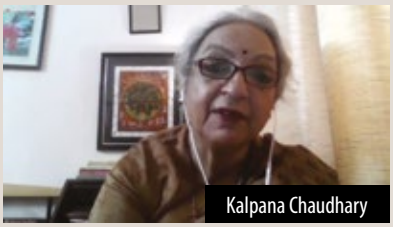

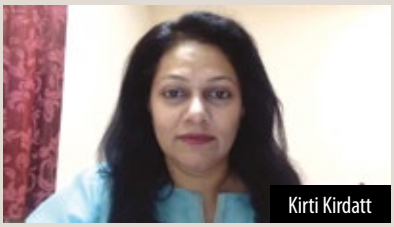

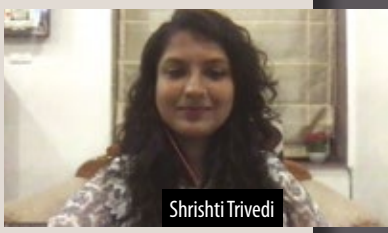

Ramola said that one's life is a culmination of the journey and successes of their ancestors. The journey of the last name or the family name is a collection of all the journeys of the family. However, the journey of the first name is of the self, and how one gives it credence. So, his story began even before his idea was conceived, with his family name. But what he makes of his journey as 'Deepak' is strictly his own and begins with him.

He said that his mother is one of the smartest people he knows. She took care of the finances at home and also joked about how she won all arguments with his father. This made it all the more difficult for Ramola to believe that she was pulled out of school at a young age. It baffled him how a person who didn't finish school could be so smart. His mother would often tell him that her life had been her classroom and all that she had learnt was by being observant of her surroundings. This meant that she was learning through living, which signalled that everyone who was living was learning, and he wanted to access that information.

"If we could package people's wisdom into tablets and pop them as pills, how much wiser we all would be," Ramola smiled. This inspired him at a very young age to talk to different people and listen to their stories and turn it into a form accessible to everyone.

Ramola has serious issues with the way the phrase "Jack of all trades, master of none" is used. He feels that it is used to limit a person from trying out different things and gaining knowledge. A person should never be told to limit themselves as that often leads to adverse effects.

Ramola spoke about the immense pressure put on children to go into "good" schools. "The school does not churn out successful students, students make the name of the school", he pointed out. He firmly believes that parents should stop pressuring their children and pre-deciding their career paths. The role of a parent or teacher is to guide and support, not curb their dreams.

The session concluded with Ramola saying that if somebody is just waiting for something to happen, nothing is going to happen. "One should never give up hope but keep learning through their everyday life. If one wants to achieve something great, one needs to put in the work for it."

The Write Circle Raipur is presented by Shree Cement Ltd in association with Hyatt Raipur *and Ehsaas Women of Raipur*

'The Path of Poetry is not a Bed of Roses' — Srijato

It is believed that poetry is for the soul. It transcends the shackles of time and language and touches the lives of people. Poetry isn't meant to be just read, it is meant to be felt, and thus language is never a barrier. Keeping this in mind, **Prabha Khaitan Foundation** has embarked on a journey to celebrate regional Indian literature under its **Aakhar** initiative. The Foundation held a virtual session with celebrated Bengali poet Srijato, in conversation with Bengali theatre personality Soumitra Mitra and moderated by Rini Biswas.

Remarking on the mayhem that has engulfed our everyday lives during the pandemic, Srijato said that every generation since the beginning of time has tackled death and violence in their own way — be it the battle of Troy or that of Kurukshetra. This pandemic has hit almost every person in some shape or form, including the poet. The irreplaceable void that Bengali literature suffered with the demise of veteran poet Shankha Ghosh has also robbed Srijato of one of his father figures, causing an inexplicable loss, he said. An emotional Mitra shared a beautiful memory about their last meeting with the legend on his birthday. Srijato honoured Ghosh by reading out his poem, *Matite Boshano Jala*.

The uncompromising poet is never afraid to take risks. He chooses to ignore online trolls and intolerance that social media sometimes fosters. "Attacks in all forms, be it social or political, are a part and parcel of an artist's life. We need to live with it. There is no promise of the profession being a bed of roses," he declared. Having said this, the poet firmly asserted that he does not let trolls affect his work and that his work is his own — it is a reflection of his beliefs and he is ready to stand up for it.

In the course of the conversation, Srijato shared anecdotes from his growing up years in a musical family. "Listening to music is an honour, which I realise now, but as a child, it was an adventure for me." He remembered his boyish enthusiasm while carrying instruments for famous musicians like Pandit Rajan Misra, guarding it

with his life. The sheer joy of being a small part of a much bigger scheme of things still excites the child in him. It is this active involvement in musical soirees, recitals and cultural events that led him to choose this profession and enriched him as a poet, he feels.

Srijato said he misses the times when he got to read in front of a live audience. "There is no feeling quite like it, seeing all those faces in front of you and feeling what they are feeling," the poet lamented. Being a wanderer at heart who lives in the moment, he loves to explore not just India but also Europe, which has been a recent source of inspiration for him, thanks to its rich culture.

No adda on Bengali poetry is complete without mentioning Rabindranath Tagore. Srijato believes that as long as he lives, his love for Robi Thakur will continue. He said he basks in the warmth of the ever-shining presence of the bard. "As a child, Rabindra Jayanti [the birth anniversary of Tagore] held a different meaning. It gave us a chance to perform. Now as an adult I feel Rabindranath is eternal," he smiled.

The session ended with Biswas and Mitra thanking Srijato for spending time with them and sharing such lovely memories. As Mitra rightly signed off, "this evening was a breath of fresh air. It has given us all renewed energy".

The Challenges of Womanhood

Mohini Kent

Alka Bagri

Bina Rani

How does motherhood shape womanhood? How can women help uplift each other? What is the best way to pay tribute to a woman and honour her legacy?

These were some of the key questions at the heart of an engaging and fulfilling discussion that took place during a virtual session of **Tête-à-tea**, organised by **Prabha Khaitan Foundation**. The session celebrated the book *Dear Mama*, a collection of intimate letters penned by famous personalities to their mothers, compiled by Mohini Kent Noon.

Among the letters in the book are notes written by the likes of Narendra Modi, the Dalai Lama, Cherie Blair, Sharmila Tagore, and Arshad Warsi, to name a few. The proceeds of the book have been directed towards Lily, a charity working against human trafficking and slavery.

> "Girls and women have tough lives and we want to help them to the best of our abilities. When I look around, I see women with experiences of trauma and pain and I would feel ashamed if I cannot help them in any way
>
> — Mohini Kent Noon"

Kent Noon, who was born in India and now lives in London, was joined in conversation by Alka Bagri, a trustee of the Bagri Foundation, and Bina Rani, the founder and partner of iPartner India, which strives to support the most neglected Indians.

Bagri began the discussion by reminiscing about her mother, who was raised in Kolkata in a conservative Marwari household. She spoke about how her mother "has lived her life with tremendous integrity, dealing with whatever life has thrown at her with grace and courage." Bagri added that her mother loves adventure and is always curious to explore new things, but never at the expense of her

principles or the conviction of her most cherished beliefs.

Rani spoke about how her mother and her relentless efforts to promote basic human rights and ensure people lived with dignity motivated Rani to take up social justice and become who she is today. "I was orphaned at the age of 11, but was adopted by a woman who already had seven kids. My mother was an extraordinary woman and I have never met anyone quite like her," said Rani.

Swati Agarwal

Kent Noon reflected on how her mother was responsible for giving her a "golden childhood", something she is grateful for, as she is well aware of the consequences and the lasting impact of a traumatic upbringing. "My mother came from a royal family and had a sense of ease about her," noted Kent Noon. She went on to list her mother's versatile talents, from being fluent in three languages to composing poetry on the spot to her skills as a classical singer. But, more importantly, Kent Noon felt her mother was remarkable because she always upheld the values of generosity, simplicity and honesty in whatever she did. Even if people had cheated or deceived her, she would never bad-mouth them or hold on to grudges.

> "[My mother] has lived her life with tremendous integrity, dealing with whatever life has thrown at her with grace and courage
>
> — Alka Bagri

Kent Noon then introduced a new dimension to the discussion by arguing how women, and not just those who are mothers, are often "unsure of themselves, unloved, and unaware of their needs." According to her, women have the tenacity to endure a great deal of pain silently and stoically, pain which eventually lies trapped inside them. She explained how women often compromise with money and self-care because they are inherently selfless and try to put everyone else's needs over and above their own. For these reasons, Kent Noon emphasised the need for women to have a platform of their own so that they can become more powerful, both in the local as well as the global arenas.

> "I have always been motivated by women who have worked towards a cause, who have battled it out in the heat and the dust, simply to help other women. These are the women who give me the courage to do what I am doing
>
> — Bina Rani

Rani resonated with many of Kent Noon's observations and proceeded to supplement them. She said that, apart from helping women find their voice in general, it was incumbent on women to seek out and help other women who cannot stand up for themselves.

Rani felt that it is only when women uplift and inspire each other that they can truly realise the strength and impact of female solidarity. "I have always been motivated by women who have worked towards a cause, who have battled it out in the heat and the dust, simply to help other women. These are the women who give me the courage to do what I am doing," said Rani.

The discussion then took on a more poignant and personal tone with Bagri talking about how her experience of being diagnosed with cancer made her a "stronger and more motivated woman." She took recourse to yoga following her diagnosis and instead of feeling sorry for herself or allowing her will to capitulate, she accepted her situation and utilised it to grow and develop as a human being.

In the final part of the conversation, Kent Noon revealed how she had started Lily after hearing about a five-year-old girl being sold to a brothel. "Girls and women have tough lives and we want to help them to the best of our abilities. When I look around, I see women with experiences of trauma and pain and I would feel ashamed if I cannot help them in any way," said Kent Noon.

The COVID-19 pandemic has had a devastating impact on lives and livelihoods across India, and women have been among the worst hit. Those women who are domestic workers and daily wage earners or work in precarious jobs with no insurance or job security, have, in particular, endured a torrid time over the past year or so. For all three panelists, this stark reality exposes how women are victims of structural prejudice that exacerbates their financial woes.

The only way such a reality can change, argued the panelists, is when women decide to come together and help each other as part of a collective sisterhood that challenges oppression and redefines the position of women in society.

This session of Tete-a-Tea was presented by Shree Cement Ltd

Indian Arts and Culture in the Age of the Pandemic

Nirmala Sitharaman

The COVID-19 pandemic has dealt a hammer blow to several sectors in India, not least the arts and cultural space, which is heavily reliant on the presence of outdoor venues and live audiences. While numerous artists have shifted to digital means to sustain their art, many have been unable to make the transition. In either case, financial viability has been a major concern for artists across the country as the second wave of the pandemic has gathered momentum.

To address these issues and cast an expert eye on India's artistic and cultural milieu in light of the pandemic, **Prabha Khaitan Foundation** organised a virtual **Tête-à-tea** session with Union minister Nirmala Sitharaman. The discussion also saw the participation of Vinay Prabhakar Sahasrabuddhe and Sanjeev Sanyal.

Sitharaman, who is currently serving as the Minister of Finance and Corporate Affairs in the Government of India, has been featured in *Forbes* 2020 list of 100 most powerful women and has previously served in the Union Cabinet as Minister of Defence as well as Minister of Commerce and Industry. In 2019, Jawaharlal Nehru University (JNU) conferred upon her the Distinguished Alumni Award.

Sahasrabuddhe is a Member of Parliament from the Rajya Sabha who has served as the national vice-president of the Bharatiya Janata Party (BJP). He is the current president of the Indian Council for Cultural Relations (ICCR) and also vice-chairman of the Rambhau Mhalgi Prabodhini, a research and training academy for elected representatives and social activists.

Sanyal is an economist and author who is currently functioning as the Principal Economic Adviser to the Ministry of Finance, Government of India. A Rhodes Scholar and an Eisenhower Fellow, Sanyal was Deutsche Bank's global strategist and a managing director till 2015. A co-chair of the Framework Working Group of the G20, Sanyal has written a number of bestsellers.

The panellists were welcomed to the conversation by Esha Dutta, **Ehsaas** Woman of Kolkata, who contextualised the discussion by explaining how the pandemic has impacted the lives and livelihoods of artists across India.

Sanjeev Sanyal

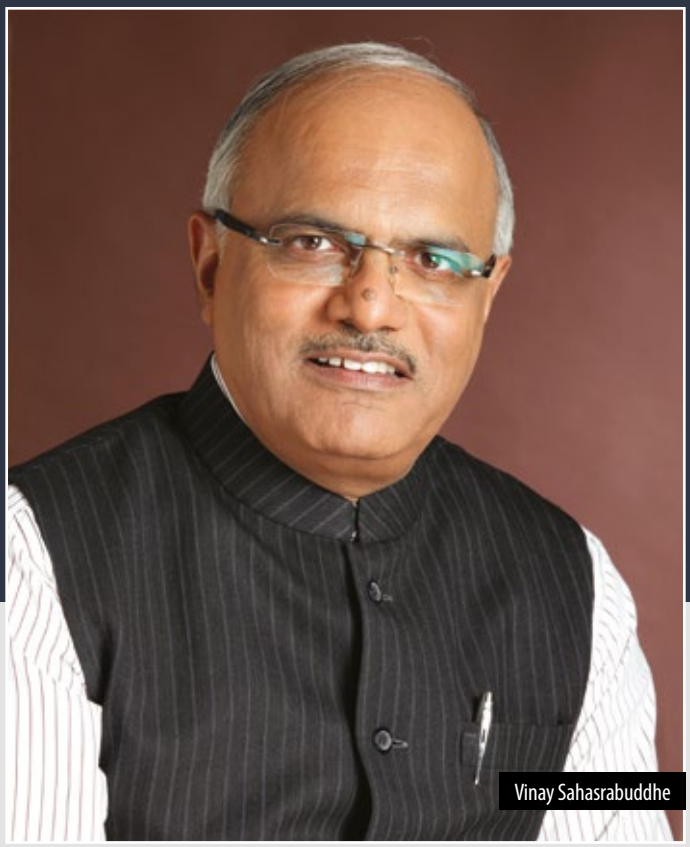
Vinay Sahasrabuddhe

Sanyal started the conversation by posing a series of questions to Sitharaman. The first few questions pertained to how much of the arts sector has been shut down due to the pandemic and what suggestions Sitharaman had for the artists to bounce back.

"The last year has been a non-performing year due to the coronavirus…. Serious questions have been raised regarding livelihoods and performance itself. It is not possible for me to come up with immediate solutions on the spot, but I definitely invite suggestions and recommendations from the artist community. We look forward to working closely with them to come up with solutions," said Sitharaman.

Sanyal then turned the conversation to the temple culture in Bengal and how it is slowly dying. "When we think of culture in Bengal, we are often dazzled by what happened in the 19th and 20th centuries. But ever since the middle of the 20th century, the temple culture has begun to erode, people have forgotten about it… and it lies completely disintegrated now," observed Sanyal.

> "The last year has been a non-performing year due to the coronavirus.... Serious questions have been raised regarding livelihoods and performance itself. It is not possible for me to come up with immediate solutions on the spot, but I definitely invite suggestions and recommendations from the artist community. We look forward to working closely with them to come up with solutions"
>
> — Nirmala Sitharaman

Sitharaman responded to this by talking about the importance of each region striving to maintain their cultural autonomy, be it through temples or through other forms of architecture. On Sanyal's specific point about the degradation of terracotta temples in Bengal, Sitharaman mentioned how forgotten art requires government funding to revive itself, which is why "the BJP's manifesto has allocated Rs 100 crore for the restoration of these temples." She added how the rich cultural heritage of Bengal has become a victim of institutional neglect and needs the right personnel to refashion its cultural institutions without robbing Bengal of its originality, flavour and the "fragrance of its culture."

Sitharaman also accepted Sanyal's suggestion that the Central Vista project in Delhi could be used to

Aniruddha Roy Chowdhury

Bickram Ghosh

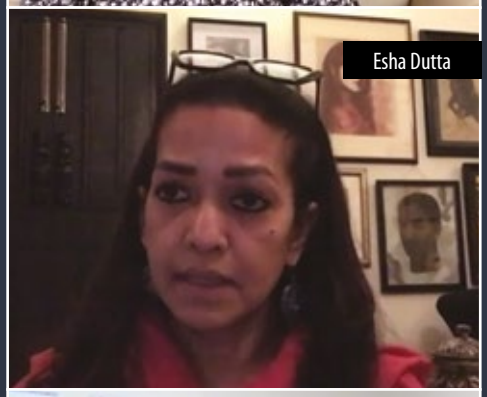
Esha Dutta

Pranab Dasgupta

Malika Varma

showcase the indigenous architectural legacies of India and urged Sanyal to come up with a proposal regarding the same.

"Art has immense soft power, but we have been really soft in using our soft power," noted Sanyal, which prompted a response from Sahasrabuddhe: "India is a unique country, which has goodwill across the globe. This goodwill and love has to be translated into a better understanding of India. Spreading soft power cannot be left to the government alone, the people of India and the Indian diaspora abroad have to contribute a lot as well."

Sanyal wrapped up his questions to Sitharaman by soliciting her views on the decline of literature in Indian languages. He said that "unlike Indian writing in English, a lot of Indian literature has become activist literature. The range we used to see earlier, from science fiction writing to detective novels, is no longer present."

Sitharaman agreed with Sanyal and proceeded to speak about the importance of translation in sustaining regional literature, remembering how "my mother used to read to me so many Bengali books that were translated into Tamil. Like literature in other languages, Bengali literature also needs support from publishers. The audio and Kindle versions we see nowadays also have a vital role to play in the revival of regional literature. However, at the end of the day, quality translation from one language to another is a must if regional literature is to survive."

The floor was then opened to the many distinguished guests to express their concerns before the minister.

Bickram Ghosh, a musician and classical tabla player, requested Sitharaman to look into how artists can be assisted with greater financial security, whether through provident funds or certain tax reliefs. Sitharaman took Ghosh's points on board and asked him to engage with the Ministry of Culture with a formal proposal.

The next comment came from iconic singer Usha Uthup. Uthup spoke passionately about the unsung members of the art industry — from the technicians to the make-up artists to the numerous other individuals who make a stage performance a success — and how they have been completely neglected during the pandemic. "I have been performing from my room and have not earned anything for months. But this also means that those who work with artists like us have not earned anything either." Sitharaman took cognisance of Uthup's sentiments and resolved to look into addressing the financial burdens faced by the most vulnerable in the arts sector.

Uthup's question was followed by a query from East Bengal club president Pranab Dasgupta, who asked Sitharaman how the government can support and encourage sports during the pandemic. Sitharaman replied by citing the proactive work carried out by the Ministry of Youth Affairs and Sports under the guidance of minister Kiren Rijiju and assured Dasgupta that Rijiju and his department would be looking into the matter.

Art curator Nandita Palchoudhuri's question probed whether the government's economic design is directed by existing cultural design or vice versa. Sitharaman said that it was the former, athough she

Usha Uthup

John Bagul

Soumitra Mitra

Sudip Chatterjee

Tridip Chatterjee

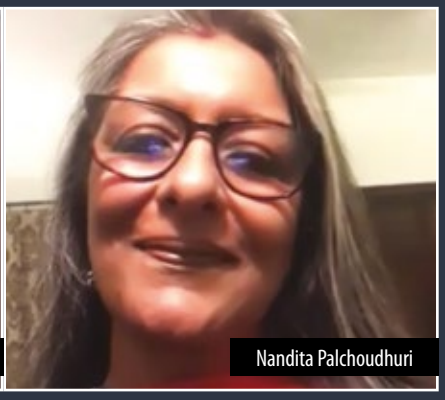
Nandita Palchoudhuri

highlighted how a country must be careful not to embrace homogenous standards when it came to infrastructure. "Centres of culture are shifting palpably in their geographical and physical presence. Take our airports, for instance, most of them look the same. They don't tell you anything unique about the city in which they are located. This is not how infrastructure should dilute culture," explained Sitharaman.

Educationist and principal of South City International school, John Bagul, raised a question regarding whether the government is planning to subsidise learning devices and internet facilities to help students adjust to online education. Sitharaman replied in the affirmative by saying that the government understands the importance of online education and is trying its best to make teaching aids affordable to students.

The penultimate question of the evening came from eminent theatre personality Soumitra Mitra, who implored the government to enhance the current grant issued to support different cultural organisations. Filmmaker Aniruddha Roy Chowdhury followed up with a similar question, though his focus was on the virtual non-existence of the government-funded National Film Development Corporation of India. On both questions, Sitharaman said that while technology and the rise of DTH and OTT platforms have revolutionised entertainment, they have not always proven beneficial to those producing the content. She called for greater scrutiny on these topics and for active collaboration between government departments and artists.

Following the Q&A session with Sitharaman, Sahasrabuddhe addressed the gathering with his thoughts on the occasion. He spoke about the need to popularise Indian culture and highlighted the role ICCR has been playing in order to do so at a global level. Sahasrabuddhe spoke about ICCR's efforts to promote Indian regional languages (in addition to Hindi and Sanskrit) internationally as well as about plans to create a new OTT platform that will serve as an exhibition of Indian arts and culture. "We have to work towards breaking silos, bringing people together, and understanding Indian culture. This can only be done when organisations and individuals are prepared to work alongside the government at the Centre as well as with the state governments," concluded Sahasrabuddhe.

A riveting evening of discussion and dialogue drew to a close with Malika Verma, **Ehsaas** Woman of Kolkata, thanking the panelists for their excellent insights.

This session of Tête-à-tea is presented by Shree Cement Ltd, in association with Anandabazar Patrika *and ITC Sonar*

सांस्कृतिक बोध पर बने भोजपुरी सिनेमा: कमलेश कुमार मिश्रा

Kamlesh K Mishra

Dr Munna K Pandey

Aradhana Pradhan

प्रभा खेतान फाउंडेशन और मसि इंक की ओर से होने आयोजित मासिक कार्यक्रम **आखर** में अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित हुए फिल्मकार कमलेश कुमार मिश्रा। आराधना प्रधान ने मिश्रा और संवादकर्ता डॉ मुन्ना कुमार पांडेय का परिचय दिया। मिश्रा ने रुपहले परदे पर *आजमगढ़*, *रहिमन पानी* और *किताब* जैसी अलग-अलग श्रेणियों की फिल्मों से जुड़कर न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई है। वह फिल्म *मधुबनी: द स्टेशन ऑफ कलर्स* के लेखक-निर्देशक हैं, जिसे वर्ष 2018 में 66वें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में गैर-फीचर श्रेणी में सर्वश्रेष्ठ कथन का पुरस्कार मिला। वह लघु फिल्म *किताब* के लिए भी जाने जाते हैं, जो चर्चित अभिनेता टॉम ऑल्टर की आखिरी फिल्म रही, और अब तक 40 से अधिक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में प्रदर्शित की जा चुकी है। यह फिल्म पुस्तक पढ़ने की हमारी आदतों पर इलेक्ट्रॉनिक गैजेट के बढ़ते प्रभाव जैसे विषय पर केंद्रित है। संवादकर्ता पांडेय दिल्ली के सत्यवती कॉलेज में प्रवक्ता और अच्छे अनुवादक हैं।

पांडेय ने मिश्रा से भोजपुरी सिनेमा की स्थिति-परिस्थिति पर बातचीत के केंद्रित रहने के संकेत के साथ पहला सवाल पूछा कि भोजपुरी सिनेमा की शुरुआत *गंगा मैय्या तोहे पियरी चढ़इबो* और *दंगल* जैसी समृद्ध फिल्मों से हुई, जिसमें विषय इतना समृद्ध था कि तत्कालीन राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने तो तारीफ की ही विमल रॉय जैसे दिग्गज ने फिल्म बनाने की बात कही. उस समय भोजपुरी सिनेमा का वितान एक राजनीतिक सांस्कृतिक जिद का परिणाम था, पर बाद के दशकों में ऐसा क्या हुआ कि धीरे-धीरे यह अवसान आ गया? मिश्रा ने कहा, "सिनेमा में यह बदलाव सामाजिक परिवर्तन और देखा देखी के प्रभाव का नतीजा था। क्षेत्रीय फिल्मों का प्रभाव जैसा कि बंगाली सिनेमा का ओड़िआ सिनेमा पर आया वैसा हम पर नहीं आया। बल्कि हिंदी फिल्म में जो छिछली चीजें थी, आइटम नंबर आदि का प्रभाव आया। इस देखादेखी में हम सांस्कृतिक समन्वय की जगह, लोकप्रिय सिनेमा पर बल देने लगे। ताली, सीटी और ठहाका मारने पर भोजपुरी फिल्मों ने जोर दिया। इन सबके बीच स्त्री अस्मिता पर असर पड़ा। इससे स्त्री देह की नुमाइश हुई। भोजपुरी सिनेमा में सामाजिक समरसता और सामाजिक समन्वय का एक समय था। भोजपुरी फिल्में हमारे पहरावा का प्रतिनिधित्व नहीं करतीं। लोग भूल गए कि हमारे गांव का पहरावा लहंगा, चोली नहीं है। जिन्हें भोजपुरी नहीं आती वे 'वा' जोड़ कर फिल्म बनाते हैं। वे मानकर चलते हैं कि भोजपुरी सिनेमा देखने वाला परिवार लेकर नहीं जाता, इसलिए ऐसी फिल्म बनाइए।"

पांडेय के अच्छी फिल्म और दर्शकों की मांग से जुड़े सवाल पर मिश्रा ने उत्तर दिया, "जो दर्शक आज सिनेमा देखने आता है उसकी कई वजहें हैं. सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक कारक भी हैं। बिहार में पिछले तीस सालों में औद्योगिक विकास नहीं हुआ। इससे शहर का विकास नहीं हुआ। फिर सिनेमा हॉल कैसे बनता? पटना, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, गया का जिक्र करने के बाद आपको शहर ढूंढना पड़ेगा। सरकारी तौर पर सांस्कृतिक प्रकोष्ठ खानापूर्ति के तौर पर हैं। हमने सिनेमाई विकास के बारे में नहीं सोचा। बंगाल, ओड़िशा, तमिलनाडु, केरल में राजकीय समर्थन से कई फेस्टिवल आयोजित होते हैं। हरियाणा, उत्तर प्रदेश, यहां तक कि झारखंड तक में फिल्म विकास निगम हैं। दर्शक की जहां तक बात है, ऐसा कोई सर्वे नहीं होता दुनियाभर में कि कैसा सिनेमा बनाया जाये। भोजपुरी फिल्मों में दरोगा हिंदी बोलता है, रिक्शा वाला भोजपुरी बोलता है। जबकि तमिल फिल्मों में ऐसा नहीं होता।" मिश्रा ने कहा कि सिनेमा सांस्कृतिक बोध पर बनना चाहिए।

पांडेय ने पूछा कि भोजपुरी में मांसल सिनेमा पर जोर क्यों है? क्या सार्थकता दिखाने की गुंजाइश नहीं है या हममें रचनात्मकता नहीं है? *लागी नाहीं छूटे राम* फिल्म के जिक्र के साथ उन्होंने पूछा कि कहीं यह रचनात्मकता की सीमा के उजागर होने के डर से तो नहीं है? मिश्रा ने कहा कि इसके लिए भोजपुरी क्षेत्र के स्थापित लोगों द्वारा समन्वित प्रयास होना चाहिए। अनुभव सिन्हा, मनोज वाजपेयी जैसे लोग मिलकर सामने आएं। अच्छे लोगों के साथ आने से सकारात्मक असर होगा। इस चर्चा के दौरान यह बात भी सामने आई कि यह सच है कि अच्छी फिल्में आती हैं तो उन्हें मार्केट भी नहीं मिलता है जैसे *देसवा* और *भेंट* जैसी फिल्मों को मंच नहीं मिल पाया। मिश्रा ने फ़िल्म *किताब*, *मधुबनी: दी स्टेशन ऑफ कलर* और पंकज त्रिपाठी के साथ बन रही आगामी *आजमगढ़* की चर्चा भी की और वादा किया कि जब कोई अच्छी कहानी मिलेगी तब भोजपुरी फ़िल्म जरूर बनाएंगे। अंत में प्रधान ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में उषाकिरण खान, पृथ्वी राज सिंह, ब्रज भूषण मिश्रा, डॉ सुनीता, इंदु उपाध्याय आदि उपस्थित थे।

प्रभा खेतान फाउंडेशन और मसि इंक की ओर से आयोजित आखर पटना के प्रस्तुतकर्ता हैं श्री सीमेंट।

Our Earth, Our Responsibility

Bijal Vachharajani

On the occasion of Earth Day, Muskaan, **Prabha Khaitan Foundation** and Oxford Bookstore hosted children's author and "climate worrier" Bijal Vachharajani. A former editor for *Time Out*, Bengaluru, she now works as a consultant with Fairtrade Asia Pacific and writes about children's literature and sustainable development as a freelance journalist. She also worked as a journalist at *Time Out* Mumbai, where she used to edit the *Around Town* city section and Kid's section. Simultaneously she worked as the South Asia coordinator for *350.org* — an international movement for climate crisis. For them she led events like 10/10/10, a global day of climate action and 350 Earth and was also their social media handler.

Vachharajani was a perfect fit for Earth Day, which is celebrated around the globe in an effort to raise awareness about the Earth's environment. The book she chose for the session was not just thought-provoking and humorous but also a lesson on climate change, friendship and trust.

The session started with the author reading a few passages from her book, *A Cloud called Bhura* — "a story about four friends, a city in need of help, a bunch of clueless groan-ups and a very angry, very brown and very dangerous cloud". This book gives a lesson on the power of friendship, trust and community building that can help counter any problem. *A Cloud called Bhura* isn't just a picture book for kids, it is one that manages to teach children about the very serious issue of climate change in a language they will understand. Instead of being serious and preachy, the story encourages children to think and also provides them with newspaper cuttings for a more real experience.

The book reading session was attended by over 30 enthusiastic children from all over India between the ages of 9 and 16 years. The children interacted with the author, who took the opportunity to plant the thought about how each one could become an Earth Champion through their individual actions. The author spoke about the issues of climate change and effects of global warming that was followed by an interaction with the children where they discussed ways to mitigate climate impacts and about climate solutions.

"A healthy planet is not an option — it is a necessity", and a nation-wide event that educates young minds about the state of the Earth and how to protect it was very timely.

The Stories He Tells

Kabir Bedi

Preeti Gill

He is a recognizable name in India, Europe and Hollywood. He has worked in radio, theatre and films. And now he's written a book. Kabir Bedi was the star at a special virtual session of **The Write Circle**, organised by **Prabha Khaitan Foundation**. After introductions were made by **Ehsaas** Woman of Chennai, Deepika Goyal, Bedi's memoir, *Stories I Must Tell: The Emotional Life of an Actor*, was presented by **Ehsaas** Woman of Amritsar, Preeti Gill, who subsequently steered the conversation with Bedi.

Almost a decade ago, Kabir Bedi decided that the extraordinary highs and lows, triumphs and tragedies, milestones and mistakes that encompassed his life would make for a story worth sharing. However, it was only in 2020, two months before the pandemic struck, that he was able to envision just how he was going to tell this story. *Stories I Must Tell: The Emotional Life of an Actor* is not your average autobiography with a linear narrative.

> "Seeing the fact that my parents chose to live such unusual lives gave me the courage to be different"

It is a series of shorts which tells Bedi's story through the prism of people and places that he's loved. Although each chapter is structured as an independent story, the sum total gives one a glimpse into the many facets of his life.

"Rumour and gossip have followed me for most of my life across three continents, and I thought let's set the record straight as well," said the actor, with a wry smile.

Bedi also discussed the pitfalls of writing non-fiction. "The difference between fiction and factual writing is that, in fiction you know too little and in fact you know too much," he explained, going on to admit that though some autobiographies have been inspiring, they have also been rife with unnecessary

Deepika Goyal

detail. "I did lose some stories I wanted to tell, which would have been a distraction to the main story, and that is a sacrifice I willingly made."

Bedi's memoir explores the emotional territory he had to traverse during his journey as a famous actor. He admitted that he uses the show-don't-tell literary narrative to expose the emotional pulse of his narrative. "My audacious ambition was to write a book people couldn't put down when they started reading," he said, pointing out that the way to perhaps achieve this was to take the reader through the conflicts and trauma one has experienced. The actor laughed as he recalled how he had jumped at the Italian offer to try his luck outside the country, if only to escape the singing and dancing that was expected of Bollywood heroes. And luck indeed is what he found, as he shot to fame in Europe in the avatar of the pirate Sandokan, in the eponymous Italian six-part television series. In fact, he seemed to land exotic role after exotic role, whether as the Moroccan prince in *The Bold and the Beautiful* or as villain in the James Bond film *Octopussy*. But Bedi admitted that behind the glamour, he faced grave uncertainties in Hollywood. "The problem was they weren't writing roles for Indians. So, if roles aren't written, how do you get roles? When they do write, they have no hesitancy in painting a white actor brown."

> "My audacious ambition was to write a book people couldn't put down when they started reading"

His experience in Europe, on the other hand, was heady. He recounted the moment he and Parveen Babi looked down at a magazine rack in Rome to find themselves on every glossy cover. The crowds thronged and the police struggled to hold fans back. He had wanted to test how far an Indian actor could go, and had met with resounding success. And yet, in the backdrop of his life was a sadness no one else was witness to. Having struggled with Parveen Babi's mental health issues and the demise of his son after the boy was diagnosed with schizophrenia, Bedi's personal life has been far from smooth sailing. He acknowledged that the chapters on Protima (his ex-wife) and Parveen are "highly emotional… I wanted to share the experience because I went through a lot."

Bedi made it evident that he is no stranger to the scars of mental health, what with Parveen Babi's devil-may-care attitude serving as an effective mask for the schizophrenia she was later diagnosed with. "I also want to show what happens to people in these conditions, and want people to feel for those who care for the afflicted, because the families suffer as much as the victim," he explained.

One of the things Bedi found interesting about writing a memoir was the retrospective insight he was able to have about his past and his circumstances. Born to a British mother and Sikh father who came to India from Oxford to join the freedom struggle, Bedi realised the importance of idealism and sacrificing for causes one believed in. After all, his mother was a *satyagrahi* handpicked by Gandhi who went on to be the first Western woman to advocate the doctrines of Tibetan Buddhism. He witnessed his father going from being a communist in India to a philosopher in Italy, and his mother rising in fame as a Buddhist nun. "Seeing the fact that my parents chose to live such unusual lives gave me the courage to be different."

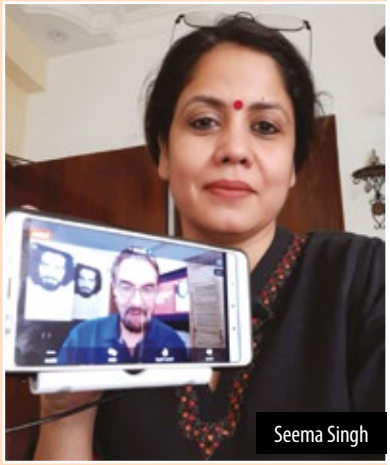
Seema Singh

Bedi's book promises a trip down memory lane for those of us who have followed his career closely. It is searingly honest, for it exposes his flaws as much as it dwells on his successes. Most importantly, it is a story of hope for, as he puts it in his chapter on The Beatles, "When you shut a door behind you, other doors appear, each with a different destiny."

The Write Circle Special is presented by Shree Cement Ltd

संगीत के पहले दस मिनट

Praveen Kumar Jha

हिंदुस्तानी संगीत का पहला दस मिनट शुरुआत में झेलना कठिन है। मैं तो नहीं टिक पाया था। मैं सोचता रहा कि आखिर गीत कब आएगा? एक ही स्वर पर क्यों अटके पड़े हैं? कोई शब्द क्यों नहीं कह रहे? एक विश्वविद्यालय का आयोजन याद आता है। दर्शकों में कॉलेज़ के लड़के बैठे थे। बमुश्किल पांच मिनट में पीछे से खिसक कर भागने लगे, तो दरवाजे पूरी तरह खुलवा ही दिए गए। जब गायक बंदिश पर आए, कई उसी दरवाजे से आकर बैठने भी लगे, और आखिर अच्छी-खासी युवाओं की भीड़ आ ही गयी। लेकिन असल तो उसने सुना, जो आलाप से बैठा रहा। वही संगीत का हृदय है। जो बाद में आए, उनको तो बस 'टिप ऑफ़ आईसबर्ग' नसीब हुआ।

पहले दस मिनट के नियम भी बदल रहे हैं कि आपके हाथ क्या आ रहा है। 'आलाप' एक 'बिल्ड-अप' है। वह अगर छोटा हो, तो हम उस ऊँचाई तक नहीं पहुँच पाते। आनंद खालिस बंदिश या तराने हो, तो भी जरूर आता है, लेकिन यह संगीत का चरम नहीं। आलाप सुनने के लिए किशोरी अमोनकर या उल्हास कशालकर की किसी लंबी रिकॉर्डिंग को उठा लें। वक्त हो तो उस्ताद अमीर ख़ान को सुनें। उनके बारे में तो लोग मजाक करते कि वह इतना धीमा आलाप गाते हैं कि लोग दो मात्रा के बीच में एक कप चाय खत्म कर लें। उनके गुरु अब्दुल वाहिद ख़ान (किराना) इंदौर दरबार में साढ़े तीन घंटे तक मुल्तानी गाते रहे। महाराज ने अपने एक दरबारी को कहा कि उस्ताद को अब शांत कराओ, मैं भी आराम करूँ। उस्ताद ऊँचा सुनते थे। उन्हें लोग कहते रहे। पर उन्होंने गाना बंद नहीं किया और घंटे भर गाते ही रहे!

हमारे समय में इतना लंबा गायन नहीं होता। आलाप छोटा होता है और अक्सर बोल-आलाप मिल सकता है, यानी बोल के साथ आलाप। उसके बाद बंदिश की स्थायी गायी और प्रस्तुति खत्म। इसकी वजह है कि अब पूरी रात होने वाले आयोजन कम होते हैं। अहमदाबाद के सप्तक सम्मेलन, कलकत्ता के डोवर लेन सम्मेलन या 'स्पिक-मकै' के 'ऑल नाइट कन्सर्ट' जब होते हैं, तो संपूर्णता लिए लंबी प्रस्तुतियाँ सुनने को मिलती हैं। यह 'टी-ट्वेंटी' और 'टेस्ट मैच' का अंतर है। नमिता देवीदयाल एक धारवाड़ के स्कूल में हुए आयोजन का जिक्र करती हैं, जब ग्यारह घंटे तक विलायत ख़ान सितार बजाते रहे। उँगलियों से खून बहने लगा तो पट्टी बाँध ली, लेकिन बजाते रहे। उस वक्त अगली पंक्ति में एक नवयुवक भीमसेन जोशी 'वाह-वाह' करते रात भर बैठे रह गए।

पूरी प्रस्तुति सुनना क्यों बेहतर है?

सोचिए आप किसी फ़ाइव-स्टार में होटल में खाने गए हों, पहले आप सूप-वूप मँगा कर स्वाद बढ़ा रहे हों। ऐसे ही संगीत की शुरुआत 'आलाप' से होती है। धीरे-धीरे एक-एक स्वर से परिचय। सा..धप..। जो भी उस राग के मुख्य स्वर हैं। सितार में खास कर उस स्वर की गूँज, उसका विस्तार दिखाया जाएगा, उसकी शक्ति। ध्रुपद के आलाप (या खयाल में भी) अकसर स्वर का उच्चारण नहीं करते। मतलब यूँ 'सा रे' कह कर नहीं गाते, उसकी जगह 'री रे ना ना ओम्' (ध्रुपद) या 'आऽऽ' या कुछ अधूरे से स्वर ही बोलते हैं। ध्रुपदिए कहते हैं कि स्वर बोलने से गायक और श्रोता दोनों की तंद्रा भंग होती है। आलाप में आपको पुष्प की मात्र सुगंध मिलती है, फूल उठाकर सामने नहीं रख देते। तभी रहस्य बना रहता है। जिसके पास इंद्रिय है, वह पकड़ लेगा कि मोगरे की सुगंध है। मोगरा लाकर रखने की जरूरत नहीं।

आलाप में ही आगे आएगा - 'जोर'। यानी उस राग की मुख्य स्वर-संरचना। घुमा-फिराकर बार-बार आगे-पीछे ले जाकर आपको राग से परिचय कराया जाएगा। अब आप झूमना शुरू करेंगे। एक सम्मोहन होगा। जैसे 'सिज़्लर' सामने रख दिया हो, और उसकी सुगंध फैल गई हो। अब तक तबला का एक थाप भी नहीं होगा। बस स्वर।

आलाप का क्लाईमैक्स 'झाला' है, लेकिन यह वादन (और ध्रुपद गायन) में होता है। यह गज़ब का अंश है। इस समय संगीतकार चरम पर होता है। यहाँ से रुकना असंभव लगता है। खयाल गायन में अगर झाला नहीं होता, तो गायक 'तराना' पकड़ लेते हैं - तानादेरेना। तराना के शब्दों का कोई अर्थ नहीं है।

फिर आएगा 'गत' या 'बंदिश' यानी असल भोजन। पहले स्थाई और फिर अंतरा, अकसर तीन लय में गाए-बजाए जाएँगे। विलंबित (धीमी) से मध्यम से द्रुत (तेज) लय तक। इसी दौरान तबला बजना शुरु होगा, और वही बंदिश की लय तय करेगा। अब तो खेल में रोमांच होगा। इसके बाद अब उनकी मर्जी। वह अब आजाद हैं, उन्होंने राग पर फ़तह पा ली है।

गायक-वादक के पास समय रहा तो एक लंबी प्रस्तुति होती है जो धीरे-धीरे विलंबित (धीमी गति) से द्रुत (तेज) लय तक जाती है, जिसे 'बड़ा खयाल' कहते हैं। समय कम हो तो यही सीधे द्रुत लय से बंदिश पर आकर गायी जाती है, और 'छोटा खयाल' कहलाती है। आजकल जब हर संगीतकार को कम ही समय मिलता है तो वे अकसर छोटा खयाल ही गाते हैं। इसलिए यूँ भी प्रस्तुति छोटी होगी। इसे सम्पूर्णता में धैर्य से सुना जाए तो रस मिलेगा।

प्रवीण कुमार झा

(झा संगीत प्रेमी और *वाह उस्ताद* नामक पुस्तक के लेखक हैं। वह सम्प्रति नॉर्वे में चिकित्सक हैं)

The Ehsaas of Birmingham

Piali Ray

Piali Ray OBE is director of Sampad, a leading national agency for Indian arts and heritage based in Birmingham, UK. In 2002, she received an OBE and an honorary doctorate from Birmingham City University that put her on the same list as the likes of Keira Knightly and J.K. Rowling.

In 2009, Ray also received the Outstanding Business Person of the Year award from the Birmingham Chamber of Commerce and in 2015 the British Indian Award for raising interest in arts and culture. She was also featured among the 100 most influential people in UK-India relationship in 2019.

Ray is a lover of the arts at heart and thus wanted to establish a centre for Indian arts in the UK in order to bridge the gap between these diverse cultures and help them co-exist. In the three decades of its existence, beginning on the night Mark Fischer, the then Minister of Arts, lit a candle to mark the beginning of its journey, Sampad has committed to engage with artistes from all communities and backgrounds. They have managed to spread a love for the arts across country lines and want to go international soon.

Midlands Arts Centre, where Sampad is based, has hosted most of their extraordinary work, but Sampad has held some big events outside Midlands as well. One of the most memorable was in 2012, when Ray was commissioned by the Cultural Olympiad to produce two large-scale shows — Moving Earth and Mandala — which were part of the dazzling multimedia finale of the London 2012 Festival. 2017 was another big year for her as she led Utsav 2017 — Birmingham's Year of South Asian Culture — and was the artistic director for Birmingham Weekender in the same year. She also managed the Athletes' Homecoming and launch of the Commonwealth Games event in Birmingham in 2018.

Ray arranges International Writing competitions, in collaboration with British Council and other UK and Indian publishing houses, to provide a chance to aspiring writers to showcase their writing and intellectual prowess. The competitions — Inspired by Tagore and Inspired by Gandhi — attracts over 3,000 writers from over 40 countries. Another programme for the Indian diaspora that Ray spearheads is Dance Intense, a development programme for promising dancers who practise Indian dance forms.

Titikssha Shah

Titikssha Shah is the founder of the literature group Kriti UK, which started in 2002. She started Hindi language competitions for Hindi students in Midlands under the banner of Kriti UK, in association with the High Commission of India and UK Hindi Samiti.

A poet herself, her compositions have been published in many magazines and her recitals have been greatly appreciated by audiences in the UK and India. Shah has organised various international conferences in the field of language and literature in the UK and was a general secretary for the World Hindi Conference in 1999, an event organised under the auspices of the Government of India.

Shah is a well-established fashion designer, multilingual interpreter, businesswoman, motivational speaker, stage artist and compere along with being a poet. Her significant contribution in promoting Indian languages and literature in the Birmingham community was recognised by the Uttar Pradesh Hindi Sansthan, Government of Uttar Pradesh, in 2002.

Say NO To Tobacco

"The true face of smoking is disease, death, and horror — not the glamour and sophistication the pushers in the tobacco industry try to portray" — David Bryne

For thousands of years, tobacco has been one of humankind's greatest temptations as well as one of its greatest killers. Smoking or chewing tobacco has been responsible for causing or increasing the chances of diseases like cancer, heart ailments, stroke, lung problems, diabetes, and chronic obstructive pulmonary disease (COPD), besides aggravating the risk for tuberculosis, eye diseases and rheumatoid arthritis.

According to data released by the World Health Organization (WHO), tobacco kills up to half its users, which amounts to more than eight million people annually. More than seven million of these deaths are estimated to result from direct tobacco use, while the rest are brought about due to passive smoking, when non-smokers are repeatedly exposed to second-hand smoke.

Although tobacco consumption is practically universal, it is most concentrated in low-and-middle-income countries, where 80% of the world's 1.3 billion tobacco users live.

In order to raise awareness against the devastating impacts of tobacco and reduce its consumption worldwide, the World No-Tobacco Day is observed every year on May 31.

The member states of the WHO created World No-Tobacco Day in 1987 to draw global attention to the tobacco epidemic and to prevent the innumerable deaths caused by it. In 1987, the WHO passed Resolution WHA40.38, calling for April 7, 1988, to be a "world no-smoking day." In 1988, Resolution WHA42.19 was passed, calling for the observance of World No-Tobacco Day each year on May 31.

As a standard practice, May 31 is used to inform the public on the dangers of tobacco use, the ways in which tobacco companies can misguide and deceive customers for profits, the steps taken by the WHO to

fight against tobacco use, and the rights people have across the world to protect their health, environment as well as their future generations against the fatal effects of tobacco.

Each year the WHO picks a particular theme or message in order to attract more attention on World No-Tobacco Day. In 2015, World No-Tobacco Day advocated for policies to reduce tobacco usage, including putting an end to illicit trade of tobacco products. A year later, the WHO called on governments to prepare plain packaging for sale of tobacco products. In 2017, May 31 was used to illustrate how the tobacco industry threatens sustainable development, and in turn, the future of human beings as a whole. In 2018, the focus shifted to how tobacco damages the heart, while in 2019, the messaging was centred around "tobacco and lung health".

In 2020, the World No-Tobacco Day was used to create a campaign with the following objectives:

Decode the myths around tobacco consumption and expose the clever tactics utilised by tobacco industries and their marketing agencies to target the youth through the introduction of new products, flavours, and other attractive features.

Equip young people with knowledge about how tobacco can damage their bodies in the short and long run and how tobacco companies want to entice them into becoming lifelong consumers.

Engage and empower influencers (in pop culture, on social media, at home, or in the classroom) to protect and defend the youth and stand up to the menace posed by Big Tobacco.

For 2021, the WHO has decided to observe World No-Tobacco Day with the message of "Commit to Quit". This has been designed keeping in mind research that indicates that the pandemic of COVID-19 has led millions of tobacco users to reconsider smoking or give it up altogether. As part of World No-Tobacco Day 2021, the WHO wants to encourage as many tobacco users as possible to sign a pledge and promise to give up on using tobacco.

At **Prabha Khaitan Foundation**, we are strongly opposed to the use of tobacco and believe that society must come together to fight against the deleterious consequences of sustained tobacco consumption. It is no longer morally or biologically defensible to suggest that smoking tobacco is a personal choice. It is not. It is a choice that involves stakeholders apart from the smokers themselves, ranging from the smokers' family to those in the smokers' physical vicinity to the tobacco industry that has no compunctions to trade lives for profits.

It is time that all of us, collectively, do our bit to reduce tobacco consumption, whether it be curbing our own appetite for tobacco or encouraging friends or family to quit. Every cigarette that is smoked or every packet of tobacco that is chewed is like a bullet that enters the body with the aim of inviting death slowly and methodically. The faster we stop these bullets from entering the human system, the better are our prospects of entering a tobacco-free world where humankind can learn to breathe freely once more.

ARTWORK BY
SUDIPTA KUNDU

IN OUR NEXT ISSUE

Guests	Events
Diptakirti Chaudhuri	The Write Circle Jaipur
Amish Tripathi	The Write Circle Chennai, Birmingham & Oxford
Kabir Bedi	The Write Circle Bengaluru
Ravi Kishan	Ek Mulakat Vishesh
Himanshu Gulati	Ek Mulakat Vishesh
Geet Chaturvedi	Kalam Raipur & Bilaspur
Dave Goulson	The Universe Writes
Ruskin Bond	The Write Circle Special

Amish Tripathi

Dave Goulson

Diptakirti Chaudhuri

Geet Chaturvedi

Himanshu Gulati

Kabir Bedi

Ravi Kishan

Ruskin Bond

REACH US AT

Address: 1A Camac Court, 25B Camac Street, Kolkata - 700 016, West Bengal, India

The digital version of the newsletter is available at pkfoundation.org/newsletter

newsletter@pkfoundation.org *@FoundationPK* *@PrabhaKhaitanFoundation* *@prabhakhaitanfoundation*

For private circulation only